वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL PATH

सितंबर-अक्टूबर 2025

भगत सिंह पर पहला हक़ तो हरनाम कौर का है! (5)

- आओ भाजी, कुछ बातें करते हैं। (9)
- संघर्ष से सफलता तक -डॉ. कमला सोहनी (11)
- मीडिया और धर्म आधारित राजनीति द्वारा निर्मित वातावरण (22)
- रासूल हमजातोव (33)

30/-

हमारे पास लूट से मुक्ति के लिए संघर्ष करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है... निकोल कज़ान जाकिस

कौन जाति हो भाई ?

कौन जाति हो भाई ?
"साहब"
नहीं, मतलब किस में आते हो ?
आप की गाली में आतें हैं,
गंदी नाली में आतें हैं,
और अलग की हुई थाली में,
आतें हैं साहब
मुझे लगा हिंदू में आते हो।
आता हुँ न साहब,
लेकिन आप के चुनाव में।
क्या खाते हो भाई ?
जो एक दलित खाता है साहब।
नहीं, मेरा मतलब क्या -क्या खाते हो?
आप से मार खाता हुँ,
कर्ज का भार खाता हुँ,
और तंगी में लूण,
कभी अचार खाता हुँ साहब।
मुझे लगा तुम मुर्गा खाते हो।
खाता हुँ न साहब,
पर आप के चुनाव में।
क्या पीते हो भाई ?
"एक दलित क्या पीता है साहब"
नहीं, मतलब क्या-क्या पीते हो ?
छुआछूत का गम,
टूटे अरमानों का दम,
और नंगी आँखों से
देखा गया सारा भ्रम साहब।
मुझे लगा शराब पीते हो।
पीता हुँ न साहब,
लेकिन आप के चुनाव में।
क्या मिला है भाई ?
"जो दलित को मिलता है, साहब।"
नहीं, मेरा मतलब क्या- क्या मिला है ?
अपमान से भरा जीवन,
आफ की छोड़ी हुई गंदगी,
और तिस पर भी आप जैसे
परजीवीयों की बंदगी साहब।
मुझे लगा वायदे मिलें हैं।
मिलते हैं न साहब,
आप के चुनाव मे।
क्या-क्या है भाई ?
"जो दलित करता है, साहब।"
नहीं, मतलब क्या-क्या है?
सौ दिन तालाब में काम किया,
पसीने से तर सुबह को शाम किया।
और आते -जाते ठाकुरों को,
सलाम किया है, साहब।
मुझे लगा बहुत बड़ा काम किया है।
किया है न साहब
आप के चुनाव का प्रचार....।
बच्चा लाल उन्मेष

डॉ. रणजीत मानववादी कविता पुरस्कार - वर्ष 2025

बच्चा लाल 'उन्मेष' को उनके कविता संग्रह "कौन जात हो भाई" के लिए दिया गया है। यह पुरस्कार मानववादी कविता लेखन के प्रोत्साहन के उद्देश्य से युवा कवियों को दिया जाता है। 'उन्मेष' जी की कविताओं में दलित-शोषित वर्ग का दर्द और जातिवादी मानसिकता पर तीखा व्यंग्य देखने को मिलता है। पुरस्कार के तहत ₹30,000 की धनराशि, प्रशस्ति-पत्र और स्मृति-चिह्न शामिल है।

मुख्य संपादक
कुलजीत डँगर खेड़ा
kuljittarkshil@gmail.com
9781925566

संपादक
गुरमीत अम्बाला
tarksheeleditor@gmail.com
94160 36203

संपादकी मंडल
जसवंत मोहाली (98555-30721)
अजायब जलालाना (94167 24331)
कृष्ण कायत (98961 05643)

विदेशी प्रतिनिद्धि
अवतार बाई, वैनकुवर
+1 672 558-5757
बीरबल भदौड़, कैलगिरी
+ 1 204 894-4371
बलदेव रहिपा, टरांटो
+ 1 41 688 17202
अच्छर सिंह खरलवीर (U.K.)
+ 1 44 748 635 1185
अवतार गोंदारा (U.S.A.)
+ 1 (559) 375-2589

पत्रिका शुल्क :-
वार्षिक : 150/- रू.
विदेश : वार्षिक : 40 यू.एस.डॉलर
रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:
मुख्य कार्यालय
तर्कशील भवन, संघेडा बाईपास
तर्कशील चौंक, बरनाला-148101
01679-241466, 98769 53561
tarkshiloffice@gmail.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com

राजिन्दर भदौड़, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी की तरफ से तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.) द्वारा अप्पू आर्ट प्रैस, शाहकोट (जलन्धर) से मुद्रित करके मुख्य कार्यालय तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.), बरनाला, (पंजाब) से तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण के लिए जारी किया।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क
पंजाब नैशनल बैंक में
तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.) के नाम से
खाता सं. 0044000100282234
IFSC: PUNB0004400 में जमा करा सकते है।
एंव पत्रिका भेजने के लिए एड्रेस व शुल्क की स्क्रीन शॉट/रसीद मोबाइल नम्बर
+91 98156 70725 पर वट्सएप कर दें।

इस अंक में

- संपादकीय 1
1. जीव, आत्मा और मानव 2
2. भगत सिंह पर पहला हक़ तो हरनाम कौर का है! 5
3. केस रिर्पोट जीवन शैली 7
4. आओ भाजी, कुछ बातें करते हैं। 9
5. संघर्ष से सफलता तक - डॉ. कमला सोहनी 11
6. ए.आई. से डरने की नहीं, बल्कि इसको सीखने की जरूरत 13
7. रेबीज़ से कैसे बचें ? 16
8. भारत के अंतरिक्ष विज्ञान के शिल्पकार डॉ. विक्रम साराभाई 1
9. मानसिक तनाव - कारण 20
10. मीडिया और धर्म आधारित राजनीति द्वारा निर्मित ... 22
11. मजबूत कदम 24
12. बच्चों का कोना 26
13. बच्चों के लिए अर्थशास्त्र 27
14. बड़े अर्थ वाली, छोटी-छोटी बातें 28
15. पहली रेल यात्रा का संस्मरण 30
16. कुछ यूट्यूब चैनलों की जानकारी-1 31
17. रासूल हमजातोव 33
18. बच्चों की स्वतंत्रता का सिद्धांत : गिजू भाई 36
19. सामाजिक बहिष्कार कुरीति 37
20. खोज-खबर 39
21. मासिक धर्म : मौन की जंजीरों को कब तोड़ेगी चेतना की क्रांति 41
22. असमानी बिजली 43
23. तर्कशीलों की गतिविधियाँ 46

आनलाईन पत्रिका को पढ़ने के लिए :

www.tarksheel.org,
http://tarksheelblog.wordpress.com
सर्च करें: tarksheel :
www.archive.org
Readwhere.com

संपादकीय

पिछले कुछ दिनों से भारतीय संविधान से धर्मनिरपेक्षता (Secular) और समाजवाद (Socialism) शब्दों को हटाने पर विवाद गरमाया हुआ है। ये शब्द 1976 में 42वें संविधान संशोधन के माध्यम से संविधान में जोड़े गए थे। समाजवादी (Socialist) : इस शब्द को शामिल करने का उद्देश्य आर्थिक और सामाजिक न्याय के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को उजागर करना था। भारतीय संदर्भ में, समाजवाद का सामान्य अर्थ एक कल्याणकारी राज्य है। धर्मनिरपेक्षता (Secularism): इस शब्द को जोड़ने का उद्देश्य भारत में किसी भी धर्म, पंथ को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता नहीं दी जाएगी। इसका अर्थ है कि राज्य किसी एक धर्म का पक्ष नहीं लेगा और सभी धर्मों को बराबर सम्मान देगा।

संविधान से इन शब्दों को हटाने के प्रस्ताव के विरोधियों ने कई दलीलें दी हैं। आलोचकों की मुख्य दलील यह है कि ये शब्द 1976 में आपातकाल के दौरान शामिल किए गए थे, जब लोकतांत्रिक प्रक्रियाएँ सीमित थीं। वे इसे ''संवैधानिक धोखाधड़ी'' मानते हैं क्योंकि इसे लोगों से व्यापक परामर्श के बिना जोड़ा गया था। कुछ लोग कहते हैं कि संविधान निर्माताओं ने मूल रूप से इन शब्दों को शामिल नहीं किया क्योंकि उनका मानना था कि संविधान के मूल सिद्धांतों में ये विचार पहले से ही शामिल थे।कई आलोचकों का कहना है कि समाजवाद और धर्म पश्चिमी अवधारणाएँ हैं जो भारतीय सभ्यता के मूल चरित्र से मेल नहीं खातीं। उनका तर्क है कि भारत में हमेशा से धार्मिक बहुलवाद और सहिष्णुता रही है, जिसके लिए ''धर्मनिरपेक्षता'' जैसे शब्दों की आवश्यकता नहीं है। ''समाजवादी'' शब्द को हटाने के समर्थकों का तर्क है कि यह निर्वाचित सरकार की आर्थिक नीतियों के विकल्प को सीमित करता है। उनका मानना है कि यह शब्द भारत को एक विशिष्ट आर्थिक व्यवस्था से जोड़ता है, जबकि आज के उदारीकरण के युग में विभिन्न आर्थिक मॉडलों को अपनाने की आवश्यकता है। कुछ समूहों का मानना है कि ''धर्मनिरपेक्षता'' शब्द की गलत व्याख्या की गई है और इसका इस्तेमाल बहुसख्यकों के खिलाफ या अल्पसंख्यकों को खुश करने के लिए किया गया है।

इन शब्दों को हटाने का विरोध करने वाले समूह और राजनीतिक दल तर्क देते हैं कि सर्वोच्च न्यायालय ने कई निर्णयों में, विशेष रूप से केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य (1973) और एस.आर. बोम्मई बनाम भारत संघ (1994) के मामलों में, यह स्पष्ट किया है कि धर्मनिरपेक्षता संविधान के मूल ढाँचे का हिस्सा है। इसका अर्थ है कि संसद इसे संविधान से हटा नहीं सकती, भले ही ये शब्द बाद में प्रस्तावना में जोड़े गए हों। सर्वोच्च न्यायालय ने भी 2024 के एक मामले में कहा था कि ''समाजवादी'' और ''धर्मनिरपेक्ष'' शब्द व्यापक रूप से स्वीकार्य हैं। न्यायालय ने 1976 के संशोधन को चुनौती देने वाली याचिकाओं को खारिज कर दिया था।

हाल ही में,कुछ नेताओं ने इन शब्दों को हटाने की मांग फिर से उठाई है, जिससे राजनीतिक हलकों में काफ़ी बहस छिड़ गई है। विपक्षी दलों ने इसे संविधान की ''भावना'' पर हमला बताया है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना से ''धर्मनिरपेक्षता'' और ''समाजवाद'' शब्दों को हटाने को लेकर उठे विवाद ने भारत के मूल सिद्धांतों, लोकतंत्र की प्रकृति और राष्ट्रीय पहचान पर गंभीर प्रश्न खड़े कर दिए हैं। जहाँ कुछ लोग इसे एक ''आपातकालीन भूल'' को सुधारने और संविधान को उसके मूल स्वरूप में पुनर्स्थापित करने का एक तरीका मानते हैं, वहीं कई लोग इसे भारत के मूल धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी चरित्र को कमज़ोर करने का प्रयास मानते हैं। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों ने इन शब्दों की स्थिति को मज़बूत किया है, लेकिन भारतीय राजनीति में समय-समय पर इस पर बहस छिड़ती रहती है।

जीव, आत्मा और मानव

-गुरचरण नूरपुर

प्राचीन काल से ही मनुष्य मृत्यु पर विजय पाने का प्रयास करता रहा है। मृत्यु क्या है? यह क्यों घटित होती है? मृत्यु के बाद व्यक्ति कहाँ जाता है? क्या मृत्यु के बाद जीवन है? यदि मृत्यु के बाद जीवन है तो उसका स्वरूप क्या होगा? हम कहाँ से आए हैं ? हमारे जीवन का अंतिम उद्देश्य क्या है? ऐसे बहुत से प्रश्न हैं जिन पर हर युग में चर्चा होती रही है। यह आज भी हो रही है।

प्राचीन मनुष्य को जीवों के जन्म और मृत्यु के वैज्ञानिक पहलुओं का ज्ञान नहीं था। मनुष्य ने अपनी कल्पना के मुताबिक विभिन्न प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास किया।

लाखों वर्षों में पृथ्वी पर जीवों की अनेक प्रजातियाँ उत्पन्न हुई हैं और उनमें से कई हमेशा के लिए विलुप्त भी हो गयी हैं। यह प्रकिया आज भी जारी है। अतीत में मनुष्य की औसत आयु आज की तुलना में कम थी। चिकित्सा विज्ञान ने मनुष्य की औसत आयु बढ़ा दी है। बेशक, मानव जीवन को कुछ और वर्षों के लिए बढ़ाया जा सकता है, लेकिन मृत्यु फिर भी अटल रहेगी। यह प्रकृति का नियम है कि पदार्थ अपना रूप बदलता रहता है। जो चीज जन्म लेती है उसका जन्म ही यह संकेत देता है कि वह आवश्य नष्ट होगी। पृथ्वी, चंद्रमा, सूर्य और तारे भी एक दिन नष्ट हो जायेंगे, अर्थात उनका पदार्थ दूसरे रूप में बदल जायेगा। इसी प्रकार, जहाँ कुछ नया जन्म लेता है, वहाँ पुराना खत्म हो जाता है। यह प्राकृतिक नियम है। इसलिए, मृत्यु की यह प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। मृत्यु की घटना जारी है और जारी रहेगी।

प्राचीन लोग इस बात पर विचार करते थे कि मृत्यु से कैसे बचा जाए। जब मनुष्य मृत्यु पर विजय पाने में असफल रहा, तो उसने आत्मा की कल्पना की। अंधविश्वासी सोच के माध्यम से मनुष्य को यह सिखाया गया कि जब कोई मरता है तो केवल उसका शरीर मरता है, आत्मा नहीं मरती। मृत्यु के बाद आत्मा दूसरे शरीर में चली जाती है। मनुष्य को बताया गया कि सच्चा जीवन मृत्यु के बाद ही शुरू होता है। यह अपने आप में एक झूठी कल्पना थी। मृत्यु के बाद के संसार को प्रलोक कहा गया। इस अगली दुनिया को सच्ची दुनिया, मनुष्य का असली घर कहा गया, जो वास्तव में काल्पनिक है। इसके साथ ही स्वर्ग के सुखों की भी कल्पना की गई थी।

'आत्मा', जिसे 'स्पिरिट' भी कहा जाता है, के बारे में प्राचीन मान्यता यह थी कि जब कोई व्यक्ति सो रहा होता है, तो उसकी तथाकथित आत्मा थोड़ी देर के लिए इधर-उधर भटकती रहती है। उसके जागने से कुछ समय पहले, आत्मा उसके शरीर में पुनः प्रवेश करती है। आत्मा के बारे में कहा जाता है कि आत्मा न जन्मती है और न मरती है, आत्मा अमर है। आत्मा के विषय में दुनिया भर में कई ऐसे अंधविश्वास प्रचलित हैं। इस विषय पर बहुत सारा साहित्य लिखा गया और फिल्में भी बनाई गईं हैं।

भले ही आज तथाकथित ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए पाठ-पूजा, जादू- मंत्र, यज्ञ- हवन आदि अनुष्ठान किए जाते हैं, लेकिन वास्तव में ये आत्मा को नियंत्रित करके मृत्यु पर विजय पाने, प्राकृतिक आपदाओं से बचने और मन की इच्छाओं को पूरा करने के प्रयास थे। जादू, मंत्र, टोना-टोटका और पाठ-पूजा से मृत्यु पर विजय नहीं पाई जा सकती। इसी कारण से धर्मग्रंथों के माध्यम से मनुष्यों को यह शिक्षा दी गई कि यह संसार स्वयं नाशवान, भ्रामक और भ्रमपूर्ण है। वास्तविक जीवन मृत्यु के बाद शुरू होता है। मनुष्य को यह भी बताया गया कि इस जीवन का एकमात्र उद्देश्य पूजा-पाठ करना है ताकि मोक्ष की प्राप्ति हो सके। जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होना अर्थात आत्मा का मुक्त होना। इस प्रकार, अध्यात्मवाद ने पहली बार आत्मा की मृत्यु से एक झूठी सुरक्षा के रूप में कल्पना की। इसके बाद उन्होंने प्रेतबाधा से बचने के लिए मनगढ़ंत कर्मकांड, पूजा-पाठ, भक्ति, तपस्या आदि अंधविश्वासों का निर्माण किया। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि शरीर तो नाशवान है (शरीर को यहीं रहना है, मिट्टी में मिल जाना है, तथा आत्मा न जन्मती है, न मरती है), किन्तु आत्मा अमर है (आस्तिकता के अनुसार),

फिर मोक्ष किस बात की? पाठ-पूजा, प्रार्थनाएँ, यज्ञ-हवन और तपस्याएँ किस उद्देश्य के लिए हैं?

वास्तव में लाखों कोशिकाएं मिलकर मनुष्य या अन्य जीवों के शरीर का निर्माण करतीं हैं। पैंतालीस वर्ष की आयु के बाद व्यक्ति धीरे-धीरे मरने लगता है। शास्त्रों में चौरासी लाख योनियों की बात कही गई है। लेकिन जैसा कि पहले बताया गया है, जीवों की कई प्रजातियां ऐसी हैं जो इस धरती से हमेशा के लिए लुप्त हो गई हैं, जैसे डायनासोर जो कभी इस धरती पर मौजूद थे। जब ये जीव अपने पर्यावरण के अनुकूल नहीं बन सके तो उनकी प्रजाति इस धरती से हमेशा के लिए खत्म हो गई। क्या इस प्रजाति के विलुप्त होने से चौरासी लाख में से एक प्रजाति कम नहीं हो गई है? इस धरती पर रहने वाले जीव-जंतुओं की दुनिया अनोखी है। बहुत सारा जीवन पानी में है। हवा में भी जीवन है और पृथ्वी पर लाखों प्रजातियों के जीव रहते हैं। जैसे पहाड़ों पर रहने वाले जानवर आकार में छोटे होते हैं। पहाड़ों पर उगने वाली वनस्पति भी मैदानी इलाकों से भिन्न होती है, इसी प्रकार पहाड़ों और बर्फीले क्षेत्रों में रहने वाले जीव-जंतु भी कुछ हद तक भिन्न होते हैं। जैसे पहाड़ों में रहने वाली गायें आकार में छोटी होती हैं, मैदानी इलाकों में रहने वाली गायें उनसे बड़ी और भारी होती हैं। यह सब बताता है कि जीवों का आकार और रंग भौगोलिक स्थिति बदलने के साथ कुछ हद तक बदल जाता है। बर्फीले क्षेत्रों में पाई जाने वाली भेड़ों और बकरियों के शरीर पर लंबी फर (लंबे बाल) होते हैं। यह आश्रय उन्हें कठोर सर्दियों और बर्फ से बचाता है।

शास्त्रों और धर्मग्रंथों के अनुसार, व्यक्ति के इस जन्म के कर्म ही उसका अगला जन्म निर्धारित करते हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी जीव हैं जिनका जीवनकाल कुछ ही क्षणों का होता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कोई जीव माँ के गर्भ में ही मर जाता है। इस अवस्था के दौरान जीव ने क्या-क्या कर्म किये होंगे? अध्यात्मवाद यहाँ कहेगा कि यह पिछले जन्मों का फल है। यदि यह मान भी लिया जाए कि यह सब पिछले जन्म का लेन-देन था, तो अगला जन्म किस फल पर आधारित होगा? चौरासी लाख योनियों वाला पहला जन्म किसका परिणाम था?

यदि अमीबा जैसे एककोशिकीय जीव को काट दिया जाए तो वह दो या अधिक भागों में विभाजित होने के पश्चात भी जीवित रह सकता है। यहाँ प्रश्न पैदा होता है कि आत्मा किस भाग में होगी?

अंधविश्वासी लोग मानसिक रूप से बीमार लोगों के असामान्य व्यवहार को 'आत्मा का प्रवेश' कहते हैं। उनके अनुसार, कभी-कभी अन्य आत्माएं उनके अंदर आकर बोलने लगती हैं। सवाल-जवाब करती हैं। मनोविज्ञान के अनुसार ये मानव मानसिक विकार हैं। जो लोग जंत्र-मंत्र का जाप करते हैं, वे इसे बुरी आत्माओं, राक्षसों और आत्माओं के अवशेषों का काम बताते हैं। लेकिन वास्तविकता यह नहीं है, ये वास्तव में मानसिक बीमारियाँ हैं। इनका अब नैदानिक मनोविज्ञान में उपचार संभव है। आज यदि किसी तथाकथित संत की आत्मा किसी में आकर बोलने लगे (धार्मिक भाषा में) तो उसे दवा देकर ठीक किया जा सकता है। आत्माओं के संबंध में लोगों में अनेक भ्रांतियाँ पाई जातीं हैं। इन मिथकों के अनुसार, लोगों पर केवल उन मृत लोगों की 'आत्माओं' का ही प्रभाव होता है जिन्हें वे जानते हैं। इस अंधविश्वास के अनुसार, जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है तो तथाकथित धर्मराज उसकी आत्मा को लेने के लिए जमदूत को भेजते हैं। लेकिन जब आत्माएं, जैसा कि अंधविश्वास कहता है, तथाकथित भूत-प्रेत के रूप में भटकती हैं, तो क्या उस समय जमदूत अपनी डियूटी से गैर हाजिर होतें हैं?

वास्तव में, आत्मा मानव मन की एक कल्पना है। पूर्ण विकसित बुद्धि के अभाव के कारण प्राचीन मानव यह कल्पना करता था कि उसके भीतर कोई चमत्कारी शक्ति है जो मनुष्य को बोलने, खाने-पीने, खड़े होने-बैठने, सोने-जागने में सक्षम बनाती है। इसे ही मनुष्य 'आत्मा' कहता है। इस अवधारणा को पुष्ट करने के लिए इसमें कई अन्य काल्पनिक अवधारणाएँ जोड़ दी गईं। जैसे चौरासी लाख योनियाँ, स्वर्ग-नरक, पूजा-पाठ, यज्ञ-पूजन आदि। आत्मा की अवधारणा से सबसे अधिक लाभ तथाकथित आस्तिकों को हुआ। संतों, बाबाओं और पुजारियों ने उपदेश दिया कि मनुष्य का केवल शरीर ही मरता हैं और आध्यात्मिक रूप से वह जीवित रहता है। इस अवधारणा से मृत व्यक्ति के परिवार को उनकी मृत्यु अधिक कष्टकारी नहीं लगती। वहीं पर इस अवधारणा ने पुरोहित वर्ग को भी रोजगार प्रदान किया। लोग पुरोहितों के आदेश पर अपने पूर्वजों की पूजा करते हैं। श्राद्ध करते समय लोग अपने मृतक

रिश्तेदारों और पूर्वजों की तथाकथित खुशी प्राप्त करने के लिए पुरोहितों को भोजन कराते हैं। वे दान के रूप में पैसा, कपड़े, बर्तन और जानवर जैसी चीजें भी देते हैं। इस प्रकार पुजारी बिना कोई काम किये विलासितापूर्ण जीवन जीते हैं। ये चतुर-चलाक लोग समाज में सर्वश्रेष्ठ माने जाने लगे।आज भी हमारे समाज में हर जगह तांत्रिक, ज्योतिषी, संत, बाबा और गुरु बैठे हुए हैं। वे अपना कारोबार जारी रखने के लिए भोले-भाले लोगों को काल्पनिक अवधारणाओं में उलझाकर उनका शोषण कर रहे हैं। भले ही आज विज्ञान ने बहुत प्रगति कर ली है, लेकिन हमारी सोच अभी भी वैज्ञानिक नहीं बन पाई है। आज भी हम तथाकथित कर्मकाण्डों, पाठ और पूजा-पाठ को ही सबसे बड़ा काम मानते हैं। यह वास्तव में कोई काम नहीं है। ऐसी अवधारणाओं के प्रचार-प्रसार के लिए लाखों रुपए खर्च करके विशाल धार्मिक स्थलों का निर्माण किया गया। डेरे बनाए गए। लाखों लोग उनकी देखभाल में लगे हुए हैं। इन धार्मिक स्थलों और डेरों में लुटेरों का एक बड़ा वर्ग बैठा है, जो लोगों की गाढ़ी कमाई हड़पने के लिए आतुर है। आजकल ये लोग वैज्ञानिक सुविधाओं का लाभ उठाकर रूढ़िवादी विचारधारा का प्रचार करने में लगे हुए हैं। आज सूचना प्रेषित करने के साधन तेजी से बढ़ रहे हैं। इसके साथ ही अंधविश्वास का प्रसार भी उसी गति से हो रहा है। अंधविश्वास मानव बुद्धि को उलझा देते हैं। अंधविश्वासों से बंधे समाज बाकी दुनिया से पीछे हैं। आज के युग की बढ़ती जटिल समस्याओं/मुद्दों को समझने के लिए वैज्ञानिक सोच के प्रचार-प्रसार की बहुत आवश्यकता है। अच्छे वैज्ञानिक, विद्वान और प्रगतिशील विचार वाले लोग अंधविश्वसी सोच वाले समाजों में पैदा नहीं होते। अंधविश्वासी समाजों में संत धन संचय करते हैं। अंधविश्वास के दलदल में फंसे लोग अपना अगला जीवन सुधारने के लिए इन लुटेरों से लड़कर अपना कीमती समय, पैसा और ऊर्जा बर्बाद कर देते हैं।

किसी भी अच्छे समाज के निर्माण के लिए यह बहुत जरूरी है कि लोगों की सोच का तरीका वैज्ञानिक हो। हमें विभिन्न कठिनाइयों और समस्याओं से छुटकारा पाने तथा अपनी जीवनशैली को अधिक कुशल बनाने के लिए वैज्ञानिक सोच अपनाने की आवश्यकता है। इसलिए, हमें यथासंभव ऐसी पुस्तकें पढ़नी चाहिए जो रचनात्मक मार्गदर्शन प्रदान करती हों।

98550-51099

ज्योतिष और अंधविश्वासी लोग

ज्योतिषी लोगों में तरह-तरह के अंधविश्वास पैदा करते हैं। प्राय: अंधविश्वासी लोग ही ज्योतिषियों के पास जाते हैं। मनुष्य सदैव चाहता है कि उसका जीवन सुखी रहे। जब कभी उसके जीवन में कोई परेशानी आती है तो वह दुखी हो जाता है और बाहरी लोगों से मदद मांगता है।

मानवीय भय और चिंताओं के समाधान के लिए ज्योतिषियों के पास सिर्फ तुक्के-बाजी होती है। लोगों की अपने स्वास्थ्य, व्यापार, बीमारी और परिवार के बारे में चिंताएं, ज्योतिषियों के द्वारा लोगों की लूट का आधार बनती हैं।

ज्योतिषी परेशान लोगों की कमजोरी का फायदा उठाते हैं। ज्योतिषी प्रतिदिन अनेक लोगों से मिलते हैं, यही कारण है कि वे प्रतिदिन नई-नई रणनीतियाँ अपनाते हैं। बीस वर्ष की आयु में शिक्षा के बारे में, बीस से तीस वर्ष की आयु में विवाह और काम के बारे में, तीस से चालीस वर्ष की आयु में परिवार और रिश्तेदारों के बारे में, पचास वर्ष तक बच्चों, खुशी और संपत्ति के बारे में और पचास के बाद शारीरिक कष्ट और अन्य समस्याओं के बारे में विषय होते हैं। अधिकतर लोग चालीस वर्ष की आयु में ज्योतिषियों के पास जाते हैं, क्योंकि इस समय जवानी का का दौर गुजर चुका होता है। बच्चे आत्मनिर्भर हो चुके होतें हैं। खर्च, आय से मेल नहीं खाता। परिवार में शांति और सद्भाव नहीं रहता तथा कई अन्य परेशानियां उन्हें घेरे रहती हैं।

इस तरह लोगों की समस्याएं ज्योतिषियों के लिए आजीविका का साधन बन जाती हैं। सच तो यह है कि ज्योतिष किसी की समस्याओं का समाधान नहीं करता, बल्कि ज्योतिषियों पर विश्वास के कारण लोग उन समस्याओं के उपाये ढूंढ़ते रहते हैं और समय की बर्बादी करते रहतें हैं। वास्तव में लोगों को जीवन में आने वाली कठिनाइयों के सही कारणों की जाँच करनी चाहिए फिर उस मुताबिक उसका समाधान ढूंढना चाहिए न कि तथाकथित ज्योतिषियों के पिछे लगकर समय और धन की बर्बादी करनी चाहिए।

-रणजोत कौर

भगत सिंह पर पहला हक़ तो हरनाम कौर का है!

चाची हरनाम कौर की शहीद -ए आज़म भगत सिंह के जीवन में विशेष और प्रेरणादायक भूमिका रही है। चाची हरनाम कौर एक साहसी, तेजस्वी और निडर महिला थी। जब भगत सिंह छोटे थे, उन्होंने अपने घर में अंग्रेजों के अतियाचारों के खिलाफ़ बोलते, किसानों के दुख-दर्द को समझते और आज़ादी की बातें करते बड़ों को सुना – जिनमें चाची हरनाम कौर भी थी। भगत सिंह के जीवन की वो प्रेरणा थीं जिन्होंने उन्हें एक संवेदनशील, विचारशील और निडर युवा के रूप में ढालने में अहम भूमिका निभाई। उसने अपने जीवन में अनेकों कष्ट झेले मगर वो कभी भी घबराई नहीं। वो उस स्त्री शक्ति का प्रतीक हैं, जो पर्दे के पीछे रहकर एक क्रांतिकारी का पालन-पोषण करती है। उनके विस्तृत जीवन में से कुछ अंश हम इस लेख में पेश कर रहे हैं।

शहीद भगत सिंह के चाचा सरदार अजीत सिंह की कहानी उनकी पत्नी हरनाम कौर के बिना पूरी नहीं होती। अजीत सिंह आज़ादी के दीवाने अनोखे क्रांतिकारी थे। देश के बड़े क्रांतिकारी नेताओं में उनका शुमार था। 'पगड़ी संभाल जट्टा' उन्हीं का खड़ा किया गया किसान आंदोलन था जिसकी तब देश भर में गूंज हुई। जिन दिनों अंग्रेज सरकार ने अजीत सिंह को जलावतन किया था लेकिन उसके कुछ दिन बाद ही उसने यह आदेश वापस ले लिया। अजीत सिंह जानते थे कि यह सब बहुत अस्थाई है। उन्हें लग रहा था कि अंग्रेज उन्हें काम नहीं करने देंगे सो वे सरकार की आंखों में धूल झोंक कर विदेश चले गए। न कोई पत्र, न खैर-खबर। हरनाम राह देखते थक-थक जातीं। लंबे समय बाद यह पता लगा कि वे जीवित हैं। हरनाम के लिए यह बड़ी बात थी। कई बार रोम रेडियो से अजीत सिंह के भाषण प्रसारित होते। पर हरनाम हरदम बेहाल बनी रहतीं। जाने क्यों उम्मीद की एक रौशनी उनके भीतर कौंधने लगती कि उनके पति किसी दिन ज़रूर लौटेंगे। उनका विश्वास सफल हुआ जब अजीत सिंह मार्च, 1947 को स्वदेश लौट आए। हरनाम बहुत खुश हुईं। दोनों ने एक दूसरे को देखा लेकिन 38 सालों के वक्फे ने उनकी ज़िन्दगी की बदल कर रख दिया था। अजीत सिंह को हरनाम के प्रति अपने कर्तव्य का अहसास था। उनकी हुई उपेक्षा से वे बहुत आहत थे। अजीत सिंह विदेश में थे तब एक बार उन्होंने छद्म नाम से किसी दूसरे के पते पर एक पत्र हरनाम को भेजा जिसमें अपने बारे में कुछ बताया था। उन दिनों भारत में भगत सिंह पर मुकदमा चलाया जा रहा था। भगत सिंह के छोटे भाई कुलतार सिंह तब पांचवें दर्जे में पढ़ रहे थे। हरनाम ने कुलतार से अजीत सिंह के नाम एक पत्र लिखवाया जिसमें उन्होंने कहा, 'आप तो परसों लौटने का वादा करके गए थे, पर अभी तक आए क्यों नहीं ?' अजीत सिंह ने जवाब में लिखा, 'अज़ीज, परसों और बरसों में दो ही नुक्तों (उर्दू लिपि के अनुसार) का फर्क है।' हरनाम इस पर क्या कहतीं ? वे तो धीरज का हिमालय थीं। उन्हें इसी बात का संतोष था कि देश का काम करते हुए उनके पति सकुशल हैं।

हरनाम कौर कसूर (अब पाकिस्तान में) के एक वकील धनपत राय की पुत्री थीं जो स्वयं क्रांतिकारी विचारों के थे। वे अजीत सिंह की देश के लिए दीवानगी से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने अपनी पुत्री हरनाम का हाथ उनको थमा दिया। ससुराल आने पर हरनाम को पता लगा कि उनका नया घर तो देशभक्तों का अड्डा है। ऐसे में उन्हें भी अतिथियों के आने पर उनके स्वागत-सम्मान का ध्यान रखना पड़ता। जब अजीत सिंह अचानक घर से निकल गए तो लम्बा समय उन्होंने विदेश में बिताया। उस समय हरनाम का अकेलापन घर वालों को भी अखरने लगा था। यह देखकर लोगों ने सरदार किशन सिंह का बालक उन्हें सौंप दिया। अब वे अपने इस भतीजे को पालने-पोसने में लग गईं। उनके जीवन का प्रभाव इस बच्चे पर भी पड़ा जो और कोई नहीं भगत सिंह थे। अपनी चाची से मिले प्यार को भगत सिंह शहादत तक भूले नहीं। वह उनके जीवन की अमूल्य निधि थी। और देखिए कि भगत सिंह की फांसी के ठीक पहले उनसे अंतिम मुलाकात के लिए जेल अधिकारियों ने हरनाम को मिलने की आज्ञा नहीं दी। कहा गया कि सिर्फ रक्त-संबंधी ही भेंट कर सकते हैं। तो क्या हरनाम से भगत सिंह का कोई रिश्ता नहीं था ? हरनाम ने यह सुना तो तड़प कर रह गईं। उनकी इस पीड़ा को समझते हुए भगत सिंह के पिता किशन सिंह और मां विद्यावती ने अपने बेटे भगत सिंह से

आख़िरी मुलाकात करने से मना कर दिया। जब हरनाम नहीं मिल सकतीं तो वे भी नहीं मिलेंगे। आखिर भगत सिंह पर पहला हक़ तो हरनाम का है। उन्हें कैसे इस अधिकार से वंचित रखा जा सकता है। कैसा भीगा और कठिन समय था वह। एक तरफ इंकलाबी इतिहास की रची जा रही सुर्ख इबारत तो दूसरी ओर दुःख, रुदन और बेटे के बिछोह से पछाड़ खाती वे तीन छातियां! हरनाम, विद्यावती और किशन सिंह के आंसुओं में डूबे वे तीन चेहरे उस क्षण समय के किसी फ्रेम में दर्ज हो गए।

कौन जाने कि भगत सिंह जब जेल में थे तो हरनाम को उनकी बहुत चिंता सताती रहती। इसके पहले एक मुलाकात में बन्दी की हालत में भगत सिंह से उनकी इस चाची ने पूछा था, 'सरकार बहुत सख्त है, तुम्हें सताती होगी ?' भगत सिंह ने जवाब दिया था, 'नहीं चाची, यह सरकार तुम्हारी सरकार (पति) से कम सख्त और कम सताती है।' यह सुनकर हरनाम के भीतर सन्नाटा तैर गया। जीवन भर अपने पति का बिछोह सहने वाली हरनाम भगत सिंह को फांसी का हुक्मनामा सुनकर बेचैन हो उठीं। आख़िर वे उनकी 'मां' जो थीं। भगत सिंह नहीं रहे तो वे अपना समय गुजारने के लिए लड़कियों को पढ़ाने का काम करने लगीं।

अजीत सिंह को इस बात का सघन अहसास था कि जहां देश की आज़ादी के लिए उन्होंने कर्तव्य के कठिन पथ पर चलने में कोई चूक नहीं की, वहीं दूसरी ओर उनसे हरनाम के प्रति अन्याय हुआ है। अड़तीस वर्षों का लम्बा बिछोह कम नहीं होता और वह भी तब जबकि पत्नी को दीर्घ अवधि तक इसकी जानकारी ही न हो कि उनके पति कहां और कैसे हैं। उस शाम जब अजीत सिंह हरनाम से मिले तो उनके मन में गहरा पछतावा भी था। उन्होंने हरनाम को अपने पास बुलाया और आगे बढ़ कर उनके पांव पकड़ लिए। इतना ही कहा, 'सरदारनी, मुझे माफ कर देना।'

स्विट्ज़रलैंड में अजीत सिंह की भेंट जवाहर लाल नेहरू से हुई थी। उस समय उन्होंने स्वदेश लौटने की इच्छा जाहिर की लेकिन यह कई कारणों से संभव न था। बताया जाता है कि रोम रेडियो से उनके भाषणों के प्रसारण से ब्रिटिश सरकार अत्यंत नाराज़ थी। वह उनसे बदला ले सकती थी। लेकिन 1947 में स्थितियों में तब्दीली आने पर वे अपनी धरती पर वापस लौटे। लम्बे समय बाद उनका आना हरनाम के लिए बहुत सुखद था। नेहरू चाहते थे कि उन दिनों दिल्ली में चल रही एशियाटिक कांफ्रेंस में अजीत सिंह रहें। आखिर मार्च, 1947 का वह दिन आ गया जब परिवार के लोग उनसे मिलने के लिए व्यग्र हो उठे।

अजीत सिंह देश लौट कर हरनाम के साथ कुछ ही दिन साथ रह सके। 15 अगस्त, 1947 का वह सवेरा हुआ जब भारत की स्वतंत्रता का उदघोष सबको सुनाई पड़ा। अजीत सिंह की आँखें खुशी से भर उठीं। लेकिन यह क्या कि आज़ादी का जयनाद कानों में पड़ते ही अजीत सिंह ने एकाएक मृत्यु का वरण कर लिया। जैसे वे यह देखने और सुनने के लिए ही जीवित थे। डलहौजी उनकी अंतिम शरण स्थली बनी। हरनाम तो फिर अकेली रह गईं। कैसा त्रासद जीवन! मुल्क को गुलामी के बंधन से मुक्त कराने के लिए दोनों का अनोखा बलिदान!

समय अपनी गति से आगे बढ़ता रहा और देखते-देखते 10 फरवरी, 1962 का दिन आ गया जब हरनाम ने भी फिरोजपुर में अंतिम सांस ली। इसके बाद वहीं भगत सिंह की समाधि के निकट उन्हें धरती मां की गोद में शरण दे दी गई। संयोग या दुर्योग देखिए कि 38 वर्षों बाद पति की दीर्घ प्रतीक्षा का समापन और तत्काल बाद सिर पर वैधव्य की काली छाया। इस बार पति का संग-साथ तो छमाही भर का ही रहा।

अजीत सिंह देश की आज़ादी के बड़े जीवट वाले योद्धा थे ही, लेकिन दूसरी ओर पहाड़-सा धीरज रखने वाली उनकी अर्धांगिनी हरनाम का त्याग तो सचमुच अद्भुत है।

प्रणाम हरनाम कौर!

प्रस्तुतकर्ता-गुरमीत अंबाला

कोई भी व्यक्ति जो प्रगति का समर्थक है, उसे अवश्य ही पुराने विश्वास की हर बात की आलोचना करनी चाहिए। इस पर अविश्वास करना होगा और इसके हर पहलू की जांच करनी होगी। लोकप्रिय धारणा के एक बिंदु की गहन जांच करनी होगी। कोरा विश्वास और अंध विश्वास खतरनाक है। यह मन को कुंद कर देता है और व्यक्ति को प्रतिगामी बना देता है।

-भगत सिंह

जीवन शैली

-चंनण वांदर

गाँव में एक मज़दूर वर्ग का परिवार रहता था। घर का मुखिया अपनी दुकान पर काम करता था। परिवार का खर्चा इसी काम से चलता था। परिवारिक जीवन ठीक चल रहा था। अचानक घर का माहौल बिगड़ गया। नौवीं कक्षा में पढ़ने वाली बेटी अचानक बीमार पड़ गई। परिवार ने पहले इस समस्या को आम ही समझा। उसे दवा और जड़ी-बूटियाँ दीं। आराम मिलने के बजाय, बीमारी और बिगड़ती गई। लड़की पढ़ाई में अच्छी थी। उसे जल्दी ठीक होने की चिंता सताने लगी। वह मानसिक रूप से भी परेशान रहने लगी।

अनोखा व्यवहार : अपनी बेटी के स्वास्थ्य के लिए उसके माता-पिता उसे इलाज के लिए शहर ले गए। एक बड़े डॉक्टर से महँगा इलाज शुरू हुआ। जाँच और दवाइयों का खर्च उनकी पहुँच से बाहर होने लगा। लड़की की हालत में सुधार हुआ, लेकिन घर लौटने ही उसका व्यवहार बदल गया।उसने घरवालों से बात करनी बंद कर दी। बात-बात पर गुस्सा करती। वो सबको घूरने लगी थी। एक टक बाहर देखती रहती। बेटी, जो पहले अपनी माँ से सब कुछ साझा करती थी, अब वो डरी -सहमी,चुपचाप बैठी रहती। उसने स्कूल जाना भी बंद कर दिया। घर वालों को स्कूल शिक्षकों से बार-बार बच्ची को स्कूल भेजने के संदेश मिले लेकिन उस ने स्कूल जाने से मना कर दिया। डॉक्टर ने दवा बंद कर दी और कहा कि उसकी हालत सामान्य है। कुछ दिनों में वो सामान्य व्यवहार करने लगेगी।

लेकिन डॉक्टर की बात का उल्टा होने लगा। एक रात वो चीखने-चिल्लाने लगी। पूरा परिवार इस व्यवहार से डर गया। फिर वह सारी रात रोती रही और कहती रही कि उसका दम घुट रहा है। परिवार वाले बच्ची को डॉक्टर के पास ले गए।

डॉक्टर ने सभी जाँचें कीं और बताया कि बच्ची को कोई बीमारी नहीं है। उसे आराम करने और उसके खान-पान का ध्यान रखने की जरुरत है। यह जानकर माता-पिता ने राहत की साँस ली। लेकिन यह खुशी ज़्यादा देर तक नहीं रही।कुछ दिनों बाद, लड़की रात में फिर से जाग गई और रोने लगी। उसने कहा, ''मेरे गले में कुछ गड़बड़ है। मैं साँस नहीं ले पा रही हूँ।'' उसकी माँ का बिस्तर उसके बगल में था। परिवार को उसके गले में घुटन की बात हजम नहीं है रही थी। ये बातें सुनकर लड़की उठी और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी, ''क्या तुम्हें लगता है कि मैं झूठ बोल रही हूँ? मुझे मर जाने दो, सब लोग मुझसे दूर चले जाओ।'' उसकी बातों से उसकी माँ चिंतित हो गई। उसने अपने रिश्तेदारों से सलाह ली और उन्होंने बताया कि लड़की को किसी अच्छे पंडे या बाबा के पास लेकर जाना चाहिए।

माँ का दर्द : माँ निराश थी कि उसकी अच्छी -भली बेटी को पता ही नहीं क्या हो गया है। लड़की का कहीं पर मन नहीं लग रहा था। वह बेचैन थी और परिवार भी बहुत परेशान था। माँ सोचती थी पता नहीं उसकी बेटी को किस बुरे व्यक्ति की नज़र लग गई । पहले घर का मुखिया, जो अच्छा-भला काम कर रहा था, अब वो भी नशा करने लग गया है और बेटी भी एक अकल्पनीय बीमारी से घिर गई थी। भय और चिंता के कारण, उसके पास अपनी समझ के अनुसार चिकित्सा उपचार के बाद एकमात्र विकल्प बाबा और चेले ही बचे थे।

काँटों भरी राह पर : अपनी बेटी के ठीक होने की आशा में माँ रिश्तेदारों के साथ अलग-अलग ढोंगी बाबाओं के पास जाने लगी।नौवीं कक्षा के वार्षिक पेपर में न दे पाने के कारण लड़की की मानसिक स्थिति और भी दयनीय हो गई। ऊपर से बाबाओं द्वारा उत्पन्न भय और दहशत ने लड़की का जीना और भी दूभर कर दिया। बाबा बताते यह खतरनाक टोने का प्रभाव है। इसके पीछे चुड़ैल का जादू-टोना है। इसका काली छाया से छुटकारा पाना कोई आसान काम नहीं है। वही जादू-टोना रात में उसकी साँसें रोक देता है। ऐसी बातें सुनकर लड़की के मन में भय बैठ गया। उसकी रातों की नींद बेचैनी में बदल गई। यह हालत भूख-प्यास की भी दुश्मन बन गई।

एक और ढोंगी बाबा ने उसे कई महीनों तक भूत-प्रेत का साया कहकर उलझन में डाले रखा। स्कूल के शैक्षणिक

और ज्ञान-आधारित माहौल से अंधकार और भय की दुनिया में पहुँच चुकी लड़की को कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। पढ़-लिखकर कुछ बनने के उसके सपने दम तोड़ने लगे। वह निराशा में डूबने लगी, ठीक होकर वापस स्कूल जाने की उसकी उम्मीद धूमिल होने लगी। परिवार लड़की के ठीक होने की उम्मीद में अलग-अलग डेरों में भटकता रहा। जितने बाबाओं के पास गए , उतने ही कष्टों की नईं-नईं कहानियाँ सुनने को मिली। सबने परिवार को खूब लूटा और कंगाल कर दिया। ऐसे में घर में लड़ाई-झगड़े होने लगे। लड़की ने बिस्तर पकड़ लिया।

ज़िंदगी दांव पर : जब परिवार हार मान गया, तो एक दिन लड़की को पढ़ाने वाली एक शिक्षिका दयावश उनके घर पहुँची। होशियार और आज्ञाकारी लड़की की दयनीय हालत देखकर वो निराश हो गई। पूरी स्थिति जानने के बाद उन्होंने परिवार को तर्कशील परामर्श केंद्र का पता दिया। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि जब तक बच्ची ठीक नहीं हो जाती, वो उसकी हर संभव मदद करेगी। निराश माँ को उम्मीद की किरण दिखाई दी। उसे अपनी ज़िंदिगी फिर से पटरी पर आने की उम्मीद नजर आई।

ज़िंदगी की ओर कदम : अपने परिवार के साथ परामर्श केंद्र पहुँची बच्ची खामोश बैठी थी। उसके चेहरे पर निराशा साफ़ दिखाई दे रही थी। उसके माता-पिता की बात सुनकर मैंने उसे बुलाया। पूछने पर उसने अपना नाम सुमन बताया। घर पर उसके परिवार के बारे में बात करते हुए, मैं धीरे-धीरे उसे सहज स्थिति में ले आया। हम स्कूल के बारे में बात करने लगे। घंटा भर की कोशिश कामयाब होने लगी। वह अपने बारे में, स्कूल के बारे में और घर के माहौल के बारे में बताने लगी। सुमन सहज महसूस करते हुए बताने लगी अंकल, मेरा स्कूल बहुत अच्छा है, टीचर मुझे बहुत प्यार करते हैं, मेरी दादी हर समय बोलती रहती हैं, उन्हें पढ़ना, बातें करना, हँसना और घर का काम करना पसंद नहीं है। मेरी एक छोटी बहन भी है, वह छठी कक्षा में पढ़ती है। हमने कोई ग़लती नहीं की है, फिर भी पता नहीं क्यों मेरी दादी हमें पसंद नहीं करतीं और हर समय मेरी माँ को भी परेशान करती रहती है। इस तरह का माहौल बहुत निराशाजनक है। दादी की तरह, मेरे पिताजी भी हमारे साथ ऐसा ही व्यवहार करने लगे हैं। जब से मैं बीमार पड़ी हूँ, मैंने उनसे सहानुभूति का एक शब्द भी नहीं सुना। जब इलाज और बच्चों का खर्चा उठाना पड़ा, तो पिताजी ने शराब का सहारा लेना शुरू कर दिया। मैं अपनी माँ की मजबूरी समझ सकती हूँ, लेकिन हम इसे बर्दाशत नहीं कर सकते। इस चक्कर में मेरी पढ़ाई का एक साल भी बर्बाद हो गया, लेकिन बात वहीं की वहीं है। यह बताते हुए सुमन रोने लगी। मैंने उसे दिलासा दिया और आश्वासन दिया कि मैं तुम्हारी समस्या का समाधान करके ही भेजुंगा।

फिर सुमन के माता-पिता को बुलाया गया। समस्या पर चर्चा की गई। माँ पहले ही सहमत हो चुकी थीं। सुमन के पिता भी परिवार की खुशी और बेटियों के भविष्य के लिए मेरे सुझावों से सहमत हो गए। मैंने उन्हें दो सप्ताह के बाद फिर से केंद्र पर आने को कहा। सुमन जब दोबारा केंद्र पर आई, तो वह बिल्कुल खुश थी। वह खुशी से कहने लगी, अंकल अब मैं स्कूल जाने लगी हूँ। घर पर भी सब ठीक है। उसके माता-पिता भी घर की खुशियाँ लौटने के लिए हमारा शुक्रिया अदा करने लगे। सुमन कुछ किताबें और एक '**तर्कशील पथ**' पत्रिका लेकर गई। यह अच्छे जीवन पथ पर सुमन का पहला कदम था।

भेदभाव नहीं, समानता जरुरी : घर में लड़कियों से भेदभाव के कारण सुमन का दम घुटने लगा था। जो उसके जीवन में बाधा बन गया। घर के माहौल ने ही उसे मानसिक रोगी बना दिया था। अंधविश्वासों और भ्रांतियों की जन्मभूमि ने उसे अंधकार की ओर धकेल दिया। यह समझना ज़रूरी है कि घर-परिवार से शुरू होने वाला भेदभाव और उत्पीड़न समाज में समस्याएँ पैदा करते हैं। सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था का भेदभाव और अन्याय बहुत सी समस्याओं की जड़ हैं, जिन्हें तर्क, ज्ञान, चेतना और संतुलित दृष्टिकोण से दूर किया जा सकता है। ऐसे आचरण के कदम एक समतामूलक समाज की ओर ले जाते हैं।

प्रमुख, कृष्न बरगाड़ी मेमोरियल परामर्श केंद्र,
बरगाड़ी (फरीदकोट) 98143-37522

आओ भाजी, कुछ बातें करते हैं।

-डॉ. साहिब सिंह

गुरशरण सिंह, जिन्हें प्यार से गुरशरण भाजी के नाम से जाना जाता है, रंगमंच के एक अत्यंत महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी नाटककार, निर्देशक और कार्यकर्ता थे। उनका जन्म 16 सितंबर 1929 को मुल्तान (अब पाकिस्तान) में हुआ था और 27 सितंबर 2011 को चंडीगढ़ में उनका निधन हो गया। उन्होंने रंगमंच को शहरों की सीमाओं से बाहर निकालकर गाँवों तक पहुँचाया और उसे जन आंदोलन का एक सशक्त माध्यम बनाया।

भाजी ने ''अवामी रंगमंच'' (जनता का रंगमंच) की एक नई विधा विकसित की। उनके नाटकों के लिए न तो बड़े ऑडिटोरियम की आवश्यकता थी और न ही महंगी लाइट व्यवस्था की। अभिनेता दर्शकों से सीधे संवाद करते थे। वे 1970 के दशक की शुरुआत से पंजाब के गाँवों में साल में कम से कम 150 रातें नाटकों का मंचन करते थे। उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों, जातिवाद, सांप्रदायिकता, सामंती उत्पीड़न और महिलाओं के प्रति भेदभाव को उजागर किया। उन्होंने मजदूर वर्ग, किसानों, श्रमिकों, महिलाओं, दलितों और हर उत्पीड़ित व्यक्ति की मुक्ति के लिए अथक प्रयास किया। भाजी ने लगभग 200 नाटक लिखे, जो सत्रह पुस्तकों और सात संकलित खंडों में प्रकाशित हुए। उनके नाटकों का दुनिया भर में लगभग 10,000 प्रदर्शन हो चुके हैं। उनके कुछ प्रसिद्ध नाटकों में ''टोया (गड्ढा)'', ''बाबा बोलता है', ''धमक नगरे की'', ''चाँदनी चौक से सरहिंद'' और ''कुर्सी मोर्चा और हवा में लटकते लोग'' शामिल हैं।

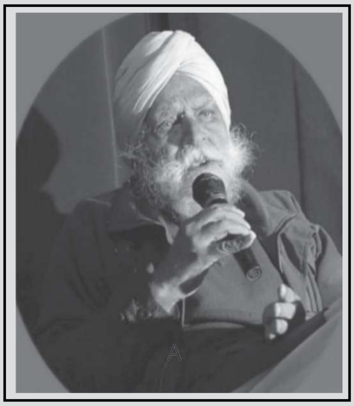

रंगमंच के नायक भाजी गुरशरण सिंह का योगदान अमूल्य है। जिन्होंने जीवन भर शहीद-ए-आजम भगत सिंह के सपनों की आजादी के लिए नाट कला के माध्यम से गांव-गांव में जागरूकता फैलाई। हम इस लेख के माध्यम से उनके अविश्वसनीय योगदान को सलाम करते हैं। इस लेख में जो संवाद विधि का प्रयोग किया गया है वो लेखक ने भाजी के निधन के बाद उनकी सोच और विचारधारा को पेश करने के लिए अपनी कलपना शक्ति के आधार पर लिखा गया है।

इसी महीने भाजी गुरशरण सिंह का जन्मदिन भी है और इसी महीने में उन्होंने हमें अलविदा भी कहा था। हृदय में बसे प्रेम के साथ भाजी के साथ कल्पित संवाद करने का अवसर बनाया जाए।

''जवाहरवाला में दलितों के साथ जो हुआ वो भयानक है, बहुत भयानक है, हमने 75 सालों में उन दबे- कुचले लोगों को क्या दिया? खाने को रोटी नहीं, पीने को साफ पानी नहीं, अपनी जमीन नहीं। उनके बच्चे कैसे स्वीकार कर सकेंगे कि देश स्वतंत्र है? उन्होंने क्या करना है इस डिजिटलीकरण से, उनकी तो बुनियादी जरूरतें भी पूरी नहीं हो रही। शीर्ष पर बैठे लोगों ने घोषणा कर दी है कि जिसके पास सत्ता होगी, वह हर सुविधा का आनंद लेगा, बाकी सब एजेंडे से बाहर है। और तब हमें भी कहना पड़ेगा कि हम इसे स्वीकार नहीं करते। हमें स्पष्ट रूप और दृढ़ता से कहना होगा कि हम इस व्यवस्था को स्वीकार नहीं करते, हम कीड़े-मकोड़े नहीं हैं। हम जीवित और सांस लेने वाले इन्सान हैं।''

''भाजी, आपने नाटक जगत में सचमुच अनूठा काम किया है, तो क्या कारण है कि आपके जीवनकाल में कई नाटककारों और आलोचकों ने आपको नाटककार नहीं माना? और अब भी, स्वर्गवास होने के बाद भी......?''

''यह स्वर्गवास क्या होता है?''

''(एक तर्कशील के लिए इस शब्द का प्रयोग करना गलत है,नई मुसीबत आ गई) कुछ नहीं भाजी, बस जुबान से यह शब्द निकल गया।''

''शब्द ढूंढो, नये शब्द ढूंढने पड़ेंगे, वरना वे हमें इस झंझट में फंसाए रखेंगे। ये शब्द 'उन्होंने' बनाए - स्वर्ग, नरक, ईश्वर, सर्वशक्तिमान - उन्होंने इन्हें हमें दबाने के लिए बनाया है और हमने इसे स्वीकार कर लिया, यह हमारी मूर्खता थी। मेरे लोग, मेरे लोग, (भाजी का गला भर आया), मेरे लोग मक्खी से भी बदतर जिंदगी जी रहे हैं, उदास आंखें लिए बैठे हैं। वे कुछ होने का, जीवन में सुधार होने का इंतजार करते रहते हैं, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं होता। वे अपना पूरा जीवन दो कपड़ों में बिता देते हैं, क्या उनका मन रंगीन कपड़े पहनने के लिए तरसता नहीं? मेरे लोग अब भी अपने हाथों पर रोटी रख कर खाते हैं, क्यों? उनको 75 वर्ष बीतने के बाद भी बर्तन नहीं दे सके। क्या उनका दिल नहीं करता कि वो भी प्लेट सजाकर खाना खाएं ? उन्हें आज भी सुबह उठकर खेतों और कारखानों के कोनों में जाकर जंगल और पानी की तलाश क्यों करनी पड़ती है? उनके लिए यह नरक किसने बनाया? इस पर विचार करना होगा। उन्हें यह बताना होगा कि यह किसी सर्वशक्तिमान ईश्वर का काम नहीं है, बल्कि उन लोगों की साजिश है जो जीवित रहते हुए स्वर्ग में विश्वास करते हैं। यह स्वर्ग और नर्क जैसे शब्दों का प्रयोग बंद करो। मैंने जीवन भर अपने गरीब लोगों के लिए काम किया है, मेरा निवास किसी स्वर्ग में नहीं हो सकता, यह केवल मेरे लोगों के मन में हो सकता है।''

''भाजी, क्या आप भी यही सोचते हैं कि पंजाबी नाटक सतही और अन्य भाषाओं के नाटकों की तुलना में उच्च गुणवत्ता का नहीं है?''

''सवाल यह है कि आप अपने किस नाटक की तुलना अन्य भाषाओं के नाटकों से कर रहे हैं? यदि आप अपनी क्लासिक कृतियों (जो कि वे हैं) की तुलना अन्य क्लासिक कृतियों से करेंगे, तो वे सतही लग सकती हैं। उनकी एक लंबी परंपरा है, लेकिन यदि आप अपनी भाषा में किसी ऐसे नाटक के बारे में बात करते हैं जो किसी अन्य भाषाओं से भिन्न है, जिसमें एक अलग, मौलिक अभिव्यक्ति है, तो यह सतही नहीं लगेगा। मैं गर्व से कह सकता हूँ कि अन्य भाषाओं के महान नाटककार मेरे काम की प्रशंसा करते रहे हैं , क्योंकि उन्हें मेरे नाटकों का लहजा अलग लगा। राजनीतिक नाटक लिखना कोई बुरी बात नहीं है, यह एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। हम अपने आस-पास हो रहे राजनीतिक खेल, मैं खेल शब्द का प्रयोग करता हूँ। क्या हमें कलाकारों को चुप रहना चाहिए और कहना चाहिए कि हमें निष्पक्ष रहना चाहिए। जब तक वे विश्वासघात करते रहेंगे, हमें तटस्थ रहना चाहिए। तो फिर उन्होंने ये कलम क्यों उठाई, वे मंच पर क्यों गए? यह शून्य दर्शन है, एक बड़ा शून्य। (भाजी पूरी गति से हवा में शून्य को बना देते हैं।)

''भाजी, इस दुनिया से चले जाने के बाद आपको सबसे ज्यादा किसकी याद आती है? बेटियां, पत्नी, कलाकार या कोई और?

(इस बार भाजी बिना किसी हिचकिचाहट के सिर झुकाकर प्यार से जवाब देते हैं।) जिंदगी के लिए तरसते रहे, जिंदगी से जूझते, माट्टी से लबालब चेहरे, टपकती नाक और बिखरे हुए बालों वाले यह बच्चे। गुरशरण सिंह उन बच्चों के सामने शर्मिंदा हैं कि मैं उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए कुछ खास नहीं कर सका। (भाजी जी गमगीन हो गए), उन बच्चों को भी 'वह' कहेंगे कि बोलो, **''सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा।''** उन्हें भी देशभक्ति का पाठ पढ़ाया जाएगा, लेकिन देश ने उनके लिए क्या किया है? मैंने हमेशा उनकी आंखों में यह सवाल घूमते देखा है कि हमें किस अपराध की सजा दी जा रही है? हर साल लाल किले से गूंजने वाले भाषण में हमारा जिक्र होता है, लेकिन चिंता क्यों नहीं? हर नेता को हमारे घर आकर अपनी तस्वीर खिंचवाना तो याद रहता है , तो हमारे जीवन के सुधार के लिए क्यों कुछ याद नहीं रखता? जब मैं घर से कला भवन की ओर जाता हूँ, तो मैं चौराहों पर बैठे नंगे बच्चों को देखता हूँ, फिर मैं बड़ी इमारतों, होटलों और भवनों को देखता हूँ, जो सब दिवाली की तरह जगमगा रहे हैं। ऐसा अंतर, अन्याय की कोई सीमा नहीं है। इतनी बेशर्मी कि सब कुछ हड़प लिया जाए और गरीबों को मरने के लिए छोड़ दिया। फिर हमें रंगमंच से इस देश का, इस लोकतंत्र का गुणगान करने के लिए कहा जाए। क्या यह बेशर्मी की बात नहीं है?

अंततः मैं बैठकर सोचता हूँ कि जो महान व्यक्ति मेरे सामने बैठा है (कल्पना में)मैं इस व्यक्ति को बाबा कहूँ, दरवेश कहूँ, युगपुरुष कहूँ, कुछ भी कहूँ, शब्द निरर्थक ही रहेंगे। इनको तो अपने आप की परवाह नहीं है, इनके लिए तो बस लोग ही सब कुछ हैं। अभी तक कोई भी कलाकार इस मुकाम तक नहीं पहुँच पाया। अब आगे क्या पूछूं, मन भरा हुआ है।

98880-11096

संघर्ष से सफलता तक - डॉ. कमला सोहनी

- कमलप्रीत

हम अक्सर सोचते हैं कि महान विद्वान और वैज्ञानिक सिर्फ़ किताबों में या दूसरे देशों में ही मिलते हैं। लेकिन भारत में भी कुछ ऐसी शख्सियतें हैं जिन्होंने अपने ज्ञान और संघर्ष से न सिर्फ देश का नाम पूरी दुनिया के सामने रोशन किया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए कामयाबी के वो दरवाज़े भी खोले, जिन पर समाज की पुरुषवादी सोच ने बड़े-बड़े ताले लगा रखे थे। इन्हीं में से एक थीं डॉ. कमला सोहनी - भारत की पहली महिला पीएचडी वैज्ञानिक, जिन्होंने ऐसी सोच के पिंजरे तोड़कर विज्ञान के क्षेत्र में ऊँची उड़ान भरी।

डॉ. कमला सोहनी की कहानी हमें दिखाती है कि ''जहाँ चाह होती है, वहाँ राह भी निकल आती है।'' बस ज़रूरत है अपनी क्षमता को पहचानने की। डॉ. कमला सोहनी का जन्म 20वीं सदी के शुरुआती दौर में हुआ था। उस ज़माने में लोग कहते थे, ''लड़कियों का पढ़ाई-लिखाई में क्या काम?'' लेकिन कमला जी ने साबित कर दिया कि शिक्षा 'पुरुषों' की निजी जागीर नहीं है - यह सबका अधिकार है। 18 जून 1911 को इंदौर में जन्मीं कमला, एक वैज्ञानिक परिवार की बेटी थीं, जहाँ उनके पिता नारायण राव और चाचा माधवराव रसायन वैज्ञानिक थे - जिनकी शिक्षा IISc बैंगलोर से हुई थी।कमला बचपन से ही तेज़ दिमाग़ की होने के कारण, उन्होंने स्कूल में बेहतरीन अंक हासिल किए। 1933 में, उन्होंने बॉम्बे विश्वविद्यालय से रसायन विज्ञान में बी.एससी. और एम.एससी. की डिग्री हासिल की।

उस ज़माने में महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा हासिल करना बेहद मुश्किल था - कॉलेजों में छात्राओं की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती थी। ये वो दौर था जब आम धारणा थी कि ''लड़कियाँ विज्ञान की पढाई नहीं कर सकतीं'', विज्ञान के रास्ते लड़कियों के लिए खुले नहीं थे। ऐसे समय में, कमला ने IISc में फेलोशिप के लिए आवेदन किया। लेकिन पढ़ाई में अव्वल आने के बावजूद, सिर्फ़ इसलिए उनका आवेदन खारिज कर दिया गया क्योंकि वो एक लड़की थीं। आपको जानकर हैरानी होगी कि ये फ़ैसला किसी और ने नहीं, बल्कि उस समय के नोबेल पुरस्कार विजेता, प्रख्यात वैज्ञानिक डॉ. सर सी.वी. रमन ने लिया था। सी.वी. रमन ने कहा था, ''Not for girls, मेरे संस्थान में महिलाओं के लिए कोई जगह नहीं है'' और उनका आवेदन खारिज कर दिया था।

लेकिन कमला ने हार नहीं मानी। उन्होंने कहा, ''मुझे अपनी मंज़िल तक पहुँचने में कोई रोक नहीं सकता।'' उन्होंने अपनी माँ के साथ मिलकर IISC के गेट पर सत्याग्रह किया और आखिरकार इस शर्त पर प्रोविजनल एडमिशन पाया कि वह एक साल तक सिर्फ़ रात में ही पढाई का काम करेंगी, दूसरे छात्रों को परेशान नहीं करेंगी और लैब के काम में किसी भी तरह की बाधा नहीं डालेंगी। इसके बाद अगर उनका काम संतोषजनक रहा, तो ही उन्हें आगे एडमिशन मिलेगा।

लेकिन कमला ने हार नहीं मानी और इन चुनौतियों को मुस्कुराते हुए स्वीकार करते हुए अपनी पढ़ाई जारी रखी। इस संघर्ष में, उस समय उनके मार्गदर्शक रहे डॉ. एम. श्रीनिवास्य ने उनका पूरा साथ दिया और कहा, ''विज्ञान को कोई फर्क पड़ता कि आप लड़का हैं या लड़की, मायने तो सिर्फ़ आपके परिणामों की सटीकता से है।'' उनकी कड़ी मेहनत और लगन ने डॉ. सी. वी. रमन को अपने फ़ैसले पर पुनर्विचार करने पर मजबूर कर दिया और अगले ही साल से उन्होंने अपने संस्थान में लड़कियों के लिए भी दरवाज़े खोल दिए। उन्होंने 1936 में एमएससी की पढ़ाई पूरी की। सुबह 5 बजे से रात 10 बजे तक अपनी लैब में काम करते हुए, उन्होंने दूध और दालों में मौजूद प्रोटीन पर शोध किया, जो भारत में पहली बार किया गया था।

फिर 1937 में उन्हें कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से फ़ेलोशिप मिली, जहाँ उन्होंने मात्र 14 महीनों में अपनी पीएचडी पूरी की और पीएचडी प्राप्त करने वाली भारत की पहली महिला वैज्ञानिक बनीं। उनका शोध थीसिस 40 पृष्ठों का था, लेकिन इतना प्रभावशाली था कि उन्होंने आलू में साइटोक्रोम सी एंजाइम की खोज की, जो जीवों में ऊर्जा उत्पन्न करने में मदद करता है। कमला ने कहा था, ''सफलता पर सिर्फ़ उनका हक है जो अपना काम दिल से करतें है।''

1939 में भारत लौटकर, उन्होंने लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज में जैव रसायन विभाग की अध्यक्ष और कन्नूर स्थित पोषण अनुसंधान प्रयोगशाला में सहायक निदेशक का पद संभाला। 1947 में, वे मुंबई आईं और रॉयल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस में प्रोफेसर और बाद में निदेशक बनीं, जहाँ उन्हें फिर से महिला होने का खामियाजा भुगतना पड़ा, जिसके कारण चार साल के संघर्ष के बाद उन्हें यह पद मिला। लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी।

उनकी सबसे बड़ी खोज 'Neera' थी – पाम नैकटर, जिसमें विटामिन ए, सी और आयरन होता है। इस खोज ने आदिवासी बच्चों और गर्भवती महिलाओं के पोषण में सुधार आया, जिसके लिए उन्हें 1970 में राष्ट्रपति पुरस्कार मिला। 1980 के दशक में, उन्होंने खाद्य पदार्थों में मिलावट के खिलाफ भारतीय उपभोक्ता मार्गदर्शन सोसायटी का नेतृत्व किया और लोगों को सुरक्षित भोजन के बारे में जागरूक किया।

दुख की बात यह है कि कभी-कभी भारत में, खासकर लड़कियों में, उनकी महानता और उनके संघर्ष को भुला दिया जाता है। लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनकी सराहना हुई है। 2023 में, गूगल ने उनकी 112वीं जयंती पर उनकी याद में एक खास डूडल बनाया, जिसके साथ पूरी दुनिया ने उन्हें सम्मानित किया।

डॉ. कमला सोहनी की कहानी दर्शाती है कि साहस और संघर्ष से कोई भी कठिनाई उन्हें रोक नहीं सकती। वह न केवल भारत की पहली महिला पीएचडी थी, बल्कि वह एक प्रेरणा है जो आज भी हमारे लिए प्रकाश की किरण है। आइए हम उनकी प्रेरणा से सीखें, कभी हार न मानें और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हमेशा आगे बढ़ते रहें।

व्याख्याता भौतिकी आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक
विद्यालय कोट भाई (मुक्तसर)

तर्क बनाम धर्म

○ हिमांशु कुमार ○

यदि एक 'ईश्वर' के भक्त और एक नास्तिक को गहरी नदी में फेंक दिया जाए तो केवल वही बचेगा जो तैरना जानता है। यदि इन दोनों में से एक हिन्दू है और एक मुसलमान, तो केवल वही जीवित बचेगा जो तैर सकता है। यदि कोई आपसे कह रहा है कि केवल अल्लाह या ईश्वर पर विश्वास करने से ही आप बच जायेंगे या आपको तथाकथित स्वर्ग मिलेगा, तो वे आपको मूर्ख बना रहे हैं।

मैं भी पहले प्रार्थना करता था, उस समय मैं बहुत डरा हुआ और अपने दिमाग़ में अंधेरा महसूस करता था। जब मैंने विज्ञान और तर्क के आधार पर सोचना शुरू किया, तो मेरे मन से ईश्वर का भय गायब होने लगा, मेरे सभी प्रश्नों के उत्तर मिलने लगे और मेरे मन का अंधकार दूर होने लगा। अब मैं बहुत खुश हूँ और स्थिर महसूस कर रहा हूं।

अब मैं किसी भी धार्मिक व्यक्ति से नफरत नहीं करता, न ही मैं जाति के आधार पर किसी को नीचा/उच्चा मानता हूँ। अब मैं सोचने लगा हूँ कि सभी लोग एक जैसे हैं। अब मुझे उन लोगों को देखकर बहुत दुख होता है जो देश की सीमाओं के भीतर लड़ रहे हैं, पड़ोसी देशों के प्रति घृणा से भरे हुए हैं, अन्य धर्मों को गाली दे रहे हैं, और जातिवाद से भरे हुए हैं। मुझे महसूस होता है कि ये सभी बेचारे बीमार लोग हैं।

अब जब मैं विज्ञान और तर्क के आधार पर सोचता हूँ तो मुझे लगता है कि पेड़, नदियाँ, जानवर, पहाड़ और मैं सभी एक हैं। मैं अपने आस-पास की दुनिया और प्रकृति के प्रति गहरा प्रेम महसूस करता हूँ। सत्य को जानना ही मनुष्य का एकमात्र धर्म है। सत्य जानने का एकमात्र तरीका विज्ञान और तर्क है। जो लोग यह मानते हैं कि जिस धर्म या विश्वास में वे पैदा हुए हैं, वह सबसे अच्छा और सच्चा है, वे सबसे अज्ञानी लोग हैं।

ए.आई. से डरने की नहीं, बल्कि इसको सीखने की जरूरत

–राजिंदर पाल सिंह बराड़ (डॉ.)

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लिए कई शब्दों का प्रयोग किया जाता है जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीनी बुद्धिमत्ता, कंप्यूटर बुद्धिमत्ता और मस्नूई बुद्धिमत्ता आदि। इनमें से सबसे उपयुक्त शब्द मशीनी बुद्धिमत्ता है क्योंकि यह मानवी बुद्धिमत्ता का अनुकरण या विकल्प है, लेकिन यह मानव शरीर के मस्तिष्क द्वारा निर्मित नहीं होती बल्कि कंप्यूटर मशीनों (जो मनुष्यों की तरह समझ सके, सीख सके , सोच सके और समस्याओं का समाधान कर सके) द्वारा निर्मित होती है। इस प्रकार, यह समझा जा सकता है कि यह बुद्धिमत्ता मानव शरीर की इंद्रियों और मस्तिष्क की मानसिक प्रक्रियाओं के बजाय मशीनों द्वारा निर्मित होती है, लेकिन यह समझना ज़रूरी है कि ये मशीनें भी साधारण मशीनें नहीं बल्कि कंप्यूटर और उनका इंटरनेट हैं जिसके माध्यम से वे दुनिया भर के अधिकांश, यदि सभी नहीं, कंप्यूटरों से जुड़ी होती हैं। तो एक तरह से, मशीनी बुद्धिमत्ता मानवी बुद्धिमत्ता का अनुकरण या विकल्प है जो कंप्यूटर मशीनों के माध्यम से मनुष्यों की तरह समझने, सीखने, सोचने और समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करती है। इसमें समस्या का समाधान करने, निर्देशानुसार तर्क करने और निर्णय लेने के लिए प्राप्त आंकड़ों को समझने और उनसे सीखने की क्षमता होती है, लेकिन यह स्पष्ट करना ज़रूरी है कि अंतत: मशीनों की यह बुद्धिमत्ता भी मूल रूप से मनुष्यों द्वारा पहले चरण में अर्जित बुद्धिमत्ता पर ही निर्भर करती है।

जब इंद्रियों के माध्यम से एकत्रित मानव बुद्धि का डेटा किसी भाषा, शब्द या अक्षर या चित्र का रूप ले लेता है और किसी न किसी के द्वारा कंप्यूटर में डाला जाता है या इंटरनेट के माध्यम से साझा किया जाता है, तो कंप्यूटर उस ज्ञान को अपने आधार डेटा के रूप में उपयोग करता है। एक तरह से, किसी व्यक्ति की बुद्धि उसके अनुभवों की यादों या उसके द्वारा सुनी गई ध्वनियों, उसके द्वारा देखे गए दृश्यों या पुस्तकों आदि के माध्यम से प्राप्त ज्ञान तक ही सीमित होती है और जब उसे कोई निष्कर्ष निकालना होता है, तो वह उस ज्ञान को अपने डेटा के रूप में उपयोग करता है, लेकिन मशीनी बुद्धि के पास बहुत सारा ज्ञान है जो कई कंप्यूटरों के पास उपलब्ध है, जो पहले से ही डिजिटल रूप में आ चुका है। इस कारण, यह भी कहा जा सकता है कि वास्तव में, मशीनी बुद्धि एक प्रकार से समस्त मानवता का मस्तिष्क या यूँ कहें कि समस्त मानवता की बुद्धि है।

यह भी स्पष्ट करना उचित होगा कि मशीन मानव मस्तिष्क की तुलना में कहीं अधिक तेज़ी से पढ़ और समझ सकती है, अर्थात गणनाएँ कर सकती है और बिना किसी पूर्वधारणा के निष्कर्ष निकाल सकती है, यही कारण है कि यह तुरंत उत्तर भी दे सकती है और त्रुटि की गुंजाइश भी बहुत कम होती है।

एक प्रकार से, मानव सभ्यता में जो काम कभी पहिये, हल, भाप इंजन और बिजली ने किया था, उसी प्रकार कृत्रिम बुद्धि से एक और बड़ी छलांग लगने वाली है। इसके अनेक लाभ हैं क्योंकि यह मनुष्य की शारीरिक नहीं, बल्कि बौद्धिक क्षमता को बढ़ाती है। इससे बीमारियों की सही पहचान हो सकती है, सही दवाओं की खोज हो सकती है, यह शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ला सकती है। आने वाले समय में, कई कार्य स्वचालित हो जाएँगे और सबसे महत्वपूर्ण बात, यह उन कार्यों की जगह ले लेगी जो मनुष्य के लिए करना कठिन है।

यह मानवीय त्रुटियों को कम करेगी और सभी कार्य शीघ्रता से करेगी, जिससे मानव जीवन आसान हो जाएगा। यह बिना थके काम कर सकेगी।

लेकिन जहाँ इसके फायदे हैं, वहीं इसके नुकसान भी हैं। सबसे बड़ा नुकसान ये है कि ये निजता में दखल दे सकता है, यानी डेटा प्राइवेसी का मसला, दूसरी बड़ी बात ये है कि इसे जो सिखाया जाएगा, वो करेगा भी, इसलिए इसे बनाने वाले व्यक्ति या व्यक्तियों के हिसाब से ये पक्षपाती भी हो सकता है, तीसरी बात ये है कि नैतिकता के लिहाज से इसे यांत्रिक फैसले लेने पड़ते हैं, जिसमें मानवीय भावनाओं को नकार दिया जाता है और आखिरी बात, जिसका सबसे ज़्यादा प्रचार होता है, वो ये कि इससे लोगों की नौकरियाँ भी जा सकती हैं। दरअसल, सारी बातें सच हैं और इसने वाकई नुकसान पहुँचाना शुरू कर दिया है। आखिरकार, जैसा कि फ़िल्मों में दिखाया जाता है, एक दिन आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस पूरी मानवता पर कब्ज़ा कर लेगी और उसे अपने तरीक़े से चलाने लगेगी। यह एक कल्पना है, मुमकिन नहीं, लेकिन यह सच है कि अगर यह ग़लत लोगों के नियंत्रण में आ जाए, तो यह न सिर्फ़ दूसरे लोगों को नुकसान पहुँचा सकती है, बल्कि उनका शोषण और उन पर नियंत्रण भी कर सकती है।

लेकिन यहाँ एक बात साझा करना ज़रूरी होगा कि बहुत से लोग आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस के नुकसान के डर से इससे बचने की बात करते हैं। मैं समझता हूँ कि इससे बचना नामुमकिन है और वैसे भी इससे बचने की ज़रूरत नहीं है, बस इसे समझने और मानवता के हित में इसका इस्तेमाल करने की ज़रूरत है। आज अगर हम असमानता को रोकना चाहते हैं, न्याय चाहते हैं, शांति और आज़ादी चाहते हैं, तो हमें डिजिटल डिवाइड के ख़िलाफ़ लड़ना होगा। धन दौलत के दूसरे साधनों की तरह, डिजिटल संसाधनों के लिए भी लड़ना होगा क्योंकि यह तकनीक ही दूसरे साधनों पर कब्ज़ा करने का ज़रिया बन जाएगी।

इस लड़ाई का रास्ता है तकनीक को जानना, उसके संसाधनों को साझा करने पर ज़ोर देना। तो इससे डरें नहीं, सीखें, संसाधन साझा करें और सभी को संसाधन साझाकरण अभियान का हिस्सा बनाएँ।

ये तो बस शुरुआत थी। आओ इसकी व्याख्या करें। सब से पहली समस्या यह है कि मशीन इंटेलिजेंस को केवल वही सीखना होता है जो उसे सिखाया जाएगा। सीखने का आधार किसी विशेष कंप्यूटर पर संग्रहीत डेटा, सूचना, ज्ञान या उस कंप्यूटर से जुड़े इंटरनेट पर उपलब्ध ज्ञान से होता है। वह उस ज्ञान का उपयोग नहीं कर सकता जो इंटरनेट पर उपलब्ध नहीं है। इसीलिए सुरजीत पातर जी कहते थे, "**मशीन इंटेलिजेंस मानवता की नवजात संतान है। जिस तरह एक बच्चे को भाषा सिखानी होती है, ज्ञान देना होता है, उसी तरह मशीन इंटेलिजेंस को भी सिखाना होता है, ज्ञान देना होता है। अगर सही ज्ञान नहीं दिया गया, तो वह बिगड़ जाएगी।** कुछ ज्ञान इंटरनेट पर इसलिए नहीं हो सकता क्योंकि किसी ने उसे बेकार या अप्रासंगिक समझकर इंटरनेट पर नहीं डाला है। उदाहरण के लिए, कई आदिवासियों के पास कीमती जानकारी हो सकती है, लेकिन अगर वह भाषा में नहीं है, लिखित में नहीं है, या वीडियो के रूप में या शब्दों के रूप में इंटरनेट पर उपलब्ध नहीं है, तो वह ज्ञान इंटरनेट पर उपलब्ध नहीं है। यानी जो ज्ञान अभी तक डिजिटल लेखन में नहीं आया है या लिखित रूप में तो आ गया है लेकिन इंटरनेट पर नहीं डाला गया है, तो वह ज्ञान उसके नियंत्रण में नहीं आता। एक और समस्या यह भी हो सकती है कि किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह, यानी कंपनियों के पास ज्ञान तो है, लेकिन सत्ता या लाभ के लालच में वे उसे आम जनता के साथ साझा नहीं करते, उन्होंने उसे इंटरनेट पर साझा नहीं किया या अगर साझा किया है, तो अपने सीमित दायरे में ही साझा किया है, यानी अगर वह ओपन सोर्स में नहीं है, तो उसका भी उपयोग कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा नहीं किया जा सकता। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को केवल उसी ज्ञान का उपयोग करना है जो इंटरनेट पर उपलब्ध है। जो ज्ञान इंटरनेट पर उपलब्ध नहीं है, वह उसकी पहुँच से बाहर रहता है। यह इसलिए भी बाहर रह सकता है क्योंकि इंटरनेट उपयोगकर्ता इसे अनावश्यक मानते हैं या इसलिए कि वे इसे ज़्यादा ज़रूरी समझते हैं और इसे इंटरनेट पर अपलोड नहीं करते। दोनों ही स्थितियों में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सीमाएँ निर्धारित हैं।

मैंने यहाँ केवल संकेत दिया है, लेकिन इसका विस्तार कहीं अधिक हो सकता है। एक स्थिति यह है कि हमारा बहुत सारा ज्ञान ऐसा हो सकता है जो आज के इंटरनेट उपयोगकर्ताओं या बुद्धिजीवियों के लिए उपयुक्त न हो। एक तरह से यह कहा जा सकता है कि उस पीढ़ी के मरने के साथ ही वह ज्ञान भी मर जाएगा जिसके पास वह ज्ञान है। दूसरा यह कि जो लोग शक्तिशाली हैं और ज्ञान से पैसा कमाना चाहते हैं या दूसरों को नियंत्रित करना चाहते हैं, वे बहुत सारे ज्ञान को इंटरनेट से दूर

रखेंगे। हमें इन दोनों स्थितियों को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए।

इसलिए अगर आप चाहते हैं कि ऐसा ज्ञान लोगों की चेतना का हिस्सा बने, अगर वह इंटरनेट पर नहीं है, तो उसे इंटरनेट पर ज़रूर डालें। सबसे पहले, अपनी भाषा, अपने क्षेत्र, अपने साहित्य, अपनी संस्कृति का ज्ञान लिखित रूप में, ऑडियो रूप में, दृश्य रूप में या प्रतीकात्मक रूप में अपलोड करें।

उदाहरण के लिए, अगर आप चाहते हैं कि लोग क्रांतिकारी कवि करनैल बागी के बारे में जानें, तो उनके बारे में जानकारी इंटरनेट पर डालें, वरना आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस समझ जाएगा कि साहित्य के इतिहास में करनैल बागी नाम का कोई व्यक्ति पैदा ही नहीं हुआ। दूसरी बात, उस ज्ञान को आज़ाद करना बेहद ज़रूरी है जिस पर अमीरों, यानी कॉर्पोरेट्स, का शिकंजा कसा हुआ है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि कैंसर की कोई नई दवा आ जाती है, लेकिन उस पर शोध करने वाले कभी नहीं चाहेंगे कि आम जनता बिना पैसे लिए उसका फॉर्मूला जाने। इसलिए, यह ज़रूरी है कि ऐसा ज्ञान जनता के साथ साझा किया जाए, इसके लिए ओपन सोर्स का एक क़ानूनी स्वरूप मौजूद है, लेकिन हम जानते हैं कि ओपन सोर्स पर बहुत कम ज्ञान उपलब्ध है, बहुत सारा ज्ञान कंपनियों द्वारा अपने फ़ायदे के लिए नियंत्रित किया जाता है, उस डेटा तक आम जनता की पहुँच को रोकने के लिए वे इसे चोरी कहते हैं और चोरी रोकने के लिए उन्होंने कॉपीराइट या बौद्धिक संपदा अधिकार जैसे क़ानून बनाए हैं। उस ज्ञान को आम जनता के साथ साझा करने के लिए, केवल वे इंटरनेट-प्रेमी बौद्धिक कार्यकर्ता ही उपयोगी होंगे जो इन कंपनियों के लिए काम करते हैं, जैसे कभी मज़दूरों का मुख्य हथियार हड़ताल करना था, नए दौर में मज़दूरों का हथियार इस जानकारी को आम जनता के साथ साझा करना होगा। कुछ लोगों को यह ग़लत लग सकता है, लेकिन समाजवाद के अनुसार, अगर हम अब तक धन बाँटने की बात करते हैं, तो हमें ज्ञान बाँटने की भी बात करनी चाहिए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सत्य के बीच के संबंध को समझने की भी ज़रूरत है। आज सत्य मरने की कगार पर है। जो सत्य स्वीकार किया जाएगा, वह इंटरनेट पर मौजूद है। जो इंटरनेट पर मौजूद नहीं है, ज़ाहिर है, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए मौजूद नहीं है। यदि कोई व्यक्ति, घटना, प्रसंग, अर्थ, विचार प्रकृति और सामाजिक यथार्थ में विद्यमान है, यदि वह इंटरनेट पर मौजूद नहीं है, तो उसे स्वीकार या अनुमोदित नहीं किया जाएगा। सत्य बहुत अकेला और घबराया हुआ है। शायद इतिहास में उसके साथ ऐसा कभी नहीं हुआ।

मशीन इंटेलिजेंस की एक और समस्या झूठी जानकारी है। मान लीजिए कि इंटरनेट पर लाखों जानकारियाँ कहती हैं कि पीपल का पेड़ रात में ऑक्सीजन देता है, लेकिन एक भी इसका खंडन नहीं करती, तो यह बात सत्य के रूप में स्थापित हो जाएगी। इसी तरह, यदि आप एक तरह की पोस्ट पढ़ते या देखते हैं, तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आपको उसी तरह की सामग्री प्रस्तुत करेगा, जो आपको गुमराह कर सकती है कि शायद यही अंतिम सत्य है जबकि यह केवल आपका सत्य है। पहली नज़र में ऐसा लगता है कि शायद यह लोकतांत्रिक है, लेकिन वास्तव में यह लोकतांत्रिक नहीं बल्कि भीड़तंत्र है। भीड़तंत्र और लोकतंत्र में अंतर करने की आवश्यकता है, और जब भीड़तंत्र को षड्यंत्र के साथ मिल जाए तो यह बहुत गंभीर हो जाता है। अगर हम इस समय भारतीय मीडिया के कामों पर गौर करें, तो यह लोकतांत्रिक नहीं, बल्कि भीड़तंत्र है और इसके ज़रिए जो कुछ भी परोसा जा रहा है।जब यह इंटरनेट का हिस्सा बन जाएगा, तो ऐसे समय में जब कोई व्यक्ति सत्य की तलाश में किसी घटना या शब्द के बारे में पूछेगा, तो उसे वही जवाब मिलेगा जो बहुमत का होता है, क्योंकि कंप्यूटर या मशीन इंटेलिजेंस का एल्गोरिदम भी वही अनुमान लगाएगा।

इसलिए मानवता के अच्छे भविष्य के लिए, डिजिटल साक्षरता अभियान उसी तरह चलाना ज़रूरी है जैसे कभी साक्षरता अभियान चलाया जाता था। इससे डरने की नहीं, बल्कि इसे सीखने की ज़रूरत है, तभी इसके बुरे प्रभावों से बचा जा सकता है और इसका इस्तेमाल जीवन को आसान बनाने में किया जा सकता है।

मो: 98150 50617

> AI हमसे अलग नहीं है, बल्कि यह हमारे द्वारा ही बनाया गया है, और इसका दुरुपयोग हमारे द्वारा ही किए गए डेटा और एल्गोरिदम पर निर्भर करता है। वे इस बात पर जोर देते हैं कि AI के आउटपुट में भी पूर्वाग्रह हो सकता है यदि उसके डेटा में पूर्वाग्रह हो।
>
> **-आचार्य प्रशांत**

रेबीज़ से कैसे बचें ?

-डॉ. नवमीत

एक खबर ने मीडिया और अन्य जनमानस में बड़ी व्यापकता बनाई जिसमें कबड्डी के एक राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी ने पानी में डूबते हुए एक पिल्ले को बचाया था। इस दौरान पिल्ले का दाँत उस खिलाड़ी की ऊँगली में लग गया। छोटी सी खरोंच थी तो जैसा कि सब करते हैं, उसने उसे नज़रंदाज़ कर दिया। कुछ दिन बाद उसे चोट की जगह सनसनाहट महसूस होने लगी। फिर सुन्नपन और फिर गले में रुकावट। पानी या कोई लिक्विड पीने पर गला पूरी तरह से चोक होने लगा और फिर लकवा आने लगा। फिर उसकी मौत हो गयी। यह क्लासिकल रेबीज़ का केस था। रेबीज़ का नाम आपने सुना ही होगा। यह गर्म ख़ून वाले जानवरों के काटने से होने वाली एक बीमारी है जिसके होने पर मौत की संभावना लगभग 100 प्रतिशत है। भारत में हर साल 1 करोड़ 70 लाख लोगों को कुत्ते, बिल्ली, गीदड़, लोमड़ी, भेड़िया, चमगादड़ वगैरह के द्वारा काटा जाता है और तक़रीबन 18 से 20 हज़ार लोगों को रेबीज़ की बीमारी हो जाने से उनकी मौत हो जाती है। इसमें सबसे ज्यादा अफ़सोसनाक बात यह है कि इन सभी मौतों को रोका जा सकता है लेकिन ये रुक नहीं पा रही हैं। इससे कैसे बचा जा सकता है? इसके लिये सबसे पहले हम रेबीज़ के बारे में थोड़ी सी बुनियादी जानकारी हासिल करेंगे। सबसे पहले तो यही कि रेबीज़ क्या है? यह एक वायरल इन्फेक्शन की बीमारी है जो Lyssavirus नाम के एक वायरस से होती है। यह वायरस इंफेक्टेड जानवरों की राल में पाया जाता है। इन जानवरों, ख़ास तौर पर कुत्ते के काटने या खरोंच मारने पर यह वायरस उसकी राल के ज़रिए इंसान के बदन में दाखिल हो जाता है। अब इसके बाद अगर वक्त रहते इसका मुकम्मल इलाज न किया जाये तो यह शर्तिया मौत की वजह बनता है। भारत में 95 प्रतिशत केस इंफेक्टेड कुत्ते के काटने से होते हैं। इस इन्फेक्शन की ख़ासियत होती है कि यह काटे जाने के बाद जब हमारे बदन में दाखिल होता है तो यह हमारे खून में नहीं जाता बल्कि नसों के ज़रिए से मर्कजी आसाबी निज़ाम (central nervous system) यानी दिमाग तक पहुँचता है। काटे गये हिस्से से CNS तक इसके पहुँचने की रफ़्तार बहुत ही कम होती है और टाँग या हाथ पर काटने के बाद दिमाग़ तक पहुँचने में इसे तक़रीबन 20 से ज़्यादा दिन लग जाते हैं। हाँ अगर जिसे काटा है वह बच्चा है या फिर चेहरे, सिर या गर्दन पर काटा है तो वायरस 4 से 7 दिन के अंदर भी दिमाग़ में पहुँच सकता है। आम तौर पर काटने के बाद दिमाग़ तक पहुँचकर बीमारी होने में 1 से 3 महीने लगते हैं। कुछ नादिर केसों में 1 साल भी लग जाता है। यह निर्भर करता है कि कहाँ पर काटा है (चेहरे या हाथ-पैर पर), कितना बड़ा ज़ख़्म है, कितना वायरस अंदर गया है और मरीज़ की बीमारी से लड़ने की ताक़त पर। लेकिन एक बार यह दिमाग़ तक पहुँच गया तो इसके सिम्पटम शुरू हो जाते हैं। फिर इसका कोई इलाज नहीं है। तो इसके सिम्पटम क्या हैं? सबसे पहले तो शुरुआती सिम्पटम आएंगे। बुखार, थकान, काटे गयी जगह पर जलन, सनसनाहट, खुजली वगैरह। फिर इसकी ख़तरनाक शक्ल Furious रूप आयेगा। जिसमें पानी से डर लगना, हवा से डर लगना, रोशनी से डर लगना, घबराहट, भ्रम, चिल्लाना, बहुत ज़्यादा राल बनना वगैरह होने लगेंगे। फिर नसों में कमजोरी और उसके बाद लकवा आना शुरू हो जायेगा। आख़िर में मौत। इलाज क्या है? बीमारी होने के बाद कोई इलाज नहीं है। इलाज आम तौर पर सिम्पटम की बुनियाद पर किया जाता है। तो इससे

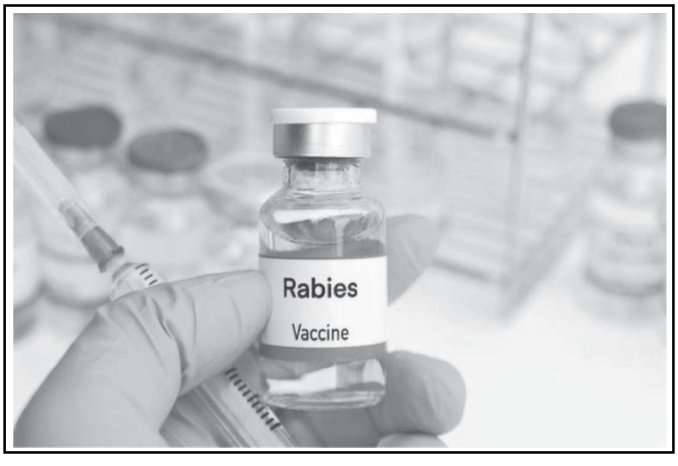

बचाव कैसे करें? यह सबसे जरूरी बात है जो हम सबको पता होनी चाहिये। अगर आपको कुत्ते या किसी जानवर ने काट लिया है तो सबसे पहले आप अपने ज़ख्म को नल चला कर पानी और साबुन के साथ लगातार 15 से 20 मिनट तक धोयें। 15 मिनट से कम नहीं। इससे ज्यादातर वायरस धुलकर निकल जायेगा। यह स्टेप बहुत अहम है। इसको बिलकुल भी नज़रंदाज़ न करें। धोकर इस पर कोई एंटीसेप्टिक जैसे povidone iodine लगाएँ। घाव पर पट्टी बिलकुल भी न करें। इसे खुला रखें। अगर बहुत बड़ा घाव है तो डॉक्टर ढीले टाँके लगा सकता है। घाव को जलाएँ नहीं। घाव पर कोई घरेलु टोटके जैसे मिर्च आदि नही बाँधने चाहिये। यह नुकसान ही करेगा। टेटनस का टीका लगवाएं। डॉक्टर की सलाह से एंटीबायोटिक्स का कोर्स शुरू करें।

अब बारी आती है, वायरस के सम्पर्क में आने के बाद दिये जाने वाले बचाव की। किसी भी बीमारी के लिये वैक्सीन उस बीमारी से पहले दी जाती है ताकि हमारा जिस्म पहले ही उसके खिलाफ़ एंटीबॉडीज बना ले। लेकिन रेबीज में हम यह सम्पर्क के बाद देते हैं। क्यों? क्योंकि इस केस में सम्पर्क में आने के बाद बीमारी शुरू होने के बीच का समय काफ़ी लम्बा होता है। इस दौरान वैक्सीन का कोर्स करवाकर हम इस बीमारी के खतरे को लगभग 99.9 प्रतिशत तक खत्म कर सकते हैं। किसी भी जानवर के काटे के घाव के लिये WHO ने 3 E&posure Categories बनायी गयी हैं :

सबसे पहले

Category-I : इसमें आता है छूना या चाटना। चमड़ी बिलकुल दुरुस्त है,कोई खरोंच तक नहीं है। इसमें कुछ भी इलाज या बचाव करने की ज़रूरत नहीं है।

Category-II : इसमें खरोंच है लेकिन खून नहीं निकला है। इस केस में वैक्सीन का पूरा कोर्स जरूरी है।

Category-III : इसमें जानवर ने काटा है, खून निकला है, घाव बना है। इसमें वैक्सीन के पूरे कोर्स के साथ RIG (Rabies Immunoglobulin) घाव के अंदर लगवाना जरूरी है।

वैक्सीन कैसे देते हैं?

वैक्सीन या तो हम ढ्ढरूयानी कंधे की deltoid माँसपेशी में दे सकते हैं या फिर ID यानी खाल की परतों के बीच में दे सकते हैं। ध्यान रहे कि जिस तरीके से पहली डोज़ दी गयी है उसी तरीके से बाकी डोज़ भी दी जायें। मान लें आपने आज यानी 04.08.2025 को पहली डोज़ माँसपेशी में लगवायी है तो आपका शेड्यूल बनेगा :-

पहली डोज (04.08.2025)
दूसरी डोज (07.08.2025)
तीसरी डोज (11.08.2025)
चौथी डोज (18.08.2025)
पाँचवीं डोज (01.09.2025)

अगर आप ID यानी खाल की परतों के बीच लगवा रहे हैं तो आपका शेड्यूल बनेगा :-

पहली डोज (04.07.2025)
दूसरी डोज (07.07.2025)
तीसरी डोज (11.07.2025)
चौथी डोज (01.08.2025)

यानी ID शेड्यूल में आपको 4 ही डोज़ लेनी हैं। यह शेड्यूल Category-II और Category-III घावों के लिये है। साथ ही Category-III घावों के लिये RIG (Rabies Immunoglobulin) भी घाव के अंदर और उसके आसपास इंजेक्शन से दिया जाता है। अगर आप जानवर के काटे जाने के बाद ऊपर बताई गयी सभी स्टेप्स को फॉलो करते हुए डॉक्टर या स्वास्थ्य केन्द्र से वैक्सीन और RIG की सही और वक्त पर पूरी खुराक लेते हैं तो आपको रेबीज होने की ख़तरा तक़रीबन ज़ीरो हो जाता है। ध्यान रहे कि काटे जाने के बाद फ़ौरन घाव को चलते पानी में साबुन और पानी से धोकर जितना जल्दी हो सके वैक्सीन का कोर्स शुरू कर लें। अब बात कुछ गलतफ़हमियों पर कर लेते हैं। एक ग़लतफहमी यह है कि अगर खून नहीं निकला तो कोई खतरा नहीं है। जबकि सच्चायी यह है कि खरोंच से भी वायरस फैल सकता है अगर राल का राब्ता हुआ हो तो। पंजा मारने से रेबीज नहीं होगा लेकिन अगर दाँत लगा है तो चाहे खून आया है या नहीं, वैक्सीन जरूर लगवाएं। अगर आपको शक है कि पंजा लगा है या दाँत तो उसे दाँत मानकर वैक्सीन लगवाएं। अगर पंजे के साथ राल का सम्पर्क है तो भी वैक्सीन लगवाएँ। दूसरी ग़लतफहमी है कि पालतू कुत्ते के काटने से कुछ नहीं होता। सच्चाई यह है कि पालतू जानवर के काटने के बाद भी रेबीज

के केस मिले हैं। इसलिये हर काटने को सीरियस मानें। कुछ लोग सोचते हैं कि झाड़-फूँक और देसी इलाज से रेबीज ठीक हो जाएगा। जबकि सच्चाई यह है कि एक बार सिम्पटम आने पर कोई इलाज मुम्किन नहीं है। एक गलतफ़हमी है कि रेबीज वैक्सीन से कमजोरी होती है या सीरियस साइड इफेक्ट्स होते हैं। सच्चाई यह है एंटी रेबीज वैक्सीन पूरी तरह सुरक्षित है। मौत और ज़िन्दिगी के बीच में यह अकेली दीवार है। एक चीज का और ध्यान रखें। WHO और भारत की नेशनल रेबीज कन्ट्रोल गाइडलाइन्स के मुताबिक़ काटने या खरोंचने वाला जानवर अगर पालतू हो, वैक्सीनेटेड हो, 10 दिनों से ज़्यादा वक़्त तक ज़िन्दा हो और सेहतमंद दिखाई दे रहा हो तो उस हालत में वैक्सीन की जरूरत नहीं होती। लेकिन हमें इसके लिये 10 दिन इंतज़ार नहीं करना है। पहले दिन ही वैक्सीन और जरूरत हो तो RIG का कोर्स शुरू कर दें। जानवर जिन्दा और सेहतमंद है तो फिर आप बंद कर सकते हैं। रेबीज एक 100 प्रतिशत जानलेवा बीमारी है लेकिन इसे 100 प्रतिशत रोका भी जा सकता है। किसी भी प्रकार की लापरवाही ख़तरनाक हो सकती है। यह लेख जागरूकता के लिए है कुत्ते या किसी भी जानवर के काटने पर WHO या भारत की मेडिकल गाइडलाइंस का अनुशरण किया जाए।

धूपबत्ती

-अवतार न्यूजीलैंड

विदेश को जाना बहुत लोगों का सपना होता है और यह बहुत महंगा भी है। कई लोग इस उद्देश्य के लिए ऋण लेते हैं या अपनी जमीन गिरवी रख देते हैं। कुछ लोगों को तो अपनी ज़मीन भी बेचनी पड़ती है। विदेश भेजते समय परिवार के सभी सदस्य पूरी कोशिश करते हैं कि हमारी ओर से कोई कमी न रह जाए, क्योंकि जब परिवार का एक सदस्य विदेश जाता है तो परिवार के बाकी सदस्यों की उम्मीदें भी बंध जाती हैं कि इस परिवार की आर्थिक हालात सुधर जाएगी।

मेरा एक मित्र, पवन, मेरे साथ न्यूजीलैंड में कीवी फ्रूट का काम करता था। एक दिन मैंने उससे पूछा कि वो पहले भी अमेरिका गया था। वहाँ से तुम्हें निर्वासित क्यों किया गया?

पवन ने कहा कि जब हम पहले भारत से अमेरिका गये थे तो हम तीन लोग थे। उन दिनों मेरे परिवार के लोग एक संत के पास जाते थे। उन्होंने संत से कहा कि वे लड़के को अमेरिका भेजने वाले हैं। कृपया कुछ उपाय करें ताकि लड़के की यात्रा अच्छी रहे और वो वहाँ शीघ्र वहाँ पक्का हो जाए।

संत ने उन्हें धूपबत्ती दी और कहा कि वह लड़के से कहें कि जब वो अमेरिका पहुँचे तो उस धूपबत्ती को कहीं छिपाकर जला दे। इससे उसका आने वाला जीवन बेहतर और सुरक्षित हो जाएगा। जब वे तीनों अमेरिकी हवाई अड्डे पर पहुँचे, तो उनमें से दो ने इमीग्रेशन की प्रक्रिया पूरी कर ली और हवाई अड्डे से बाहर चले गए, जबकि पवन ने हवाई अड्डे पर एक कौने में छिपकर धूपबत्ती जलाना शुरू कर दिया। जिस स्थान पर वो धूपबत्ती जला रहा था, वहाँ स्मोक अलार्म और कैमरे लगे हुए थे, जिसके बारे में पवन को कोई जानकारी नहीं थी। धूपबत्ती के धुएं से अलार्म बज उठा और वहाँ मौजूद सुरक्षाकर्मियों ने पवन को पकड़ लिया और उसे इमीग्रेशन विभाग को सौंप दिया। पवन को तुरंत हवाई अड्डे से इमीग्रेशन विभाग ने शीघ्र ही डिपोर्ट कर दिया।

पवन के दो साथी, जिन्होंने न तो कोई भी ऐसा आडंबर किया था और न ही किसी संत-बाबा से कोई उपाय करवाया था वो अराम से हवाई अड्डे से बाहर निकल चुके थे। लेकिन संतों द्वारा सुझाए गए उपाय के कारण पवन को भारत निर्वासित कर दिया गया। उसने मुझे बताया कि उस दिन से उसने इन पाखंडी संतों, भिक्षुओं, बाबाओं पर विश्वास करना बंद कर दिया। उसने यह भी बताया कि जब से उसने साधु-संतों, तांत्रिकों पर विश्वास करना छोड़ दिया है, तब से उसकी परेशानियाँ कम हो गई हैं। न्यूजीलैंड पहुँचने पर उन्होंने कोई भी ऐसा तथाकथित उपाय नहीं करवाया और न ही किसी पाखंड में फंसा, लेकिन फिर भी उसका न्यूजीलैंड में जीवन बहुत अच्छे ढंग से चल रहा है।

भारत के अंतरिक्ष विज्ञान के शिल्पकार डॉ. विक्रम साराभाई

–जयेन्द्र जैन 'निप्पूभैया'

भारत की धरती ने अनगिनत विभूतियों को जन्म दिया है, लेकिन जिन कुछ व्यक्तियों ने देश की दिशा और दशा बदल दी, उनमें डॉ. विक्रम जैन साराभाई का नाम स्वर्णाक्षरों में दर्ज है। उनका जीवन और कार्य कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां से भरा रहा है। 12 अगस्त 1919 को अहमदाबाद (गुजरात) के एक समृद्ध और शिक्षित परिवार में जन्मे विक्रम ने बचपन से ही विज्ञान और गणित में अद्‌भत रुचि दिखाई। उच्च शिक्षा के लिए वे इंग्लैंड के कैम्बिज विश्वविद्यालय गए, जहां उन्होंने भौतिकी में स्नातकोत्तर और बाद में पीएचडी की उपाधि प्राप्तकी। डॉ. विक्रम जैन साराभाई भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक माने जाते हैं। 1960 के दशक में जब भारत विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में प्रारभिक दौर में था, तब उन्होंने एक ऐसा सपना देखा जो उस समय असंभव-सा लगता था- भारत का अपना अंतरिक्ष कार्यक्रम। उन्होंने यह विश्वास जगाया कि अंतरिक्ष तकनीक केवल विकसित देशों के लिए नहीं, बल्कि विकासशील राष्ट्रों के लिए भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने भारत सरकार को अंतरिक्ष कार्यक्रम के महत्व के बारे में समझाया और इसी के परिणाम स्वरुप 1962 में भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति (ICOSPAR) का गठन हुआ, 15 अगस्त 1969 को ICOSPAR का नाम बदल कर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) बनाया गया

डॉ. साराभाई ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना कर देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में पहला कदम रखा। उनकी दूरदृष्टि का ही परिणाम है कि आज भारत विश्व के अग्रणी अंतरिक्ष राष्ट्रों में शुमार है। उनके नेतृत्व में भारत ने पहले उपग्रह 'आर्यभट्ट' के लिए आधारभूत ढांचा तैयार किया। वे चाहते थे कि उपग्रह तकनीक का उपयोग ग्रामीण विकास, शिक्षा, मौसम पूर्वानुमान, कृषि सुधार और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में किया जाए। उनका मानना था- 'हमारे लिए अंतरिक्ष अनुसंधान विलासिता नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक प्रगति का साधन है। उन्होंने परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष के रूप में भी काम किया। उन्होंने कॉस्मेटिक किरणों पर गहन शोध कार्य भी किया। साराभाई ने अंतरिक्ष प्रौद्यौगिकी का प्रयोग दूरसंचार और मौसम विज्ञान जैसे क्षेत्रों में करने का सपना देखा, जिसके परिणाम स्वरुप 1975 में भारत का पहला उपग्रह आर्यभट्ट लॉन्च किया गया। 'डॉ. विक्रम साराभाई को विज्ञान और राष्ट्र सेवा के लिए शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार (1962) में,पद्मभूषण (1966) और मरणोपरांत पद्मविभूषण (1972) से सम्मानित किया गया। उन्होंने अहमदाबाद में फिजिकल रिसर्च लेबोरेटरी की भी स्थापना की, जो आज भी खगोल विज्ञान और अंतरिक्ष भौतिकी के क्षेत्र में अग्रणी है। उन्होंने अहमदाबाद में भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM)की स्थापना की जय भारत के प्रमुख प्रबंधन संस्थानों में से एक है, 30 दिसंबर 1971 को मात्र 52 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। हालाकि वह भौतिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं, पर उनकी दूरदृष्टि और कार्य आज भी इसरो की हर सफलता में जीवत है-चाहे वह चंद्रयान हो, मंगलयान हो या सूर्य मिशन।

आज जब भारत चंद्रमा और मंगल तक पहुंच चुका है, तो इसके पीछे डॉ. साराभाई के सपनों और संकल्प की छाया स्पष्ट दिखाई देती है। चंद्रयान-2 के लैंडर को उनके सम्मान में 'विक्रम' का नाम दिया क्या है। वह केवल वैज्ञानिक नहीं, बल्कि सच्चे राष्ट्रनिर्माता थे, जिन्होंने दिखाया कि सीमित संसाधनों में भी असीमित सपने पूरे किए जा सकते हैं। जन्मजयंती पर डॉ. विक्रम साराभाई को अशेष श्रद्धांजलि 'आप केवल भारत के नहीं, बल्कि पूरी मानवता के अंतरिक्ष मार्गदर्शक हैं।'

मानसिक तनाव - कारण

-डा. बलवंत सिद्धू

जुलाई-अगस्त '**तर्कशील पथ**' अंक में हमने जाना था कि मानसिक तनाव किसे कहते है? इसके लक्षण क्या-क्या होतें है। इस लेख में हम इसके कारणों के बारे में जानेगे।

मानसिक तनाव के कई कारण हो सकते है। तनाव मानव जीवन का अभिन्न अंग है और यह जीवन की एक बुनियादी जरूरत भी है क्योंकि यह कठिन परिस्थितियों में कठिनाइयों से निपटने में भी मदद करता है। लेकिन अत्यधिक मानसिक तनाव के कारणों के बारे में जानना बहुत जरूरी है, जो परेशानी का कारण बनते हैं।

प्राकृतिक कारण : विभिन्न प्रकार के भय और उनसे उत्पन्न होने वाला तनाव मनुष्य में जन्म से ही स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है। जैसे बहुत तेज आवाज या शोर से। हम अक्सर देखते हैं कि जब अचानक तेज आवाज होती है तो बच्चा डर जाता है और रोने लगता है। किसी प्रिय वस्तु या चीज को खोने का डर भी तनाव पैदा करता है। जब मां दूर होती है या दिखाई नहीं देती तो बच्चा घबराता है और रोने लगता है। इसलिए ऐसी कुछ स्थितियों में तनाव होना स्वाभाविक है।

सीखे गए कारण :- कई बच्चे बड़े उत्साह के साथ स्कूल जाते हैं। लेकिन कई बच्चे जिनका पढ़ाई में मन नहीं लगता वे स्कूल जाने से कतराते हैं। परिवार के सदस्यों की डांट या स्कूल में शिक्षक के खराब व्यवहार के कारण वे स्कूल जाने से डरने लगते हैं और तनावग्रस्त हो जाते हैं। इसी तरह, कई परिस्थितियाँ भी हमें तनावग्रस्त होना सिखाती हैं।

अचेतन कारण :- कभी-कभी कुछ अप्रिय घटनाएँ न चाहते हुए भी वे अचेतन मन में अपना घर बना लेती हैं। जो यद्यपि संबंधित व्यक्ति को याद नहीं रहती, लेकिन बाद में कई स्थितियों में तनाव का कारण बन सकती हैं। बचपन में किसी के साथ घटी कोई बुरी घटना भी बहुत बड़ा प्रभाव डालती है। यह देखा गया है कि बचपन में हुए यौन शोषण के शिकार बच्चों को मानसिक बीमारी या मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं पैदा हो सकती हैं और उसके तनाव ग्रस्त होने की सम्भावना बहुत अधिक होती है।

आनुवंशिक कारण :- मनुष्य को अपने माता-पिता से जीन के माध्यम से कई गुण विरासत में मिलते हैं, जो अच्छे या बुरे हो सकते हैं। इस प्रकार, कई व्यक्ति एक विशेष प्रकार का व्यवहार अपना सकते हैं जिसमें तनाव एक पहलू हो सकता है। लेकिन यहां यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यद्यपि ऐसा व्यवहार आनुवंशिक कारणों से होता है, लेकिन सही प्रयास या उपचार से इसे बदला भी जा सकता है।

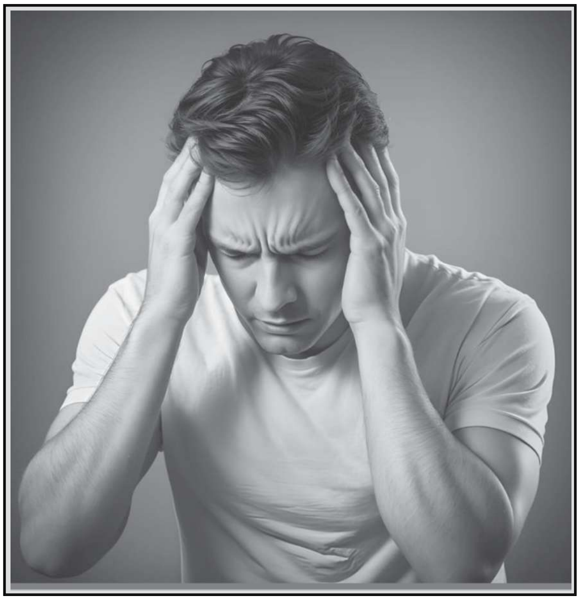

पर्यावरणीय कारण :- किसी भी व्यक्ति के पर्यावरण में कुछ महत्वपूर्ण परिस्थितियां आ सकती हैं जो उसके व्यवहार में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकती हैं, जिससे अवांछित तनाव उत्पन्न हो सकता है। जैसे प्रमुख प्राकृतिक आपदाएँ (बाढ़, बड़े भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट, देश का विभाजन, देशों के बीच युद्ध, जबरन पलायन, दुश्मन के कब्जे में बंदी बनाना, आदि। इसके अलावा शोरगुल वाली स्थितियां भी तनाव का कारण बनती हैं। पर्यावरण में प्रदूषण भी तनाव का कारण बनता है।

सामाजिक कारण :- आज की दुनिया में मानव मूल्यों में तेजी से बदलाव, मनुष्य का सामाजिक अलगाव, काम पर बढ़ता मानसिक दबाव, जीवन की तेज गति, चीजों का बढ़ता

महत्व, परिवार और बच्चों के जीवन में तेजी से बदलाव, पारंपरिक-सामाजिक समर्थन की कमी, नशीली दवाओं के दुरुपयोग में वृद्धि, जीवन में प्रतिस्पर्धी दौड़ इत्यादि भी मानसिक तनाव का बढ़ा कारण हैं।

कार्य तनाव : आधुनिक समय में कार्य का महत्व और इसकी आवश्यकता बहुत बढ़ गई है। जहां पहले सीमित आवश्यकताओं के कारण संयुक्त परिवार में एक व्यक्ति ही कोई न कोई काम या नौकरी करके पूरे परिवार का भरण-पोषण कर लेता था, वहीं आज बढ़ती हुई आवश्यकताओं के कारण परिवार के प्रत्येक सदस्य को काम करना आवश्यक हो गया है। कार्य-संबंधी तनाव तेजी से बढ़ रहा है। सबसे बड़ा कारण यह है कि व्यक्ति अपनी नौकरी से नाखुश है, अर्थात व्यक्ति को अपनी नौकरी पसंद नहीं है और वह अपनी परिस्थितियों में फंसा हुआ महसूस करता है। ऐसी स्थिति के कई कारण हो सकते हैं। आजकल माता-पिता अक्सर अपने अधूरे सपनों को अपने बच्चों के माध्यम से पूरा करते हैं। यदि बच्चा न भी चाहे तो भी वे उसकी इच्छा व चाह के विरुद्ध जाकर उसे किसी अन्य पेशे में शिक्षा दिलवा देते हैं या डिग्री आदि दिलवा देते हैं। इससे बच्चा बड़ा होकर अपने काम को नापसंद करने लगता है। लोग अक्सर बच्चों को मेडिकल, इंजीनियरिंग या अन्य डिग्री पाठ्यक्रमों में दाखिला लेने के लिए मजबूर करके उनके भविष्य के साथ खिलवाड़ करते हैं। कई बार बेरोजगारी के कारण कई युवा आर्थिक तंगी, मनचाही नौकरी न मिलने के कारण कोई भी काम करने लगते हैं और तनाव महसूस करते हैं।कई माता-पिता अपने बच्चों को अपने पारिवारिक व्यवसाय में लगा देतें हैं। वे बच्चों को काम करने के लिए मजबूर करते हैं, जिससे तनावपूर्ण स्थिति पैदा होती है। इसके इलावा, कभी-कभी व्यक्ति अपने पसंदीदा पेशे में भी तनाव से ग्रस्त हो सकता है, जैसे कि अत्यधिक कार्यभार से लदा होना, या व्यक्ति के बजट से परे जिम्मेदारियों का बोझ होना, काम के घंटे बहुत अधिक बढ़ जाना, रात में काम करने के लिए मजबूर होना, कई कार्य-संबंधित संगठनों में प्रशासनिक अनियमितता या गिरावट, या उच्च अधिकारियों द्वारा गलत निर्णय थोपना, श्रमिकों के स्वास्थ्य या जीवन को खतरे में डालना, कार्यस्थल पर भेदभाव, काम के भविष्य की चिंता, समय के साथ तकनीकी प्रगति के कारण मुश्किल महसूस करना, काम या नौकरी खोने का डर आदि।

रिश्तों में तनाव :- आजकल किसी भी व्यक्ति के निजी जीवन में तनाव बढ़ता जा रहा है, जिसमें पारिवारिक रिश्ते भी शामिल हैं। अक्सर, महिलाओं की स्वतंत्रता या बच्चों या युवाओं की जीवन स्थितियों से संबंधित कई मुद्दों के कारण परिवार में तनावपूर्ण स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। युवा लोग प्राय: अपनी स्वतंत्र इच्छा से कई निर्णय लेते हैं, जो कभी-कभी उनके माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध होता है। विशेषकर बच्चों की शादी के मामले में परिवार में अक्सर तनावपूर्ण माहौल पैदा हो जाता है।

परिवर्तन :- हाल के दिनों में प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन बहुत तेजी आ रहा है। यह परिवर्तन व्यक्ति के निजी जीवन या सामाजिक परिस्थितियों में हो सकता है। जहाँ पहले के समय में जीवन बिना किसी बड़ी चिंता के जिया जाता था। मगर अब यह संभव नहीं है। परिवर्तन की घटना पूरी दुनिया में बहुत स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। परिवर्तन, विशेषकर अनिश्चितता, व्यक्ति में तनाव पैदा करती है।

तनावपूर्ण घटनाएँ :- जीवन में ऐसी कई घटनाएँ होती हैं जो किसी भी व्यक्ति के लिए तनाव का कारण बनती हैं। उदाहरण के लिए, जीवनसाथी या परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु, तलाक, कारावास, दुर्घटना, बीमारी, सेवानिवृत्ति, नौकरी छूटना, प्राकृतिक आपदा, चोरी, बलात्कार, हमला, स्वयं या किसी करीबी रिश्तेदार या परिवार के सदस्य की बीमारी, शोक, मानसिक बीमारी, धन की आवश्यकता या वित्तीय हानि आदि भी बहुत तनाव पैदा करते हैं।

अन्य कारण :- इसके इलावा तनाव के और कई कारण हो सकते हैं। जैसे स्वास्थ्य संबंधी तनाव, आर्थिक कठिनाइयां, अकेलापन, पारिवारिक जिम्मेदारियां जैसे बच्चों की शिक्षा, व्यवहार, वैवाहिक मुद्दे आदि, अत: यह स्पष्ट है कि तनाव के कई कारण हो सकते हैं।

तनाव के दुष्प्रभावों और उसके उपचारों की जानकारी अगले अंक में उपलब्ध होगी (जो जारी रहेगा)।

पूर्व प्रिंसिपल/प्रोफेसर और प्रमुख, मनोचिकित्सा/ नशा मुक्ति विभाग, राजिन्द्रा अस्पताल, पटियाला

डायन बताकर एक परिवार के 5 सदस्यों की हत्या की घटना के संदर्भ में-

मीडिया और धर्म आधारित राजनीति द्वारा निर्मित वातावरण ऐसी घटनाओं के लिए जिम्मेदार है-रवीश कुमार

प्रस्तुतकर्ता-राजपाल सिंह

इस 6 जुलाई को बिहार के पूर्णिया जिले के तेतगामा गांव में 50-60 लोगों की भीड़ ने पहले एक परिवार के पांच सदस्यों को खम्बे से बांधकर बुरी तरह पीटा और फिर उन पर पेट्रोल डालकर आग लगा दी, जिससे वे जिंदा जल गए। इस क्रूर कृत्य का कारण यह बताया गया कि इस परिवार की मुखिया कातो देवी एक डायन थी और जादू-टोने के से गांव के बच्चों को नुकसान पहुँचा रही थी। मीडिया द्वारा इस घटना को महज समाचार के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय, प्रख्यात पत्रकार रवीश कुमार ने इस घटना के पीछे के दोषियों तथा ऐसी घटनाओं को जन्म देने वाले माहौल के निर्माण पर उंगली उठाई है। उनके स्पष्टीकरण के कुछ अंश दिए गए हैं। उनके स्पष्टीकरण से यह स्पष्ट है कि मीडिया और राजनेताओं द्वारा वैज्ञानिक चेतना से विपरीत निर्मित माहौल ही ऐसी घटनाओं को बढ़ावा देता है।

यह घटना कई प्रकार की विफलताओं को उजागर कर रही है। यहाँ संविधान भी विफल हुआ, व्यवस्था भी विफल हुई, और समाज तो विफल हुआ ही है। आपने कितने नेताओं को यह भाषण देते सुना है कि अंधविश्वास से बचो, जादू-टोना, डायन आदि जैसी कोई चीज नहीं होती? अब कोई भी इस बारे में बात नहीं करेगा, क्योंकि अगर इस के बारे में कुछ कहा गया तो उसे धर्म विरोधी घोषित कर दिया जाएगा। यह घटना एक आदिवासी क्षेत्र में होने से यह बिलकुल नहीं समझा जाना चाहिए कि यह केवल उसी क्षेत्र तक सीमित है। हमें इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि यह प्रवृत्ति केवल ग्रामीण क्षेत्रों में है और केवल आदिवासी क्षेत्रों तक ही सीमित है। शहरों में भी अंधविश्वास का व्यापक प्रचार हो रहा है और मध्यम वर्ग विशेष रूप से इससे प्रभावित है। जबकि संविधान का अनुच्छेद 51ए(एच) प्रत्येक नागरिक से वैज्ञानिक सोच अपनाने और समाज में तर्कशीलता को बढ़ावा देने की अपेक्षा करता है। लेकिन अब वो जमाना चला गया जब आप अंधविश्वास का विरोध कर सकते थे। अब अंधविश्वास धार्मिक पहचान का हिस्सा और राजनीतिक एजेंडा बन गया है।आज के भारत में अंधविश्वास का विरोध करना धर्म का विरोध माना जा सकता है, और इसके लिए सनकी लोगों की भीड़ आपका पीछा कर सकती है।

जितने भी अंधविश्वास फैलाने वाले बाबा हैं उनको धर्म की राजनीति कारण संरक्षण और प्रोत्साहन मिल रहा है। गरीब लोग अपने कल्याण की आशा में इन सबका अनुसरण कर रहे हैं, यही कारण है कि मीडिया अब खुलेआम जादू-टोने को बढ़ावा दे रहा है। हर दिन अखबारों और वेबसाइटों पर बुरी आत्माओं से छुटकारा पाने के विज्ञापन दिखाई देते हैं। 'जागरण' अखबार में प्रवीण कुमार के बारे में शीर्षक है -

'भूत, प्रेत और चुड़ैलों ने जीना मुश्किल कर दिया है, इसलिए इन उपायों से इन बुरी शक्तियों से छुटकारा पाएं।'

जबकि मीडिया को कहना चाहिए था कि ये सब (भूत, चुड़ैल आदि) बकवास है। ऐसे अंधविश्वासों से छुटकारा पाने के लिए आइए संविधान पढ़ें और विज्ञान को समझें।

इसी तरह, नवभारत टाइम्स में भी एक विशेष हैडलाइन लगी है , "तुम्हारे बच्चे को भी लग सकता है नज़र का दोष।" यानी मीडिया अंधविश्वास को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। बल्कि, यह उनकी फैक्ट्री है, जहाँ ऐसे अंधविश्वासों का निर्माण किया जा रहा है और उन्हें एक उत्पाद के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। यूट्यूब पर अंधविश्वासी टोटके सुनाने वालों का धंधा खूब चल रहा है। इस पर करोड़ों वियु आतें हैं। कोई पति को नियंत्रित करने के टोटके बता रहा है, जबकि अन्य सास या बहु को नियंत्रित करने के तरीके बता रहे हैं।

किसी को यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि पूर्णिया की यह घटना केवल आदिवासी समुदाय तक ही सीमित है। इस घटना के बहाने यह धारणा मजबूत हो रही है कि ऐसा केवल आदिवासी समाज में ही होता है। मीडिया कह रहा है कि इस तरह के अंधविश्वास उरावन जनजाति में प्रचलित हैं। अगर ऐसा है तो कोई जवाब दे कि क्या यूट्यूब पर जादू-टोने से लेकर बुरी नजर से बचाने तक के लाखों फर्जी वीडियो सिर्फ आदिवासी समुदाय के लोग ही देखते हैं?

सरकार के लिए यह एक बड़ा सवाल है। जब कोई सरकार से कोई सवाल पूछता है या उसके कार्यों पर सवाल उठाता है, तो सरकार उन वीडियो को ट्विटर से लेकर यूट्यूब तक हटाने का आदेश भेजती है। लेकिन सरकार ने अंधविश्वास फैलाने वाले कितने वीडियो हटाए हैं? क्या संविधान के अनुच्छेद 51ए(ए) का पालन करना सरकारों की जिम्मेदारी नहीं है? लेकिन वे ऐसे वीडियो को हटाने के लिए नहीं कहेंगी, क्योंकि उन्हें धर्म के एक हिस्से के रूप में चुपचाप प्रचारित किया जाता है, जिसका फिर उपयोग राजनीतिक सत्ता द्वारा किया जाता है। इसलिए पूर्णिया की घटना को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए।

आज धर्म के नाम पर राजनीति की गुंडागर्दी के कारण संविधान की मूल भावना को लागू करना मुश्किल हो गया है। अंधविश्वास के खिलाफ लड़ने वाले डॉ. नरेंद्र दाभोलकर की हत्या कर दी गई। यद्यपि उनकी लड़ाई अंधविश्वासों के विरुद्ध थी, फिर भी उन्हें धर्म-विरोधी नजरिए से देखा जाने लगा। दाभोलकर ने अंधविश्वास के खिलाफ कई किताबें लिखी हैं। बिहार सरकार को उन पुस्तकों को पंचायतों में वितरित करना चाहिए।

बिहार में 1999 से डायन प्रथा के खिलाफ कानून बना हुआ है। इस कानून को बने 25 साल हो गए हैं, लेकिन ये घटनाएं रुकी नहीं हैं। इस कानून की तर्ज पर 2001 में झारखंड और 2005 में छत्तीसगढ़ में भी डायन-प्रथा विरोधी कानून बनाए गए हैं । इन कानूनों के बावजूद, राष्ट्रीय अपराध ब्यूरो के आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2000 से अब तक लगभग 2,500 महिलाओं को डायन होने के संदेह में मार दिया गया है। डायन प्रथा के खिलाफ काम करने वाली सामाज सेवी संस्था 'निरंतर ट्रस्ट' का कहना है कि आज भी बिहार में कम से कम 75,000 महिलाएं डायन कहलाने के खतरे का सामना कर रही हैं।

जब हम इस घटना पर खोजबीन कर रहे थे तो हमें समझ आ गया था कि यह घटना का संबंध उस राजनीति से, उस मीडिया से है, जो दिन-रात उस अंधविश्वास का समर्थन करता है, और अंधविश्वास फैलाने वाले बाबाओं को भारत के भविष्य का स्वप्नद्रष्टा बताता है। साधारण लोग इनके प्रभाव में आकर अपनी गलत सोच को तभी उचित ठहराना शुरू कर देतें हैं।

***

सही मार्ग

जो हमारे लिए असंभव है, उसे हमारे बच्चे संभव बना देते हैं। बच्चों में असंभव को संभव बनाने का साहस पैदा करें।

अगर आप बच्चों की आलोचना करते रहेंगे, तो वे अपना पूरा जीवन दूसरों की आलोचना करते हुए बिता देंगे। अगर आप उनकी स्वाभाविक भावनाओं का विरोध करेंगे, तो वे हिंसक और झगड़ालू हो जाएँगे। अगर आप उन्हें डराएँगे, तो वे हर चीज़ से डरेंगे। अगर आप उन पर दया करेंगे और हर जगह उनका साथ देंगे, तो वे छोटी-छोटी बातों पर निराश हो जाएँगे। अगर आप उनका मज़ाक उड़ाएँगे, तो वे छिपने लगेंगे। अगर आप उनमें से ईर्ष्या और द्वेष नहीं निकालेंगे, तो वे कभी भी हीन भावना से मुक्त नहीं हो पाएँगे। अगर आप उन्हें शर्मिंदा करते रहेंगे, तो उनका दृष्टिकोण संकीर्ण हो जाएगा। अगर आप उनमें कमियाँ निकालते रहेंगे, तो वे कुछ नया नहीं करेंगे।

लेकिन अगर आप उनके साथ धैर्य से पेश आएँगे, तो वे धैर्यवान बन जाएँगे। अगर आप उनमें आत्मविश्वास भरेंगे, तो वे हर समस्या का समाधान कर लेंगे। अगर आप उनके अच्छे कामों की प्रशंसा करेंगे, तो उनमें दूसरों की प्रशंसा करने का साहस आएगा। अगर आप उन्हें वैसे ही स्वीकार करेंगे जैसे वे हैं, तो वे सबके साथ रहना सीखेंगे। यदि आप उनके गुणों और दोषों को स्वीकार करते हैं, तो वे सम्पूर्ण विश्व को अपना मानेंगे। यदि आप उन्हें ईमानदारी और निष्ठा सिखाएँगे, तो वे सत्य और न्याय के रक्षक बनेंगे। यदि आप उनमें सुरक्षा और स्वतंत्रता की भावना भरेंगे, तो उनमें दूसरों की देखभाल करने की क्षमता विकसित होगी। यदि आप उन्हें उनकी माँ की आशाओं के प्रति जागृत रखेंगे, तो वे परिवार, समाज और देश के लिए गौरव अर्जित करेंगे।

जैसा बोओगे, वैसा ही काटोगे। जैसा उचित समझो वैसा करो, लेकिन परिणामों को ध्यान में रखते हुए करो।

-नरेन्द्र कपूर

नाटक की शक्ति

नाटक लोगों तक अपनी बात पहुँचाने का एक ज़रिया है। यह चेतना के नेत्र खोलने का एक तरीका है। गाँव-गाँव जाकर नाटक करते समय नाटक की शक्ति की झलक भी देखने को मिलती है।

नाटक ''तमाशा नट और नटी का'' पुलिस पर एक व्यंग्य था कि उन्होंने अपनी वर्दी में अली बाबा और चालीस चोरों की कहानी वाले चोरों के पट्टे लगा रखे हैं। नाटक पर चर्चा के बाद, पुलिस ने अब एक आदेश जारी करके अपनी वर्दी से ये पट्टे हटा लिए हैं।

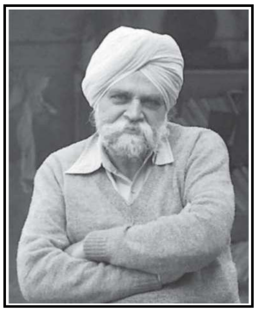

नाटक समाज ने माँग की कि बच्चों पर महिलाओं के मौलिक अधिकार को स्वीकार करते हुए, बच्चे के नाम में जहाँ पिता का नाम लिखा है, वहाँ माँ का नाम भी लिखा जाए। पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड ने इस माँग को स्वीकार कर लिया।

नाटक ''भगत सिंह'' में माँग की गई कि जब लुधियाना पुल चौक पर अकेले भगत सिंह की मूर्ति स्थापित की गई है, तो राजगुरु और सुखदेव की मूर्तियाँ भी लगाई जानी चाहिए। अब एक ही जगह स्थापित तीनों शहीदों की मूर्तियाँ हमें संघर्ष की प्रेरणा देती हैं। मुद्दों को उठाना और बराबरी वाले समाज का संदेश देना मेरे नाटकों का आदर्श है। इस बड़े काम के लिए मैंने कभी किसी तरह का समझौता नहीं किया। मैं नाटक को हर उस जगह ले गया जहाँ इसकी ज़रूरत थी।

-गुरशरण सिंह

(नाटक डायरी से)

मेरी राय में प्रेरणा

प्रेरणा वह चीज़ है जिससे लेखक को अचानक एहसास होता है कि वह क्या कर सकता है। प्रेरणा जितनी प्रबल होगी, उसे पूरा करने के लिए उसे उतनी ही अधिक पीड़ा सहनी होगी। **-लियो टॉल्स्टॉय**

इंकलाब

साथ रहते हुए, हम अक्सर इस बात पर बहस करते थे कि जीवन की कीमत क्या है?

इस प्रश्न का भगत सिंह ने जो उत्तर दिया, वह आज भी मेरे कानों में गूंजता है।

'यदि मैं अपने प्राणों की आहुति देकर देश के कोने-कोने में इंकलाब की आवाज़ बुलंद रखूँ, तो मैं अपना जीवन सफल मानूँगा।'

उन्होंने जीवन की कीमत को एक शब्द में परिभाषित किया था और वह शब्द था 'इंकलाब '। वे भारत में 'इंकलाब' का नारा बुलंद करने वाले पहले युवक थे।

पंडित किशोरी लाल

(शहीद-ए-आज़म भगत सिंह के साथी)

विशेषज्ञता

20वीं सदी के प्रसिद्ध मनोचिकित्सक विक्टर फ्रैंकल को आधी रात को एक अज्ञात महिला का फोन आया, जिसने उन्हें बताया कि वह आत्महत्या करने वाली है। विक्टर ने उससे बात की और उसे एक-एक करके कारण बताता रहा कि उसे क्यों जीना चाहिए।

फिर कुछ समय पश्चात जब वह महिला विक्टर से मिली, तो उसने पूछा, ''मैंने तुम्हें ऐसा क्या कारण बताया जिससे तुम जीवित रहने के लिए प्रेरित हुई?''

उसने बहुत शांति से कहा, ''इनमें से किसी भी कारण से नहीं!''

विक्टर आश्चर्यचकित हुआ, ''फिर?''

वह कहती है, ''आपसे बात करने के बाद, मैंने सोचा, अगर इस विशाल दुनिया में एक भी व्यक्ति ऐसा हो जो आधी रात को भी मेरी बात ध्यान से सुन सके, तो इस दुनिया में रहा जा सकता है!''

प्रकाश कभी मरा नहीं, सूर्य कभी ठरा नहीं –जसविंदर

रानी माँ – गाइदिन्ल्यू

''पहाड़ कभी गुलाम नहीं होते और हम भी नहीं होंगे।''

ये शब्द नागा पहाड़ों की उस निडर 17 वर्षीय बेटी ने अपने साथियों का हौसला बढ़ाते हुए कहे थे, जो आजीवन कारावास की सजा काट रही थी, जिनका पहाड़ जितना बड़ा हृदय था, जिनकी आँखों में आज़ादी की चमक थी और जिनके शब्द अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह से भरे थे। 15 वर्ष की आयु में हेराका आंदोलन में शामिल होना, गाँव-गाँव जाकर युवाओं को स्वतंत्रता संग्राम के लिए तैयार करना, ब्रिटिशर को कर न देने की अपील करना और गुरिल्ला युद्ध के माध्यम से अंग्रेजों का सफाया करना उनके प्रमुख कार्य थे। नागा लोगों की स्वतंत्रता के लिए अपनी जवानी, जीवन और रक्त का बलिदान देने वाली रानी गाइदिन्ल्यू (लुआंगकाओ-मणिपुर में जन्मी) ने 14 वर्ष कारावास, सड़ी-जली रोटियाँ, सीलन भरी दीवारें और रातों की ठंडी हवाएँ सहन कीं, लेकिन उनका मन कभी भी नहीं डगमगाया,1947 में भारत की स्वतंत्रता के साथ, गाइदिन्ल्यू रिहा हुई। बाद में, उन्होंने पहाड़ी गाँवों में स्कूल बनवाए, स्वास्थ्य सेवाएँ शुरू करवाई और अपना पूरा जीवन नागा लोगों की संस्कृति के संरक्षण के लिए समर्पित कर दिया। लोग उन्हें प्यार से ''रानी माँ'' कहते थे।

–श्रीराम सय्यदवाला

उड़ते लोग

उड़ने लगते हैं कुछ लोग
उसी दिशा में हवा का रुख देखकर
वे इंसान नहीं होते
वे होते हैं
कागज के टुकड़े
मृत पत्ते या तिनके
मिल जाते हैं कहीं धूल में
आते नहीं नज़र कभी
मगर वे जो
हवा से टकराने वाले
खड़े रहते हैं सीना तानकर
करते हैं मुकाबला
आंधियों और तूफानों का
वे या तो टूट जाते हैं
या फिर आंधिया
उन्हें सलाम करती हैं।

–बलदेव सिंह महरोक

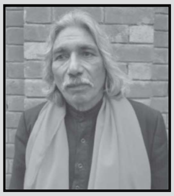

इस धरती का नक्शा बदलने वाला ह,
दरिया अपना रास्ता बदलने वाला है।

मैं कहता हूँ इसकी नींव मज़बूत करो,
नेता कहते हैं कि माथा बदलने वाला है।

काय हैं वो बाबा जो कहतें हैं,
अल्लाह तकदीर बदलने वाला है।

–बाबा नज़मी

हमें क्या करना चाहिए ?

भगत सिंह की रचनाएँ हमें यह सिखाती है कि विभिन्न स्रोतों से ज्ञान करने के लिए हमें लगन, कड़ी मेहनत, ईमानदारी और दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है। इस समय, हमें भगत सिंह के इन शब्दों को भी याद रखना चाहिए, ''धार्मिक अंधविश्वास हमारी प्रगति के मार्ग में बाधाएँ हैं। इन्हें त्याग देना चाहिए। हमारा असली संघर्ष अपनी कमज़ोरियों के विरुद्ध है।''

–स्वराजबीर

बच्चों का कोना

शंका निवारण

प्रश्न-1. क्या हमारे हाथों की रेखाओं का हमारे जीवन से कोई संबंध है?

उत्तरः हाथों की रेखाओं का हमारे जीवन से कोई संबंध नहीं है। यह ज्योतिषियों द्वारा आम लोगों का शोषण करने के लिए तैयार की गई पद्धति है। हाथों पर ये रेखाएं तब बनती हैं जब बच्चा मां के गर्भ में बढ़ रहा होता है और बच्चे के हाथों की मुट्ठियां बंद होती हैं और जहाँ भी हाथ मुड़ते हैं वहाँ रेखाएं बन जाती हैं। तर्कशील सोसायटी ने हस्तरेखा को लेकर चुनौती जारी करते हुए कहा है कि यदि कोई ज्योतिषी सोसायटी की शर्तों के अनुसार सच बता दे तो सोसायटी उसे पाँच लाख रुपये देने को तैयार है।

प्रश्न-2. क्या ज्योतिषी आपके मस्तिष्क या चेहरे को देखकर आपका भविष्य या आपके भाई-बहनों की संख्या बता सकते हैं?

उत्तरः नहीं, ज्योतिषी ऐसा बिल्कुल नहीं कर सकते क्योंकि ज्योतिष कोई विज्ञान नहीं है। हाँ, इतना तो तय है कि कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति किसी के चेहरे से उसकी मानसिक स्थिति अर्थात खुशी, दुख या चिंता का अनुमान तो लगा सकता है, लेकिन कोई किसी के भविष्य या भाई-बहनों की संख्या का अनुमान नहीं लगा सकता। आज यह एक लूट का साधन बन चुका है।

प्रश्न-3. क्या हवन-यज्ञ करने से बारिश हो सकती है?

उत्तरः भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की 60 प्रतिशत आबादी कृषि क्षेत्र में लगी हुई है। प्राचीन काल से ही हमारी कृषि वर्षा पर निर्भर रही है। हम गांवों में अक्सर ही देखते हैं कि जब बारिश नहीं होती तो लोग इंद्र देवता को प्रसन्न करने के लिए हवन-यज्ञ करते हैं। शायद उन भोले-भाले लोगों को बारिश के आने के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान का अभाव है। वर्षा तब होती है जब समुद्र, नदियों, झीलों आदि जैसे भूमिगत जल स्रोतों से पानी सूर्य की गर्मी के कारण वाष्पित हो जाता है और फिर ठंड के कारण ऊपर उठकर संघनित हो जाता है, जिससे जल वाष्प पानी की बूंदों में बदल जातें हैं। जब हवा इन पानी की बूंदों को संभाल नहीं पाती, तो वह पानी वर्षा के रूप में धरती पर गिरता है। वर्षा की इस प्रक्रिया का हवन-यज्ञ से कोई संबंध नहीं है।

प्रश्न-4. क्या साँप के डंसने का इलाज झाड़-फूंक से किया जा सकता है?

उत्तरः दुनिया में साँपों की कई प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इनमें से बहुत कम साँप विषैले होते हैं। इन जहरीले सांपों के काटने से पीड़ित व्यक्ति की तत्काल और उचित उपचार न मिलने पर मृत्यु हो सकती है। लेकिन यदि कोई कम विषैला या गैर विषैला सांप काट ले तो व्यक्ति की जान को कम खतरा होता। जब कोई व्यक्ति को कम विषैले सांप ने डंसा है और वो किसी झाड़-फूंक करने वाले व्यक्ति के पास जाता है और अपनी जान बचाने का सारा श्रेय झाड़-फूंक करने वाले व्यक्ति को देता है, हलाकि वो बिना किसी झाड़-फूंक के भी बच सकता था। जब किसी व्यक्ति को सांप काट ले तो उसे ऐसे झाड़ा करने वालों के पास जाकर अपनी जान जोखिम में नहीं डालनी चाहिए, बल्कि उचित चिकित्सा उपचार लेना चाहिए। सर्पदंश का उपचार सरकारी अस्पतालों में उपलब्ध है।

बच्चों की चाहत

सभी बच्चों में आगे बढ़ने की प्रबल इच्छा होती है, बस उसे पहचानने और उसे उसकी मंज़िल तक पहुँचाने की ज़रूरत है। बचपन में मिली शिक्षा बच्चों के चरित्र निर्माण में अहम भूमिका निभाती है। उनमें नई चीज़ें सीखने की चाहत होती है, अगर शिक्षक इस चाहत को ज़िंदा रखने में कामयाब रहे, तो बच्चे ज़रूर एक अच्छे इंसान बनने की ओर अग्रसर होंगे।

-वासीली सुखमोलिंस्की

बाल कहानी

माहौल

-के. सी. रुपाणा

राजू और रमेश दोनों पड़ोसी थे। वह दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे। राजू और रमेश दोनों के घर का माहौल पूर्ण रूप से भिन्न था। राजू के माता-पिता बहुत बार किसी न किसी धार्मिक कार्यक्रम में शामिल होने जाते।कभी अपना भविष्य संवारने के लिए किसी तांत्रिक या बाबा को घर पर बुलाते। घर में हवन-ञग करवाते। एक ज्योतिषी ने बताया कि राजू की हस्त रेखाएं बताती हैं कि वह पढ़ कर बड़ा अधिकारी बनेगा। घर में सुबह शाम पाठ पूजा इत्यादि चलता रहता। राजू भी इन सभी कार्यों में बढ़ चढ़ कर भाग लेता। राजू के माता-पिता, उसको भी साथ लेकर किसी न किसी बाबा या तांत्रिक के पास जाते रहते। घर का वातावर्ण अंधविश्वासों से ओत-पोत था। घर कई प्रकार के देवी देवताओं की तस्वीरों से भरा पड़ा था। घर के सभी लोग उन तस्वीरों के आगे सुबह शाम दिए जलाते, अगरबत्तियाँ जलाते, घंटियाँ बजाते रहते। वह कई बार इन धार्मिक कार्यक्रमों में शामिल होने के कारण स्कूल से भी गैरहाजर हो जाता। पढ़ाई में उस की रुची कम हो रही थी परन्तु उसे बाबाओं, देवी देवताओं, ज्योतिषियों पर पूर्ण विश्वाश था कि उन्हीं की कृपा से सफलता मिल जाएगी। पढाई में पछड़ने के कारण राजू को स्कूल में अध्यापकों से प्रतिदिन डांट पड़ती।

दूसरी तरफ रमेश के घर का माहौल राजू के घर के माहौल से पूर्ण रूप से भिन्न था। रमेश के माता पिता उसे प्रतिदिन मन लगाकर पढ़ने के लिए कहते। रमेश को स्कूल से मिला काम करने में सहयोग देते। वे घर पर कोई भी किसी अनावश्यक कार्यक्रम नहीं करवाते थे ताकि रमेश का समय बर्बाद न हो इस बात का पूरा ध्यान रखते। जिस विष्य में कोई कमी महसूस होती तो किसी टयूशन का भी प्रबंध कर देते थे।वो यही शिक्षा देते कि अपनी कड़ी मेहनत से जिंदगी बदल सकती है। किसी भी व्यक्ति की सफलता उस के द्वारा की गई मेहनत पर निर्भर करती है। उन के माता-पिता प्रतिदिन यही शिक्षा देते थे कि खूब मेहनत करो, पढ़ो, अच्छा आचरण, अच्छा व्यवहार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण गृहण करो तो जिंदगी में आप अवश्य ही सफ़ल हो जाओगे।

वार्षिक परीक्षा के दिन भी समीप आ रहे थे। एक तरफ राजू कम पढ़ता और फालतू के भ्रामक कामों में व्यस्त रहता। पूजा-पाठ और मन्नतें बढ़ाता गया। कभी किसी बाबा से ताबीज करवाता और कभी किसी और तांत्रिक से उपाय करवाता था कि वह परीक्षा में से पास हो जाए। दूसरी तरफ रमेश ने अपनी पढ़ाई पर और भी ज्यादा ध्यान देना शुरू कर दिया। अपने सारे पाठ्यक्रम को दोहराता चला गया और गहन अध्ययन करता रहा। वह फ़ज़ूल के भ्रामक और अंधविश्वासी कार्यों से दूर रहा।

परीक्षा शुरू हुई और राजू और रमेश दोनों परीक्षा देने जाते। राजू सुबह माथा टेकने जाता। घर में आरती, पूजा पाठ इत्यादि करता। उसने अपने पेपर बोर्ड पर धार्मिक फोटोएँ भी चिपका ली। पेपर शुरू करने से पहले वह आँखें बंद करके प्रार्थना भी करता। मगर रमेश को अपनी मेहनत पर पूरा विश्वास था। वो पेपर शुरू होने से पहले तक खूब दोहराई करता। परीक्षा समाप्त हुई। वह दोनों ही रिजल्ट की उत्सुकता से इंतजार कर रहे थे। इंतजार समाप्त हुआ और रिज़ल्ट का दिन भी आ गया। रमेश अपनी कक्षा में से प्रथम स्थान पर रहा और राजू फेल हो गया।

हमें, श्रम क्यों करना चाहिए?

-रंगनायकम्मा

इंसान इस कायनात में अकेला जीव नहीं हैं। 'चींटी' जैसे छोटे-से जीव से लेकर 'हाथी' जैसे विशाल प्राणी तक कुदरत में नाना प्रकार के कीट, पशु और पक्षी हैं। कुछ जमीन पर जीते हैं, तो कुछ पानी में और कुछ जमीन और पानी दोनों में। हर जीव को, चाहे वह कहीं भी जीने वाला हो, आहार की जरूरत होती है।

मगर इंसान को छोड़ कर ऐसा कोई भी जीव नहीं है जो अपने आहार के लिए श्रम करता हो। और किसी भी जीव को श्रम करना नहीं आता। ये सारे जीव घास, पात, खर-पतवार आदि - कुदरत में जो भी पहले से मिलता हो, उसी का सेवन करके जी लेते हैं। कुछ पशु दूसरे छोटे पशुओं को खाकर जीते हैं।

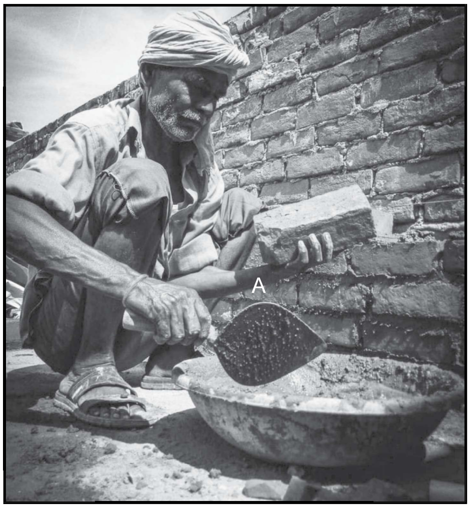

यह सही है कि पक्षी पेड़ों पर अपने घोंसले बना लेते हैं। बन्दर और दूसरे वानर खाने लायक कन्द-मूल उखाड़ लेते हैं। लेकिन ये क्रियाएँ श्रम नहीं होतीं। हर जीव के कुछ 'नैसर्गिक आभास होते हैं। उनके ये नैसर्गिक आभास कभी बदलते नहीं हैं। पक्षी जो घौंसले बनाते हैं और तमाम सारे जानवर जैसा-जैसा व्यवहार करते हैं वह सब हमेशा एक-जैसा ही रहता है।

लेकिन इंसान अलग तरह के जीव हैं। उनके शरीर की रचना अलग होती है। इंसान की सोचने और बोलने जैसी क्षमताएँ बिल्कुल अनोखी क्षमताएँ हैं। शुरू-शुरू में तो इंसानों को श्रम करना नहीं आता था। वे भी कुदरत में जो मिल जाता उसी का सेवन कर लेते थे और जानवरों की ही तरह नगे घूमते-फिरते थे। धीरे-धीरे उन्होंन चिकनी मिट्टी के कटोरे वगैरह बनाना और पत्थरों को तराश कर औजार के रूप में प्रयोग करना शुरू करते वहाँ से लेकर वे सारी चीजें सीख लीं जो कुछ आज हम जानते हैं। जैसे फसल उगाना, कपड़ा बुनना और मकान बनाना। इंसान आगे भी लगातार नयी-नयी चीजें सीखते रहे हैं और सीखते रहेंगे। मगर जानवर सदा एक जैसे ही रहते हैं। श्रम करना इंसान का खास चरित्र है।

किसी भी काम को करने के लिए या कोई भी उत्पाद बनाने के लिए हम उन्हीं चीजों से शुरुआत करते हैं जो कुदरत में कुदरती तौर पर मिल जाती हो। पहले कच्चे माल और औजार बनाने पड़ते हैं। फिर उन्हीं के प्रयोग से हम दूसरे उत्पाद तैयार करते हैं। इन कामों के लिए बैल, घोड़े ऊँट जैसे पशु भी इस्तेमाल होते हैं। मगर ये सारे पशु औजार ही होते हैं। काम करने वाले तो इंसान ही होते हैं, न कि पशु।

कोई उत्पाद एक बार बन जाये, तो इस्तेमाल हुए बिना नहीं रहता। उत्पादों की लगातार खपत होती रहती है। खाने के पदार्थ रोज के रोज खप जाते हैं। कपड़ों की खपत महीनों-महीनों में होती है। घर-मकान साल-साल तक खड़े रहते हैं। इनसान एक ओर कुछ उत्पादों की खपत करते जाते हैं, तो दूसरी ओर उसी तरह के नये उत्पाद साथ ही साथ बनाते जाते हैं। जब पिछले साल की फसल का उपभोग हो रहा हो, तो साथ-साथ नयी फसल उगाने का काम चल रहा होता है। यही होता है कपड़ों, जूतों, दवाओं और हर दूसरे उत्पाद के साथ। जहाँ पहले की निर्मित बसें व ट्रेनें पुरानी पड़ती और रगड़ती-घिसती जा रही होती हैं, वहीं नयी बसों व ट्रेनों का भी उत्पादन चल रहा होता है। दूसरी तमाम चीजों के साथ ऐसा ही होता है। रोज-ब-रोज खर्च होती चीजों का उत्पादन फिर से होता रहता है। कुल मिलाकर लोगों का रोज-रोज तरह-तरह का श्रम करते जाना जरुरी हो जाता है।मान लें किसी एक दिन से लोग सभी तरह का श्रम करना बन्द कर दें। फिर क्या होगा? कल्पना करें। एकाएक कामों के रुक जाने का मतलब होगा खेती का और दूसरी-दूसरी तरह के सारे कामों का रुक जाना। खाना पकाना बन्द हो

जायेगा। कपड़े धोना बन्द होगा। पानी ढोकर लाना बन्द होगा। हर तरह का श्रम करना बिल्कुल बन्द। घर में पहले से जो कुछ खाने की चीजें बची हों, जैसे फल या पाव-रोटी, उसी को खा लेना होगा। पानी जितना घर में रखा होगा, उतना ही पीना होगा। पर यह सब तो चन्द दिनों में ही समाप्त हो जायेगा। उसके बाद तो बच्चों तक के लिए कोई खाना बचा नहीं होगा। पीने के लिए भी कोई पानी नहीं होगा। देखते-देखते रोग फैलने लग जायेंगे। मगर चिकित्सा-कर्म का श्रम नहीं हो रहा होगा। इसलिए किसी का इलाज नहीं हो पायेगा। दो दिन के अन्दर सबसे पहले बच्चे मरने लगेंगे।

कुछ समय बाद बीमार पड़े लोग मरने लग जायेंगे। कई लोग तो पीने का पानी न होने के कारण तीन दिनों के अन्दर मौत का शिकार हो जायेंगे। मरने वालों की लाशें वही की वहीं बिछी रह जायेंगी, क्योंकि दफनाने और जलाने का श्रम करने वाला कोई नहीं होगा। मौत का शिकार होंगे। पालतू जानवर भी, क्योंकि उन्हें आहार या पानी देने वाला कोई नहीं होगा। हर कहीं जानवर, बच्चे और प्रौढ़ मरे पड़े होग घरों के अन्दर, बाहर आंगनों में और सड़कों पर।

इस आपदा को जो झेल नहीं पायेंगे ऐसे लोग जीने की ठान कर जंगलों की ओर भाग चले जायेंगे। उन्हें जंगलों तक पहुँचाने के लिए कोई वाहन नहीं होगा। इसलिए कि वाहन चलाने वाला कोई नहीं होगा। जंगल पहुँच जायेंगे तो घिसटते-घिसटते ही। वहाँ वे उसी सूरत में कुछ खा पायेंगे कि पेड़ों पर खाने लायक कुछ बचा हो। वहाँ के तालाबों में जो भी पानी हो उसी को पीना होगा। भूखे-प्यासे वे जंगलों में ठोकर खाते हुए भटकते रह जायेंगे। कुछ देर बाद उनके कपड़े सारे फट जायेंगे और वे कपड़ों के बगैर रह जायेंगे। निर्वस्त्र वे जानवरों जैसे हो जायेंगे। इंसानी जानवर । जानवर तो जंगलों में बड़े आराम से रहते हैं। पर ये इंसानी जानवर जंगलों में बहुत देर तक जीवित भी नहीं रह पायेंगे।

तात्पर्य यह कि अगर हम श्रम करना बन्द कर दें, तो गाँवों कस्बों में लोग हफ्ते भर में मर जायेंगे और जो लोग जंगलों की ओर भाग कर वहाँ भी श्रम नहीं करेंगे वे महीने भर में मर जायेंगे। इस तरह श्रम रुक जाने पर तो पूरी की पूरी इंसानियत का ही अन्त हो जायेगा।

क्या आप समझ पा रहे हैं कि रोजमर्रा की जिन्दगी में श्रम कितना जरूरी है? श्रम के सारे रूपों को त्याग देना नामुमकिन है। जो सम्भव हो सकता है वह यही कि कठिन-कठिन श्रम को आसान बनाने के लिए उस श्रम में कोई बदलाव किये जायें। श्रम यदि आसान बन जाये, तो भी श्रम, श्रम ही होता है। श्रम के बिना जी पाना हम सभी के लिए असम्भव है।

सवाल और जवाब

1. क्या इंसान अपना सारा काम बन्द करके। आराम फरमाते हुए मजे से गप्पे मारते नहीं रह सकते ?

जवाब : हाँ, वे काम बन्द करके आराम तो फरमा सकते हैं। मगर गप्पे क्या मारेंगे ? अखबारों के बारे में ? अखबार तो नहीं होंगे। शिक्षा के बारे में? वह भी नहीं होगी। फिल्मों के बारे में? वे भी तो नहीं होंगी। राजनीति के बारे में? वह भी नहीं होगी। जब काम न हो, तो सारी बातचीत भी बन्द हो जाती है। क्या आप जानते हैं कि सबसे पहले इनसान का बोलना कैसे शुरू हुआ था? आदिम काल में जैसे ही इनसानों ने थोड़ा-थोड़ा काम करना शुरू किया, वैसे सम्प्रेषण की जरूरत पेश हुई। इसी जरूरत से धीरे-धीरे बोलना शुरू हुआ। कोई काम ही न रहे, तो बोलने की भी कोई गुंजाइश नहीं होगी। बोलना बन्द हो जायेगा।

2. आज हम कई सारे काम जानते हैं। भविष्य में कितनी तरह के काम सामने आ सकते हैं ?

जवाब : आज हम जितने भी काम जानते हों अतीत में तो वे सब अनजाने ही थे न? जैसे-जैसे कुदरत के बारे में नयी-नयी जानकारियाँ मिलती जायेंगी, नये-नये किस्म के काम सामने आते जायेंगे जिनसे हम नयी-नयी वस्तुओं का उत्पादन करते जायेंगे।

3. क्या यह काफी नहीं कि हमारे पास भोजन, कपड़ा, आवास, दवाएँ और परिवहन के साधन हों? हमें बहुत सारी चीजों की क्या जरूरत है ?

जवाबः आवश्यक आवश्यकताएँ कम ही होती हैं। हमें दर्जनों किस्म की वस्तुओं की कोई जरूरत नहीं होती।

4 पक्षी घोंसले बनाते हैं। जानवर भी अपने रहने की जगह तलाशते हैं। क्या ये कोई श्रम के रूप हैं ?

जवाबः नहीं। 'श्रम' शब्द और उसका अर्थ सिर्फ इंसानों पर ही लागू होता है। यह पशु-पक्षियों पर लागू नहीं होता।

बड़े अर्थ वाली, छोटी-छोटी बातें

प्रार्थनाएं!

न्यूजीलैंड में लोग स्वास्थ्य और धन के लिए प्रार्थना नहीं करते क्योंकि उनमें से अधिकांश नास्तिक हैं। उन्हें भी अच्छा स्वास्थ्य और धन मिलता है, जबकि भारत जैसे दुनिया के अन्य धार्मिक/पिछड़े देशों में, जहाँ लोग प्रार्थना करते हैं, बड़ी संख्या में लोग स्वास्थ्य और धन जैसी जीवन की आवश्यकताओं से वंचित हैं। अंतर केवल सोच में है। न्यूजीलैंड में लोग कहते हैं कि काम ही पूजा है, और भारत में लोग कहते हैं कि पूजा ही काम है।

जीवन जीने के दो तरीके

दुनिया में सभी लोग अपना जीवन केवल दो तरीकों से जीते हैं, एक तर्क पर आधारित और दूसरा बिना सोचे समझे किसी के पीछे लगने के आधारित। जीवन को तर्कसंगत ढंग से जीने के लिए, प्रत्येक घटना की जांच कौन, क्या, क्यों, कैसे, कहाँ और किसके द्वारा के आधार पर की जाती है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रश्न पूछने का अधिकार है और उत्तर देने वाले व्यक्ति को भी तथ्यों के आधार पर उत्तर देना चाहिए।

दूसरा, जो लोग पिछलग्गू जीवन जीते हैं उन्हें प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती है; वे जो सुनते हैं, जो पढ़ते हैं, या किसी पर विश्वास के आधार पर हो उसको मानते हैं, उस पर विश्वास करते हैं। यह प्रत्येक व्यक्ति पर निर्भर है कि वह जीवन में इन दोनों में से कौन सा तरीका अपनाए। विदेशों में अधिकतर लोग तर्क के आधार पर अपना जीवन जीते हैं और बहुत खुश और ईमानदार होते हैं।

बुरा दिन

कोई भी दिन कभी बुरा नहीं होता। लोग उस दिन को बुरा दिन कहते हैं जिसमें घटनाएँ उनकी उम्मीदों के अनुसार नहीं घटतीं। ऐसे बुरे दिनों से सीखने के लिए बहुत सी अच्छी बातें होतीं हैं।

जो लोग कुछ दिनों को बुरा मानते हैं, वे बहुत सी अच्छी बातें सीखने का अवसर खो देते हैं। मैंने अपने जीवन के उन दिनों को याद किया जिनमें घटनाएँ मेरी आशा के अनुरूप नहीं रहीं, या जिन्हें सामान्य भाषा में बुरे दिन कहा जा सकता है, और फिर मैंने उन बुरे दिनों में जो सीखा, उस पर विचार किया, जो मेरी सबसे मूल्यवान उपलब्धि थी, कुछ ऐसा जिसे उन दिनों के बिना हासिल करना कठिन था।

अगले जन्म का सुधार

बहुत से लोग अगले जीवन में विश्वास करते हैं। जीवन में, जो लोग आपको अगले जन्म में सुखी जीवन जीने का झांसा देते हैं, वे भी आपके द्वारा दिए गए धन पर निर्भर होते हैं। इसलिए, किसी को भी बेहतर अगले जन्म की आशा में मानसिक, शारीरिक या आर्थिक रूप से खुद का शोषण नहीं करवाना चाहिए। इसलिए, व्यक्ति को सोच-समझकर निर्णय लेने की आवश्यकता है। क्या अपने वर्तमान जन्म को सुधारना है या अगले जन्म को, जिसे किसी ने नहीं देखा है?

स्वर्गवासी

हमारे समाज में, किसी व्यक्ति के मरने के बाद उसे स्वर्गवासी कहा जाता है, भले ही इस जीवन में मरने वाला व्यक्ति जीवन भर नर्क का निवासी (बदतर परिस्थितियों का शिकार) रहा हो। धार्मिक अनुष्ठान पूरे होने से पहले ही उनके तथाकथित स्वर्गारोहण को स्वीकार कर लिया जाता है। वैसे भी आत्मविश्वास के साथ स्वर्गवासी बोलना/लिखना, कई प्रकार के शंके औरे प्रश्न पैदा करता है। मैं अक्सर सोचता हूँ कि एक व्यक्ति में स्वर्गवासी होने के लिए कौन से गुण होने चाहिए? और यह निर्णय किस आधार पर लिया जाता है?

अवतार तर्कशील (न्यूजीलैंड)
006421392147

हमारी ज़रूरत

हम चाहते हैं कि भारत का नया साहित्य,जीवन की मूलभूत समस्याओं को अपना विषय बनाए; ये हैं: हमारी रोटी की समस्याएँ, हमारी गरीबी, हमारा सामाजिक पतन और हमारी राजनीतिक गुलामी। जो कुछ भी हमें निष्क्रियता और अंधविश्वास की ओर ले जाता है, बेहद घटिया है। हम उसका विरोध करते हैं।

-मुंशी प्रेम चंद

पहली रेल यात्रा का संस्मरण

-अर्पिता

हाड़तोपा के पास नदी-पहाड़ और पलाश देखने की चमक से चमकते बच्चे अनगिनत अनुभव संसार में से कुछ अनुभव ख़ास होते हैं जिनके बारे में हम जीवन भर बात कर सकते हैं। वे हमारे साथ ऐसे चलते हैं जैसे कल की ही बात हो। सच में ये अनुभव हमें बनाने और आकार देने में बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं। पहला कदम चलना, दौड़ना, बोलना, गाना, पढ़ना, स्कूल जाना, चित्र बनाना, रंग पहचानना जहां परिवार की स्मृति का रौशन हिस्सा होता है वहीं साइकिल चलाना, पेड़ में चढ़ना, चुपके से-चोरी से फल तोड़ना, किसी खेल में अव्वल आना, स्कूल में शाबाशी पाना और मार खाने की पहली स्मृति बच्चों का खज़ाना होता है। इस अनुभव संसार की यह छोटी लिस्ट है जिसमें हम बहुत कुछ जोड़ सकते हैं। वैसे भी घर में जब उन स्मृतियों को हम दोहराते रहते हैं तो वो घर के किस्सों का हिस्सा बन जाता है और आगे-पीछे की जनरेशन उस ख़ास स्मृति से परिचित हो जाती है। इसमें सबसे ज़्यादा मज़ा लिया जाता है माता-पिता या टीचर से पड़ने वाली मार के किस्से में या शर्मिंदा कर देने वाली स्मृतियों के किस्सों में, ये सहज प्रचलन में देखने को मिलता है जिसे समय के साथ हँसकर हम सुन लेते हैं पर बाल-मन में इसका असर कैसे पड़ता होगा यह बताने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि वो अक्सर बच्चे के आत्मा-विश्वास में स्थायी दरार बन जाती है। बहरहाल अनुभव की दुनिया में एक ऐसे अनुभव को दर्ज़ करने जा रही हूँ जो मुझे भी रोमांचित किया।

नम्रता जो लिटिल इप्टा की साथी है जब 11 वर्ष की हुई तब पहली बार ट्रेन में चढ़ी। इससे पहले जब-जब कहानी, कविता या फिल्म में ट्रेन का ज़िक्र आता तो उससे वादा करते कि एक बार हम सब लोग ट्रेन से घाटशिला चलेंगे। ये कोशिश पूरी होती इससे पहले ही नम्रता को ओडिशा जाने का अवसर मिला। उसकी ट्रेन यात्रा के बारे में जानकर हम सभी बहुत खुश हुए। वो लगभग 6-7 दिन के लिए कालाहांडी ज़िला में सियारपाड़ा गाँव परिवार की शादी में गई। जब लौटी तो हमने एक दिन उसके और श्रवण से ट्रेन यात्रा के अनुभव सुनें। मार्च के अंतिम सप्ताह में ट्रेन से नम्रता गाँव गई उसके द्वारा सुने हुए अनुभव को यहाँ दर्ज़ कर रही हूँ -

नम्रता ने पहली बार स्टेशन के अंदर घुसने के बाद लगभग 4-6 घंटे प्लेटफ़ॉर्म में गुज़ारी। वहाँ कई लोग सोते दिखाई दिए तो उसे लगा कि पैसा नहीं होने की वजह से वे स्टेशन पर ही छूट गए हैं। स्टेशन की पटरी पर खड़ी ट्रेन को देख वो खुश हुई पर जब मालगाड़ी स्टेशन में आई तो आवाज़ से डर गई। उसकी माँ लक्ष्मी ने बताया कि डिब्बे एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। सर्र-सर्र करके ट्रेन निकल गई। नम्रता, श्रवण और उनकी माँ लक्ष्मी अपने रिश्तेदारों के साथ शादी में जा रहे थे उन लोगों की पहली ट्रेन छूट गई थी तो वे लोग चाचा लोगों से अलग हो गए थे। बचे लोगों की अलग डिब्बे में टिकट की थी, हम लोग जिस डिब्बे में थे वहाँ पानी, पंखा और खाना-पीना तो हुआ पर बाथरूम नहीं था। बहुत गन्दी बदबू आ रही थी। जब ट्रेन चली तो शुद्ध हवा मिली। सारे लोग सो रहे थे पर नम्रता को पूरी यात्रा में नींद नहीं आई। ट्रेन से उसने क्या-क्या देखा यह याद करके धीरे-धीरे उसने बताया कि उसने 40 बगुलों को उड़ते देखा, एक तालाब या नदी में डॉल्फिन चिड़िया देखी। तालाब देखा, खेत में एक लड़की और किसान देखा। नम्रता ने आगे बताया कि कमल भरा तालाब और ब्रिज के अलावा काली चिड़िया तो देखी ही और खेत में बिजूका भी देखा। इससे पहले नम्रता ने बिजूका के बारे में किताबों में ही पढ़ा था। 'बिजूका' यह शब्द पढ़ते और उसका चित्र देखते हुए कुछ बच्चे अपने गाँव को याद कर लेते हैं जो कभी एक या दो बार ही गाँव गए हुए हैं और खेत में बिजूका देखते हैं। ट्रेन में चढ़े थे तो उन्होंने क्या खाया यह भी वे याद करते हैं जैसे नम्रता ने बताया कि चना में जो मसाला डालकर आता है और समोसा भी खाया।

नम्रता ने अचानक से याद करते बताया कि पता है दीदी पहले पहाड़ हमारी ट्रेन से बहुत दूर था पर फिर एकदम नजदीक आ गया। जब ब्रिज से ट्रेन गुज़र रही थी तो पानी गहरा भरा था और उसमें मुझे एक मछली दिखाई दी। यह सब बताते अचानक से उसे याद आया कि कैसे उसे ट्रेन में चढ़ते हुए बहुत डर लगा

था। खिड़की के पास बैठकर चलती ट्रेन में उसे बहुत अच्छा लगा ज़रा भी बोर नहीं हुई। यह लिखते और उसे सुनते हुए महसूस हुआ कि पहले अनुभव की बात ही कुछ और होती है। रोज़ कमाने-खाने वाले वर्ग में जीवन का बड़ा हिस्सा दैनिक मजदूरी में ही गुजार जाता है उनके हिस्से नई बातों, जगहों, चीज़ों का प्रवेश नहीं ही होता है। जिन बातों को हम सोच नहीं पाते कि ज़रूरी अनुभव से समाज का कितना बड़ा वर्ग विशेषकर बच्चे वंचित हैं। जीवन जीने की सीमित सामर्थ्य की तरह ही उनकी कल्पना भी सीमा से बाहर नहीं उड़ पाती। बच्चों का भी वर्ग बना हुआ है जहाँ कुछ विशेषाधिकार और कुछ बुनियादी अधिकारों से वंचित वर्ग है। यहाँ यह रेखांकित करने की आवश्यता है कि बस अब टी वी और मोबाइल के माध्यम से वो खिड़की भी खुली कि कुछ नई बातों तक पहुँच बनीं है पर इस पहुँच में कितनी सकारात्मकता जुड़ी है ये अपने आप में बड़ा सवाल है क्योंकि पेट की आग बुझाने में आज भी वे उलझे हुए हैं।

बहरहाल लौटते हैं रेल यात्रा के उस अनुभव की तरफ जो कि श्रवण ने साझा किया। श्रवण जब छोटा था तो अपने दादा-दादी के साथ एक बार रेल यात्रा कर चुका था तो ट्रेन का ज़िक्र चलने पर हर बार वो चहक कर उसे याद करता था। इस बार की स्मृति में उसे खेत में दो गाय और एक बड़ी लकड़ी देखी जो गाय की गर्दन में बंधी हुई थी उसने पूछा कि वो क्या है असल में उसने कभी भी हल चलाता हुआ किसान नहीं देखा था तो बात करने का यह हासिल हुआ। जब पुल से ट्रेन गुज़री और नीचे नदी देखी तो उसके लिए बड़ा आश्चर्य का सबब हुआ उसने कहा कि पता है नीचे नदी बह रही है और उसके ऊपर हम लोग है, यह भी बताया कि एक नदी में पानी भी नहीं है।

2 अप्रैल, 2025 को हम लोगों ने नम्रता और श्रवण के ट्रेन के किस्से सुनें उस दिन हमारा युवा साथी रमन भी पहुंचा हुआ था तो उनके संस्मरण सुनने के बाद सभी से पूछा कि पहली ट्रेन यात्रा या पहली यात्रा जो अभी तक याद है, कब-कब की थी, क्या याद जुड़ी है उसे सबसे साझा करो। रमन ने जो बताया वो तो गजब अनुभव रहा। उसने बताया कि जब 12 वां जन्मदिन आया तो पापा उसे सुबह स्टील एक्सप्रेस से कलकत्ता लेकर गए और उसके बाद सीधे एयरपोर्ट ले गए। जहाँ कलकत्ता से हैदराबाद के फ्लाइट में पहली बार बैठा। यह उसके लिए सरप्राइज़ था जो कि उस उम्र में था जब उसे पापा ने कुछ भी नहीं बताया बस यह कहा था कि हम लोगों को चलना है। जब सुबह 11 बजे चेक इन कर रहे थे तो विराट कोहली दिखा और रॉयल चैलेंजर्स की पूरी टीम थी। विराट कोहली चश्मे और दाढ़ी मे था और बहुत युवा था। रमन को उसके पापा ने ऑटोग्राफ लेने को कहा पर अपने शर्मीलेपन की वजह से वो लिया नहीं।

इस अनुभव को सुनने के बाद सुरभी ने बताया कि ट्रेन में बेर वाली की उसे याद है। वर्षा की याद में मौसी की शादी की ट्रेन यात्रा दर्ज़ है। तब वो दूसरी या तीसरी में पढ़ती थी। एक ट्रांस वुमन हमारे डिब्बे में आई थी। उन्हें पैसा नहीं दिया फिर भी वर्षा के सिर पर हाथ आशीर्वाद दिया। उस समय के फोटो भी उसके पास है जब वे लोग थ्री सीटींग वाली चेयरकार ट्रेन में गाँव गए थे। सुजल जब पहली या दूसरी में था तब शादी में गाँव गया था। ट्रेन में कटलेट खाना याद है। लौटते समय ट्रेन में काजू बिस्किट खाया। गाँव के पोखर में अंब्रेला हुक और तार से फिशिंग रॉड देखी। तालाब में नहाने में बहुत डर लगा था। उसने उस दौरान शादी में किसी के मोबाइल में टॉकिंग टॉम खूब खेला था।

अब बारी आती है हमारे नन्हे-चुलबुले साथी अभिषेक की जो पढ़ता तो तीसरी में है पर अक्सर ऐसी-ऐसी बातों को याद करता है कि सहज आश्चर्य से भर जाते हैं। बड़े विश्वास और खुशी से उसने कहा कि वो बहुत बार ट्रेन में बैठा है। उसे ट्रेन से ब्रिज देखा अच्छा लगता है। जब ट्रेन में चढ़ते हैं और ट्रेन चलती है तो सूरज भी साथ-साथ चल रहा था। ओडिशा में उनका गाँव है जब भी ट्रेन में जाते हैं तो स्लाइस पीते हैं, समोसा-चटनी खाते हैं। मेचेदा (दादी) के साथ जाते हैं और जिल्पा/झिलपी यानि जलेबी ज़रूर खाते हैं।

बच्चों की यादों के सन्दूक में कितनी ऐसी बातें रहती हैं जिनके बारे में सुनने का एक अलग ही एहसास होता है। मुश्किल ज़िंदगी में कहीं न कहीं बढ़ती उम्र के साथ बचपन की यादें धुंधला न जाएं इसलिए अपने आसपास के बच्चों से बातें करना, किस्से सुनना ज़रूरी है उन्हें अपने जीवन अनुभव लिखने, दर्ज़ करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। तांकि वो बड़े लेखक बन सकें।

कुछ यूट्यूब चैनलों की जानकारी-1

-जसवंत मोहाली

तकनीक ने इंटरनेट के इस्तेमाल को आसान और सस्ता बना दिया है। आज सोशल मीडिया के बीच यूट्यूब बड़े पैमाने पर देखा जा रहा है। विज्ञान, इतिहास, धर्म, साहित्य, संगीत, कृषि, रसोई, खेल आदि,ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसके बारे में यूट्यूब पर अपार जानकारी न हो। अगर आप कोई कला या हुनर सीखना चाहते हैं या कहीं घूमने जाने के लिए यूट्यूब से जानकारी ले रहे हैं, तो थोड़ी सी मेहनत से आप सही जानकारी

पा सकते हैं। लेकिन ज्ञान -विज्ञान, साहित्य, इतिहास या समाचारों के लिए यहाँ ज्ञान और अज्ञान, सच और झूठ का घालमेल है। रेत और चीनी मिली हुई है, जिससे चीनी को अलग करने के लिए आपको चींटी जैसा गुण सीखना होगा।

बीबीसी की एक रिपोर्ट के अनुसार, यूट्यूब 100 से ज़्यादा देशों में देखा जाता है और इसे हर महीने 3 अरब लोग देखते हैं, जिनमें से ज़्यादातर 25-35 साल की उम्र के लोग हैं। भारत में सबसे ज़्यादा 40 करोड़ लोग यूट्यूब देखते हैं। हर मिनट यूट्यूब पर 500 घंटे का कंटेंट अपलोड किया जाता है।

टीवी न्यूज़ चैनल सरकारी कठपुतली बन गए हैं या फिर हिंदू-मुस्लिम शोर तक सीमित रह गए हैं, जिससे उनकी विश्वसनीयता खत्म हो गई है। सोशल मीडिया का सबसे ज़्यादा फ़ायदा कम संसाधनों वाले मानवतावादियों, तर्कशीलों और नास्तिकों को होने वाला है। सोशल मीडिया पर चल रही तार्किक बहस हमारे दायरे को भी व्यापक बनाती है और हमारे अनुभवों, हमारे तथ्यों, हमारे तर्कों को मज़बूत करती है।

हम जानते हैं कि ग़दर अख़बार और अन्य सरकार-विरोधी साहित्य कैसे गुप्त रूप से लोगों तक पहुँचाया जाता था। सोशल मीडिया ने लड़ाई के ढंगों और लड़ाई के मैदान को बदल दिया है। अब सरकार हथियारों से नहीं, बल्कि तथ्यों और तर्कों के प्रचार से डरती है।

ऐसे कई चैनल हैं जो राजनीतिक, सामाजिक, तार्किक और धर्मनिरपेक्ष मान्यताओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाए गए हैं। ज़्यादातर चैनलों के वीडियो के विषय मिश्रित होते हैं, कुछ वीडियो तत्कालीन मुद्दों पर, कुछ सामाजिक मुद्दों पर और अगला वीडियो इतिहास पर आधारित होगा। इस लेख में, हम उन चैनलों के बारे में जानकारी साझा कर रहे हैं जो राजनीतिक और तत्कालीन मुद्दों पर अपेक्षाकृत सही दृष्टिकोण से बात करते हैं ताकि हमारे पाठक YouTube चैनलों की भीड़ में से कुछ अच्छे चैनलों की पहचान कर सकें। (ब्रैकेट में उस चैनल के सब्सक्राइबर की संख्या भी दी गई है)

राजनीतिक विरोध/व्यंग्य और तत्कालीन विषयों पर:

नेहा सिंह राठौर (17 लाख)

अब रणभूमि ऐसी है जिसमें एक अकेली लड़की भी राज्य- सत्ता को वास्तविक आइना दिखा सकती है। बिहार के एक गाँव की 27 वर्षीय नेहा सिंह राठौर, यूपी चुनाव से पहले अपने दो मिनट के भोजपुरी गीत ''यूपी में काबा'' से मिनटों में वायरल हो जाती है।

''कोरोना से लाखण मर गई ले,
लाशण से गंगा भर गई ले,
कफ़न नोचत कूकर (कुत्ते) बिलार बा,
हे काबा, यूपी में काबा''।

भाषा की लोगों की जुबान पर छा जाने की ताकत ऐसी है कि इस गाने को दस मिलियन (एक करोड़) लोग देख चुके हैं। अब, पहलगाम में निर्दोष लोगों की हत्या को लेकर सरकार से पूछे गए सवाल के परिणामस्वरूप, उनके खिलाफ मामला दर्ज किया गया है।

रवीश कुमार ऑफिशयल (1.36 करोड़): इस YouTube चैनल को शुरू करने से पहले रवीश कुमार NDTV चैनल पर अपने प्राइम टाइम कार्यक्रम के कारण पहले से ही लोकप्रिय थे। जहाँ बाकी मुख्यधारा के टीवी चैनल केवल मोदी सरकार की प्रशंसा कर रहे थे, वहीं रवीश कुमार जनता के असली मुद्दों को बेबाकी से उठाते रहे और मोदी सरकार की सांप्रदायिक नीतियों का कड़ा विरोध करते रहे। फिर चैनल को मोदी सरकार के सबसे करीबी अरबपति पूंजीपति गौतम अडानी ने खरीद लिया। रवीश कुमार ने यह देखते हुए कि अडानी के स्वामित्व में अपनी बात कहना उनके लिए मुश्किल होगा तो उन्होंने एनडीटीवी से इस्तीफा दे दिया और अपना चैनल शुरू किया। सच बोलने के उनके साहस को लोगों ने भी उत्साह से सराहा और दो साल के अंदर ही उनके चैनल के सब्सक्राइबर्स की संख्या एक करोड़ को पार कर गई।

जब सभी न्यूज़ टीवी चैनल सरकारी भाषा बोलने लगे, तो रवीश ही थे जिन्होंने इस मीडिया के लिए गोदी मीडिया शब्द प्रयोग किया, जो अब एक प्रचलित शब्द बन गया है। उन्हें लगातार जान से मारने और उनके परिवार की महिलाओं के साथ बलात्कार करने की धमकियाँ मिल रही हैं। इसके बावजूद, वे इस यूट्यूब चैनल के माध्यम से तत्कालीन मुद्दों पर अपनी राय पूरी ईमानदारी से रख रहे हैं। हालाँकि, इस संभावना को देखते हुए कि इस चैनल की लोकप्रियता से घबराई सरकार कभी भी कोई खामी ढूंढकर इसे बंद कर सकती है, उन्होंने एक और हिंदी चैनल %नई सड़क% शुरू किया है। रवीश कुमार इस बात की एक मिसाल बन गए हैं कि हर पत्रकार की ज़बान लालच या धमकियों से बंद नहीं की जा सकती।

द देशभक्त The Deshbhakt (60 लाख): इस चैनल को आकाश बनर्जी चलाते हैं, जिनकी शैली अनूठी है और प्रस्तुति व्यंग्य भरपूर है। ज़्यादातर वीडियो राजनीति और तत्कालीन विषयों पर होते हैं। लेकिन 2019 के एक वीडियो में उन्होंने मोदी के ट्वीट्स में उठाए गए मुद्दों की अवसरवादिता को उजागर किया है। उनका कहना है कि कैसे पता चले कि मोदी जी के असली मन की बात क्या है? इसलिए वह प्रधानमंत्री के लगभग 18 हजार ट्वीट्स का विश्लेषण करते हैं और यह तथ्य सामने लाते हैं कि 2014 से पहले मोदी के ट्विटर पोस्ट के मुद्दे थे पाकिस्तान, चीन से ख़तरा, तेल की बढ़ती कीमतें थे जिन्हें 7 हजार से ज़्यादा बार रीट्वीट किया गया , जबकि 2014 के बाद मोदी के योगासन 27 हजार बार रीट्वीट किए गए, क्रिकेट टीम की जीत पर उनकी बधाई 20 हजार बार रीट्वीट की गई और असली मुद्दे गायब हो गए।

जनज्वार मीडिया (1.8 लाख) : यह चैनल पत्रकारिता का है और इसे अजय प्रकाश द्वारा संचालित करते हैं। जनज्वार का अर्थ है 'लोगउभार '। इसके अधिकांश वीडियो राजनीतिक होते हैं। इनमें से एक वीडियो में, आरएसएस छोड़ चुके दलित भंवर मेघवंशी, आरएसएस छोड़ने के कुछ कारण गिनाते हैं, जैसे आरएसएस का विज्ञान-विरोधी प्रचार, अन्य धर्मों को विदेशी धर्म बताकर उनकी निंदा, बौद्धिक शक्ति की बजाय शारीरिक शक्ति पर ज़ोर, तथाकथित ऊँची जातियों का प्रभुत्व, संविधान की बजाय मनुवादी विचार को प्राथमिकता देना (''मनुष्य तू महान रे तू मनु की संतान रे'' शाखा में गाया जाता है), धीरे-धीरे इतने कट्टर संघी पैदा हो जाते हैं जो मरने-मारने पर उतारू हो जाते हैं। वह कहते हैं, ''मुझे जातिगत भेदभाव का सामना करना पड़ा जो आरएसएस छोड़ने का मुख्य कारण बना।'' इस वीडियो को 10 लाख लोगों ने देखा।

ध्रुव राठी (2.94 करोड़) : यह चैनल राजनीति, धर्म, खेल समेत हर क्षेत्र के चलंत विषयों पर विश्वसनीय और तर्कसंगत जानकारी प्रदान करता है। एक ओर जहाँ इज़राइली हमलों पर वीडियो है, वहीं दूसरी ओर क्रिकेट के खेल में बहुत कम देशों की उपस्थिति, उससे मिलने वाला राजस्व, अफ़ग़ानिस्तान जैसा पिछड़ा देश कैसे क्रिकेट टीम तैयार कर सकता है, जैसे विषयों को भी विस्तार से प्रस्तुत किया जाता है। इस चैनल पर गांधी, सावरकर, वज़न कम करने के तरीके, अक्साईचिन पर चीन के हमले जैसे विभिन्न विषयों पर वीडियो उपलब्ध हैं।

उनके ज़्यादातर वीडियो 20 मिनट से कम समय के होते हैं। उनके हर वीडियो को लगभग एक लाख से अधिक लोगों ने देखा हैं। गाजा पर इज़राइल के हमलों के बाद, आम आदमी यह जानने को उत्सुक है कि गाजा में निर्दोष लोग, खासकर बच्चे और महिलाएं क्यों मारे जा रहे हैं। इज़राइल और फिलिस्तीन/गाजा के बीच संघर्ष के 4-5 वीडियो एक करोड़ से डेढ़ करोड़ लोगों ने देखे। ध्रुव राठी की खासियत यह

है कि उनके वीडियो देखने के बाद आपको बहुत स्पष्ट समझ बना लेते हो।

अजीत अंजुम (76 लाख): अजीत अंजुम दिल्ली की सीमाओं पर चल रहे किसान आंदोलन को बड़े पैमाने पर कवर करता रहा हैं। इससे किसान आंदोलन की जानकारी ज़्यादा लोगों तक पहुँची है, वहीं अजीत अंजुम के चैनल के दर्शकों की संख्या में भी ज़बरदस्त वृद्धि हुई। जब मुख्यधारा का मीडिया शाहीन बाग़ के विरोध प्रदर्शन पर चुप रहा, तब अजीत अंजुम ने इस विरोध प्रदर्शन पर विशेष रिपोर्टिंग की। अब, जैसे ही अजीत अंजुम ने चुनाव आयोग द्वारा बिहार में वोटों की धांधली का सच सोशल मीडिया पर रखा, उनके ख़िलाफ़ मामला दर्ज कर लिया गया।

न्यूज़लॉन्ड्री (23 लाख) : यह चैनल इंटरनेट पर खबरें लाने वाले शुरुआती चैनलों में से एक है और सबसे पहले जागरूक नई पीढ़ी के बीच लोकप्रिय हुआ। यह अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं में कार्यक्रम देता है। इनका मानना है कि खबर उसी के लिए होगी जो खबर की कीमत चुकाएगा। पूंजीपतियों के विज्ञापनों पर चलने वाले चैनल पूंजीपतियों के हितों की बात करेंगे। इसलिए यह अपने खर्चों को पूरा करने के लिए लोगों से धन लेने की नीति पर अमल करता है। यानी आप थोड़ी सी रकम देकर इस चैनल को सब्सक्राइब कर सकते हैं और कह सकते हैं, ''मेरे खर्च पर आजाद हैं खबरें।'' इस चैनल के संस्थापक और अब इसके सीईओ अभिनंदन सेखरी हैं, जिनके पास टीवी और फिल्मों का अच्छा खासा अनुभव है।

उनके अन्य कार्यक्रमों के अलावा, दो फ़ीचर कार्यक्रम काफ़ी लोकप्रिय हैं - अतुल चौरसिया द्वारा प्रस्तुत ''टिप्पणी'' और एंकर मनीषा पांडे द्वारा प्रस्तुत ''टीवी न्यूसेंस''। न्यूज़लॉन्ड्री हिंदी (1.2 लाख) भी लगभग दो साल पहले शुरू हुआ था। इस चैनल पर होने वाली चर्चाएँ रोचक और ज्ञानवर्धक होती हैं, जो आपको उत्तेजित नहीं करतीं बल्कि जगाती हैं। चलंत विषयों पर समाचार केवल स्टूडियो में बैठ कर ही नहीं बोले जाते , बल्कि ज़मीनी स्तर से रिपोर्ट होती है।

(अगले अंक में अंधविश्वासों का पर्दाफाश करने और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने वाले यूट्यूब चैनलों के बारे में जानकारी दी जाएगी)

अंधविश्वास के चलते

रिश्तेदार पुलिस कॉन्स्टेबल समेत तीन गिरफ्तार फूफा पर 9 साल के लापता बच्चे की बलि देने का आरोप

देवरिया के पटखौली गांव में 9 साल के आरुष गोंड की तंत्र-मंत्र के चक्कर में हत्या कर दी गई। बच्चा 16 अप्रैल की शाम घर से खेलने निकला था, लेकिन फिर लौटकर नहीं आया। पुलिस ने अपहरण का केस दर्ज कर जांच शुरू की, लेकिन तीन महीने तक कोई सुराग नहीं मिला। बीते कुछ दिनों में पुलिस ने रिश्तेदारों से पूछताछ तेज की और सीसीटीवी खंगाले। इसी बीच शक बच्चे के फूफा अतुल उर्फ इंद्रजीत पर गया, जो गोंडा में कॉन्स्टेबल है। पूछताछ में उसने बच्चे की हत्या की बात कबूल की। इसके बाद उसके मामा जयप्रकाश और दूसरे फूफा शंकर को भी गिरफ्तार कर लिया गया। आरोपियों ने बताया कि 19 अप्रैल को तंत्र-मंत्र के लिए हत्या कर शव को बगीचे में दबा दिया था। लेकिन पुलिस को खुदाई में शव नहीं मिला बच्चे के पिता और चाचा नाइजीरिया से लौटकर उसकी तलाश में जुटे थे। आरूष पहली क्लास पास कर चुका था और दूसरी में एडमिशन हुआ था, स्कूल बैग कॉपी-किताबें घर में वैसे ही रखी पड़ी हैं।

दिसंबर में शादी, अप्रैल में हत्या की

आरूष की छोटी बुआ की शादी दिसंबर 2024 में कॉन्सटेबल अतुल से हुई थी। तब से वह अक्सर ससुराल आता-जाता था। वहीं, बड़े फूफा शंकर बेरोज़गारी से परेशान था। वह पहले दिल्ली में काम करता था, फिर गोरखपुर आ गया। यहां भी ई-रिक्शा सुधारने का काम नहीं चला, तो वह झाड़-फूंक कराने वाले मामा जय प्रकाश के संपर्क में आया यही से तंत्र-मंत्र के लिए बच्चे की बलि देने के साजिश बनी।

भास्कर न्यूज़ (देवरिया)

रासूल हमजातोव

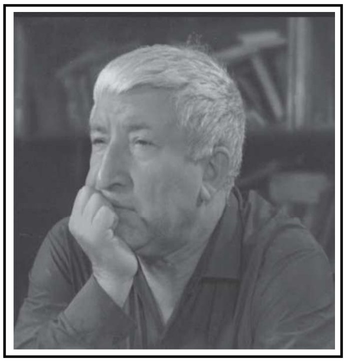

रासूल हमजातोव दागिस्तान के एक प्रसिद्ध अवार कवि, लेखक और राजनीतिक कार्यकर्ता थे, जिनके विचार अक्सर उनकी कविताओं, लेखों और सार्वजनिक भाषणों में परिलक्षित होते थे। उनके विचारों का मूल मानवतावाद, देशभक्ति और शांति में निहित था।

यहाँ उनके कुछ प्रमुख विचार दिए गए हैं :

* हमजातोव अपनी मातृभूमि, दागिस्तान, और अपने लोगों से गहरा प्रेम करते थे। उनकी कविताओं में अक्सर अपने पहाड़ों, गांवों, रीति-रिवाजों और इतिहास का गौरवपूर्ण वर्णन होता था। उनका मानना था कि व्यक्ति को अपनी जड़ों से जुड़ा रहना चाहिए और अपनी संस्कृति और विरासत का सम्मान करना चाहिए।

* वह सभी लोगों के बीच भाईचारे और शांति के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने विभिन्न संस्कृतियों के बीच सद्भाव और समझ पर जोर दिया। उनका मानना था कि लोगों को मतभेदों को भुलाकर एक-दूसरे के साथ मिलकर रहना चाहिए।

* हमजातोव ने युद्धों का कड़ा विरोध किया। उन्होंने युद्ध के विनाशकारी परिणामों और इससे होने वाले मानवीय दुख को अपनी कविताओं में कई बार दर्शाया है। उनका मानना था कि शांति ही मानवता के लिए एकमात्र रास्ता है।

* वह इतिहास और अतीत की यादों को बहुत महत्व देते थे। उन्होंने अक्सर शहीदों और उन लोगों को याद किया जिन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए बलिदान दिया था। उनका मानना था कि हमें अपने इतिहास से सीखना चाहिए और उन गलतियों को नहीं दोहराना चाहिए जिन्होंने दुख और विनाश लाया।

रसूल हमज़ातोव की कविता: ''क्रेन्स''

रसूल हमज़ातोव की यह कविता द्वितीय विश्व युद्ध में शहीद हुए सैनिकों को समर्पित है। इसकी भावनाओं ने लाखों लोगों के दिलों को छू लिया है।

मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि, सैन्य लड़ाइयों से,
वे वापस नहीं लौटे,
शायद, वे कब्रों में नहीं सो रहे हैं,
बल्कि, वे सफेद सारस के रूप में आकाश में उड़ते हैं।
वे बिना थके उड़ते हैं,
वे बिना थके उड़ते हैं,
दिन की शुरुआत से लेकर शाम तक,
हवा में आवाज़ देते हुए,
मुझे बुला रहे थे,
मानो उन्हें पता
हो कि मेरा समय निकट है।
और इसलिए,
तब से, कभी-कभी
मैं मौन मौन में शोक मनाता हूँ,
तारों भरे आकाश को देखते हुए,
जहाँ सारस एक पंक्ति में उड़ते हैं।
वे एक अंधेरी रेखा में उड़ते हैं,
जहाँ उनके बीच थोड़ा सा अंतर है,
शायद यही वो जगह है जहाँ
***जब मेरा अंत आएगा तो**
मैं भी उड़ जाऊंगा
मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि,
सैन्य लड़ाइयों से,
वे वापस नहीं लौटे,
शायद, वे कब्रों में नहीं सो रहे हैं,
बल्कि, वे सफेद सारस के रूप में आकाश में उड़ते हैं।

बच्चों की स्वतंत्रता का सिद्धांत : गिजू भाई

मैं यह मानकर लिख रहा हूँ कि आपको इस बात से कोई आपत्ति नहीं होगी कि आपने अभी तक स्वतंत्रता के सिद्धांत को ठीक से नहीं समझा है। आप ने बच्चे की स्वतंत्रता का अर्थ केवल इतना ही लिया है कि बच्चे को कुछ भी करने से न रोका जाए। बच्चा जो मन में आए वो करे और कहे। जहाँ स्वतंत्रता का यह अर्थ लिया जाता है, वहाँ माता-पिता परेशान रहते हैं और बच्चा भी खुश नहीं रहता।

बच्चों को हर काम करने से न रोका जाए, बल्कि उसे गलत काम करने से भी रोका जाना चाहिए। रोकने और टोकने में शालीनता होनी चाहिए। बच्चे की सुरक्षा का हमारा उद्देश्य यह है कि वह अपने शरीर, मन और बुद्धि का पूर्ण विकास कर सके, जो प्रत्येक जीव का प्राकृतिक अधिकार है। मनुष्य भी एक सामाजिक प्राणी है, जो सामाजिक परिवेश की उपेक्षा करके अपने ही विकास के प्रयासों में बाधाएँ उत्पन्न करता है। अपने शरीर को खतरे में डालकर विकास करने का प्रयास विकास के प्रतिकूल है।

बच्चे को ऐसा कुछ भी नहीं करने देना चाहिए जो असामाजिक लगे। उदाहरण के लिए, अगर कोई बच्चा कीचड़ से भरे जूते पहनकर कालीन पर चलने लगे, तो उसे रोकना चाहिए। अगर कोई बच्चा किसी को कोई काम न करने दे, तो उसे रोकना ज़रूरी है। इसी तरह, अगर वह अपने दोस्तों के कपड़ों पर स्याही गिराए, किसी को खरोंच दे या झगड़ा करे, तो उसे रोकना चाहिए।

लेकिन अगर कोई बच्चा अपना तोहफा किसी दोस्त को दे दे, अपने पिता का परना सिर पर पहन ले, या सिर से नंगा घूमे, तो उसे नहीं रोकना चाहिए क्योंकि इससे किसी सामाजिक नियम का उल्लंघन नहीं होता। अगर वह इस तरह खेल रहा है कि वह कुएँ में गिर सकता है , चाकू से शरारत करे या किसी खतरनाक जानवर के पास जाए, तो उसे रोकने में कोई बुराई नहीं है। लेकिन अगर हम सोचें कि सब्ज़ी काटते समय उसकी उंगली कट जाएगी, वह तेज़ी से भागेगा तो गिर जाएगा। अगर इस तरह के कामों से हम उसे रोकेंगे, तो हम उसकी आज़ादी छीन रहे होंगे।

अगर किसी बच्चे को ज़बरदस्ती प्रार्थना करने के लिए कहा जाए या उसे ज़बरदस्ती मंदिर भेजा जाए और उठते ही अपने माता-पिता को नमस्कार करने, उनके पैर छूने के लिए कहा जाए, तो यह उसकी आज़ादी में दखलअंदाज़ी के समान है। अब हम दूसरे बिंदु पर बात करेंगे। अगर हम बच्चे के कहने पर ही सब कुछ करते रहेंगे, तो वह सहारे का मोहताज बन जाएगा। जिस बच्चे की ज़्यादा सेवा होती रहेगी, वह दूसरों पर निर्भर रहने लगेगा। अगर बच्चा खुद काम करते हुए आत्मनिर्भर हो जाए, तो ठीक है, लेकिन उसे दूसरों पर निर्भर रहने वाला निकम्मा इंसान नहीं बनना चाहिए।

अब से आपको अपने बच्चे को जायज़ काम करने की आज़ादी देनी ही होगी। लेकिन भूलकर भी प्यार जताते हुए, बैठकर उसका सारा काम खुद न करें। आपका अंधा प्यार अंततः निंदनीय हो जाएगा। इसका मतलब यह नहीं कि आप बच्चे का कोई काम न करें। आप उस काम में उसकी मदद कर सकते हैं जो बच्चा खुद नहीं कर सकता। मैं बच्चे की मदद करने के खिलाफ नहीं हूँ, लेकिन हमारी मदद ऐसी होनी चाहिए जिससे बच्चा आत्मनिर्भर बन सके।

बच्चों से कई बार काम इस लिए गलत हो जातें हैं। कई बार उन्हें इन कामों को करने का सही तरीका पता नहीं होता। बच्चे को चीज़ों का सही इस्तेमाल करना और किसी भी कार्य करने का ढंग सिखाकर उसे सही दिशा दी जा सकती है। कई बार बच्चा अपनी क्षमता से ज़्यादा बड़े काम को करने की कोशिश करता है और काम बिगाड़ देता है। उदाहरण के लिए जिन बच्चों को पेंसिल पकड़नी नहीं आती, उनके लिए वाटर कलर से पेंटिंग करना मुश्किल हैं। हम इस समस्या का समाधान बच्चे को रंगीन पेंसिल देकर कर सकते हैं। मतलब बच्चे की हर समस्या के लिए रास्ते ढुंढने की जरुरत है।

तर्कशील पथ पढ़ो, तकशील बनो।

सामाजिक बहिष्कार कुरीति

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डॉ. दिनेश मिश्र ने कहा कि, हमारे यहाँ सामाजिक और जातिगत स्तर पर सक्रिय पंचायतों द्वारा सामाजिक बहिष्कार के मामले लगातार सामने आते रहते हैं। पिछले दिनों जशपुर में 1 परिवार, कोंडागांव में 1 परिवार, तथा केशकाल में 10 परिवारों, सरायपाली में 5 परिवारों, बगीचा कांसाबेल में 1 परिवार का सामाजिक बहिष्कार करने की घटना सामने आई है ग्रामीण अँचल में ऐसी घटनाएँ बहुतायत से होती है जिसमें जाति व समाज से बाहर विवाह करने, समाज के मुखिया का कहना न मानने, पंचायतों के मनमाने फरमान व फैसलों को सिर झुकाकर न पालन करने पर किसी व्यक्ति या उसके पूरे परिवार को समाज व जाति से बहिष्कार कर दिया जाता है व उसका समाज में हुक्का पानी बंद कर दिया जाता है। कुछ मामलों में तो स्वच्छता मित्र बनने पर, तो कहीं आर.टी.आई. लगाने पर भी समाज से बहिष्कृत कर दिया गया है। पूरे प्रदेश में 30 हजार से अधिक व्यक्ति सामाजिक बहिष्कार जैसी कुरीति के शिकार हैं। अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति सामाजिक बहिष्कार जैसी सामाजिक कुरीति के खिलाफ जनजागरण एवं प्रताड़ित लोगों की मदद के लिए पिछले कुछ वर्षों से लगातार कार्य कर रही है। समिति सभी जनप्रतिनिधियों को पत्र लिखकर आगामी विधानसभा सत्र में सामाजिक बहिष्कार के खिलाफ कानून बनाने की मांग कर रही है। इसी परिप्रेक्ष्य में महाराष्ट्र विधानसभा में सभी सदस्यो ने सामाजिक बहिष्कार प्रतिषेध अधिनियम के संबंध में महत्वपूर्ण कानून को बिना किसी विरोध के सर्वसम्मति से11 अप्रैल 2016 को पारित कर दिया तथा 20 जून 2017 को माननीय राष्ट्रपति द्वारा मंजूरी मिलने के बाद 3 जुलाई 2017 से पूरे महाराष्ट्र में लागू कर दिया गया इसी प्रकार हमारे प्रदेश में भी सामाजिक बहिष्कार प्रतिषेध अधिनियम की महती आवश्यकता महसूस की जा रही है।

डॉ. मिश्र ने कहा कि सामाजिक बहिष्कार होने से दंडित व्यक्ति व उसका परिवार गाँव में बड़ी मुश्किल में पड़ जाता है। पूरे गाँव-समाज में कोई भी व्यक्ति बहिष्कृत परिवार से न ही कोई बातचीत करता है और न ही उससे किसी प्रकार का व्यवहार रखता है। उस बहिष्कृत परिवार को हैन्ड पम्प से पानी लेने, तालाब में नहाने व निस्तार करने, सार्वजनिक कार्यक्रमों में शामिल होने, पंगत में साथ बैठने की मनाही हो जाती है। यहाँ तक उसे गाँव में किराना दुकान में सामान खरीदने, मजदूरी करने, नाई, शादी-ब्याह जैसे सामाजिक सार्वजनिक कार्यक्रमों में भी शामिल होने से वंचित कर दिया जाता है जिसके कारण वह परिवार गाँव में अत्यंत अपमानजनकस्थिति में पहुँच जाता है तथा गाँव में रहना मुश्किल हो जाता है। सामाजिक पंचायतें कभी-कभी सामाजिक बहिष्कार हटाने के लिए भारी जुर्माना, अनाज, शारीरिक दंड व गाँव छोड़ने जैसे फरमान जारी कर देती है।

डॉ. मिश्र ने आगे कहा कि सामाजिक बहिष्कार के कारण विभिन्न स्थानों से आत्महत्या, हत्या, प्रताड़ना व पलायन की खबरें लगातार समाचार पत्रों में आती रहती है। इस संबंध में अब तक कोई सक्षम कानून नहीं बन पाया है इसलिए ऐसे मामलों में कोई उचित कार्यवाही नहीं हो पाती है न ही रोकथाम का कोई प्रयास होता है। सामाजिक बहिष्कार के मामलों के आँकड़े को लेकर नेशनलक्राइम रिकार्ड ब्यूरो, राज्य सरकार, पुलिस विभाग के पास कोई अब तक रिकार्ड जानकारी नहीं है ऐसी जानकारी सूचना के अधिकार के अंतर्गत प्राप्त हुई है। जबकि ऐसी घटनाएँ लगातार होती है। इस संबंध में सामाजिक बहिष्कार प्रतिषेध अधिनियम को आगामी विधानसभा सत्र में सामाजिक बहिष्कार के संबंध में सक्षम कानून बनाने के लिए पहल करें ताकि अनेक प्रताड़ितों को न्याय मिल सके।

रिपोर्ट : अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति, छत्तीसगढ

उसको (भगत सिंह) लिखने का बहुत शौक था। जब भी वे कानपुर आते, अपने साथ दो-चार किताबें ज़रूर लाते। बाद में, जब मुझे उनके गुप्त वास जीवन के दौरान उनके साथ रहने का मौका मिला, तो मैंने देखा कि वे चौबीसों घंटे एक पिस्तौल और एक किताब साथ रखते थे। मुझे एक भी ऐसा मौका याद नहीं जब मैंने उनके साथ कोई किताब न देखी हो।

-शिव वर्मा

आई.आई.टी गुवाहाटी ने खोजी सस्ती, नई तकनीक जिससे अब महज 20 रूपए में साफ होगा 1,000 लीटर पानी

-ललित मौर्या

भारत के कई राज्यों में आज भी बड़ी आबादी ऐसे पानी पर निर्भर हैं जिसमें फ्लोराइड और आयरन का स्तर बेहद अधिक है। इस जहरीले पानी को सेवन हड्डियों और शरीर के लिए बेहद नुकसानदायक होता है। लेकिन अब आई.आई.टी. गुवाहाटी के वैज्ञानिकों ने इस समस्या का समाधान खोज लिया है।

आईआईटी गुवाहाटी के वैज्ञानिकों ने एक ऐसा कम्युनिटी-स्केल वॉटर ट्रीटमेंट सिस्टम विकसित किया है, जो हर दिन 20,000 लीटर फ्लोराइड और आयरन युक्त दूषित भूजल को साफ कर सकता है। ऐसे में यह तकनीक कम लागत पर दूरदराज के गांवों और कस्बों में सुरक्षित पीने का पानी पहुंचाने में बेहद कारगर साबित हो सकती है।

कितनी गंभीर है फ्लोराइड की समस्या ?

फ्लोराइड एक मिनरल है जिसका इस्तेमाल आमतौर पर टूथपेस्ट, कीटनाशकों, उर्वरकों और कुछ औद्योगिक प्रक्रियाओं में होता है। यह प्राकृतिक रूप से या कृषि और उद्योग जैसी मानव गतिविधियों के कारण भूजल में घुल सकता है। ज्यादा फ्लोराइड युक्त पानी पीने से स्केलेटल फ्लोरोसिस नामक गंभीर बीमारी हो सकती है। इस बीमारी में हड्डियां सख्त हो जाती हैं और जोड़ों में अकड़न और दर्द होता है।भारत के कई राज्यों जैसे राजस्थान, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, हरियाणा और गुजरात में यह समस्या गंभीर है।

साझा जानकारी के मुताबिक आईआईटी गुवाहाटी द्वारा विकसित यह तकनीक चार मुख्य चरणों में पानी को शुद्ध करती है। इसमें पहले चरण में विशेष उपकरण की मदद से पानी में ऑक्सीजन मिलाई जाती है ताकि घुला हुआ आयरन निकल जाए। इस चरण को एरोशन कहते हैं। इसके बाद इलेक्ट्रो कोएगुलेशन का चरण आता है, जिसमें एल्यूमीनियम इलेक्ट्रोड से हल्का विद्युत प्रवाह भेजा जाता है, जिससे पानी में मौजूद दूषित तत्व आकर्षित होकर जुड़ जाते हैं।

इसके बाद फ्लोकुलेशन और सेटलिंग की बारी आती है। इस दौरान जुड़े हुए कण बड़े गुच्छों में बदल जाते हैं और फ्लोकुलेशन चैंबर में नीचे बैठ जाते हैं। इसके बाद अंत में पानी को कोयले, रेत और बजरी की कई परतों वाले फिल्टर से गुजारा जाता है, जिससे बची हुई अशुद्धियां भी हट जाती हैं।

किफायती होने के साथ है प्रभावी

आई.आई.टी. गुवाहाटी द्वारा साझा जानकारी से पता चला है कि इस तकनीक की सबसे खास बात किफायती होना है। यह महज 20 रुपए के खर्च पर 1,000 लीटर पानी साफ कर सकती है। इतना ही नहीं इसे चलाने में बहुत कम निगरानी की जरूरत होती है और इसका जीवनकाल करीब 15 साल है। हालांकि इसमें हर छह महीने में इलेक्ट्रोड बदलने की आवश्यकता होती है, जिसे समय पर बदलने के लिए एक सेफ्टी अलर्ट सिस्टम भी जोड़ा गया है।

इस तकनीक को काकाटी इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड द्वारा असम के चांगसारी इलाके में पब्लिक हेल्थ इंजीनियरिंग विभाग के सहयोग से पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर स्थापित किया गया है। जहां लगातार 12 सप्ताह तक इसका सफल परीक्षण किया गया। इस दौरान बेहतर नतीजे सामने आए। टेस्ट में यह सिस्टम 94 फीसदी आयरन और 89 फीसदी फ्लोराइड को पानी से हटाने में सफल रहा, जिससे पानी भारतीय मानकों के अनुसार सुरक्षित हो गया।

आने वाले समय में और उन्नत होगी तकनीक

भविष्य की संभावनाओं पर बात करते हुए प्रोफेसर मिहिर कुमार पुरकैत ने जानकारी दी, ''हम इस सिस्टम को सौर या पवन ऊर्जा से चलाने की दिशा में भी काम कर रहे हैं। इसके साथ ही इलेक्ट्रो कोएगुलेशन प्रक्रिया में बनने वाली हाइड्रोजन का भी उपयोग करने की योजना है।

साथ ही, रियल-टाइम सेंसर और ऑटोमैटिक कंट्रोल जैसी स्मार्ट तकनीकों को जोड़कर हम इसे और भी कम देखरेख में चलने योग्य बना सकेंगे, ताकि यह दूर-दराज और जरूरतमंद इलाकों में भी प्रभावी ढंग से काम कर सके।'' इसके अलावा, वैज्ञानिक इस सिस्टम को अन्य जल शुद्धिकरण तकनीकों के साथ जोड़ने पर काम कर रहे हैं, ताकि इसकी

कार्यक्षमता और बढ़ाई जा सके। इस बारे में किए अध्ययन के नतीजे प्रतिष्ठित जर्नल एसीएस ईएसएंडटी वाटर में प्रकाशित हुए हैं। इस तकनीक का विकास आईआईटी गुवाहाटी के केमिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर मिहिर कुमार पुरकैत, डॉक्टर अन्वेशन, डॉक्टर पियाल मंडल और रिसर्च स्कॉलर मुकेश भारती ने मिलकर किया है।

देखा जाए तो आईआईटी गुवाहाटी की यह पहल न केवल विज्ञान की दृष्टि से बड़ी उपलब्धि है, बल्कि यह देश के उन लोगों के लिए भी राहत की उम्मीद है जो आज भी साफ पानी के इंतजार में हैं। यह तकनीक गांव-गांव में स्वच्छ जल की रोशनी लेकर आ सकती है।

('डाउन-टू-अर्थ' से साभार)

रिसर्च : घर का काम करने एवं पैदल चलने वालों को नहीं होता है कैंसर का खतरा, विशेषज्ञों ने किया खुलासा

-प्रिया गौतम

दौड़-दौड़ कर घरेलू काम करने, कई-कई किलोमीटर पैदल चलने को अगर आप बोझ, तनाव और परेशानी मानते हैं तो अब से ऐसा सोचना भी बंद कर दीजिए। आपको शायद पता भी नहीं है कि रोजाना की यही जीतोड़ मेहनत आपको तमाम तरह के खतरनाक कैंसरों से बचा रही है। ऐसा हम नहीं कह रहे हाल ही में 85000 लोगों पर की गई रिसर्च कह रही है और उसकी पुष्टि एम्स दिल्ली के सीनियर ऑन्कोलॉजिस्ट कर रहे हैं।

रिसर्च बताती है कि जो लोग रोजाना हल्की, मध्यम और जोरदार वाली शारीरिक गतिविधियों में जुटे रहते हैं उनमें कैंसर का खतरा उन लोगों के मुकाबले कम होता है जो सुस्त या बैठे रहते हैं। ब्रिटिश जर्नल ऑफ स्पोर्ट्स मेडिसिन में छपी यह रिसर्च कहती है कि रोजाना छोटे-मोटे काम या घरेलू काम करने वालों में 13 प्रकार के कैंसर की संभावना कम देखी गई है।

महिलाओं में कैंसर का 50 फीसदी रिस्क कम

यूके में हुई इस रिसर्च की पुष्टि एम्स के डॉक्टर भी कर रहे हैं। उनका कहना है कि शारीरिक गतिविधियों से कैंसर होगा ही नहीं, ऐसा नहीं है लेकिन कैंसर खतरा 50 फीसदी तक टल सकता है।

एम्स नई दिल्ली डॉ. बी. आर. ए. आई. आर. सी. एच. में रेडिएशन ऑन्कोलॉजी में असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अभिषेक शंकर कहते हैं कि शारीरिक गतिविधियाँ न केवल कैंसर के रिस्क को कम कर सकती हैं बल्कि यह कैंसर मरीजों के लिए भी फायदेमंद हैं और इस बीमारी की पुनरावृत्ति को भी रोकती हैं। भारतीय महामारी विज्ञान के आंकड़े बताते हैं कि जो भारतीय महिलाएं रोजाना 5-6 घंटे जोरदार तरीके से घरेलू कामों में जुटी रहती हैं उनमें ब्रेस्ट कैंसर होने की संभावना उन महिलाओं के मुकाबले 50 फीसदी कम होती है जो 3 घंटे से भी कम समय तक फिजिकल एक्टिविटीज करती हैं।

शहरी महिलाओं में भी मध्यम या उच्च स्तर की फिजिकल एक्टिविटीज करने के बाद कैंसर के रिस्क में करीब 19 फीसदी की कमी देखी गई है। सबूत बताते हैं कि हाई लेवल की शारीरिक गतिविधियां बेहद खतरनाक ब्रेस्ट, लंग, कोलन, गैस्ट्रिक और लिवर कैंसर आदि के खतरे को कम करने में जबर्दस्त भूमिका निभाती हैं। ये आंकड़े इस बात पर जोर देते हैं कि पैदल चलना, घरेलू काम करना, सक्रिय आवागमन और मनोरंजक गतिविधियों को बढ़ाने को राष्ट्रीय कैंसर रोकथाम रणनीतियों में प्राथमिकता देनी चाहिए।

कैंसर मरीजों को भी बड़ा फायदा

रिसर्च बताती है कि 13 तरह के कैंसर से पीड़ित 2633 मरीजों का करीब 5.8 साल तक फॉलोअप करने के बाद देखा गया कि जिन लोगों ने रोजाना कुछ न कुछ शारीरिक मेहनत की उनमें दोबारा कैंसर होने का खतरा उन मरीजों के मुकाबले 26 फीसदी कम था, जिन्होंने इस अवधि में बहुत कम शारीरिक गतिविधियां या काम किया।

('न्यूज़ 18 हिंदी' से साभार)

मासिक धर्म : मौन की जंजीरों को कब तोड़ेगी चेतना की क्रांति

-बोधार्थी रौनक़

भारतीय समाज में कुछ विषय ऐसे हैं, जो शोर से नहीं, बल्कि फुसफुसाहटों में दबे रहते हैं – मासिक धर्म उन्हीं में से एक है। यह वह प्राकृतिक प्रक्रिया है जो नारी देह को सृजनशील बनाती है, मातृत्व का द्वार खोलती है, किंतु यह विडंबना है कि वही प्रक्रिया जिसे प्रकृति ने जीवन के संचार का आधार बनाया, उसे समाज ने अपवित्रता, गंदगी और लज्जा का वस्त्र पहना दिया।

यह केवल रक्त नहीं है – यह स्त्री की चेतना, उसकी जीवनी-शक्ति और प्रकृति से उसका संवाद है। किंतु यह संवाद हमारे सामाजिक तानों-बानों में कलंक बनकर गूंजता है। जब कोई बालिका प्रथम बार मासिक धर्म से गुजरती है, तो वह उत्सव नहीं, संकोच और परेशानी से घिर जाती है। संवेदनशीलता के स्थान पर उसे उपेक्षा मिलती है, सहयोग की जगह शंका, और जिज्ञासा के बदले तिरस्कार।

एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत की 71 प्रतिशत किशोरियाँ ऐसी हैं जिन्हें मासिक धर्म की पूर्व जानकारी नहीं होती। UNICEF की रिपोर्ट (2022) बताती है कि हर वर्ष दो करोड़ तीस लाख (23 मिलियन) बालिकाएँ केवल मासिक धर्म के कारण विद्यालय छोड़ देती हैं। यह आंकड़ा किसी शरीर की पीड़ा से अधिक – शिक्षा, आत्म-सम्मान और स्वावलंबन के अवसरों की हत्या का प्रतीक है।

हम उस समाज का हिस्सा हैं जहाँ एक ओर देवी को रक्तचंदन अर्पित किया जाता है, वहीं दूसरी ओर जब कोई नारी अपने मासिक चक्र में होती है, तो उसे रसोई और यहां तक कि चारपाई तक से बहिष्कृत कर दिया जाता है। यह कैसी विडंबना है कि जो स्त्री जीवन की जननी है, वही सामाजिक संरचना में अपवित्र मानी जाती है?

कई रूढ़ मान्यताएँ यह दावा करती हैं कि मासिक धर्म के समय स्त्री की ऊर्जा इतनी तीव्र हो जाती है कि ईश्वर उसे सहन नहीं कर सकते। यह कथन सुनकर प्रतीत होता है जैसे ऊर्जा कोई अभिशाप हो। यह तर्क नहीं, भय है – उस शक्ति का, जिसे नारी अपने रक्त के साथ वहन करती है। यह कहना कि ''ईश्वर स्त्री की ऊर्जा को सहन नहीं कर सकते'', वस्तुत: उस पुरुषप्रधान व्यवस्था की मुखर अभिव्यक्ति है, जो स्त्री के आत्मविश्वास और चेतना को कुंद करना चाहती है।

उपमा दें तो यह ऐसा है मानो कोई कहे कि ''तेज़ जलता दीपक कमरे को जला देगा, इसलिए बुझा दो।'' दीपक को बुझाने की जगह उसकी लौ को दिशा देना अधिक विवेकपूर्ण होगा।

आज भी भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में 68 प्रतिशत महिलाएँ गंदे कपड़े व पुराने अख़बारों का उपयोग करती हैं, जिससे वे संक्रमण और योनिजनित रोगों की शिकार बनती हैं। यह केवल आर्थिक विषमता नहीं, जागरूकता के अभाव की भी त्रासदी है।

2018 में प्रदर्शित फिल्म ''Padman' केवल एक सिनेमा नहीं, बल्कि इस चुप्पी पर चोट थी। अरुणाचलम मुरुगनाथम की वास्तविक जीवन-गाथा, जिन्होंने अपनी पत्नी की पीड़ा देखकर सेनेटरी नैपकिन बनाने का सस्ता उपकरण बनाया, समाज को आइना दिखाती है। शुरुआत में उन्हें गाँव से बहिष्कृत किया गया, 'पागल' घोषित किया गया। लेकिन वही व्यक्ति आज मासिक स्वच्छता आंदोलन का नायक है। उनकी कहानी इस बात की साक्षी है कि परिवर्तन लाने वाला समाज में पहले हास्यास्पद, फिर विरोधास्पद और अंतत: पूजनीय बनता है।

''Period. End of Sentence'', एक डॉक्यूमेंट्री जिसने ऑस्कर पुरस्कार जीता, भारत की ग्राम्य स्त्रियों की सच्चाई को विश्वपटल पर ले आई। यह मात्र एक फ़िल्म नहीं, बल्कि उन स्त्रियों की पुकार थी जिनकी आवाज़ सदियों से दबा दी गई थी।

हम यदि संकल्प लें तो यह विषय मौन का नहीं, संवाद का बन सकता है। विद्यालयों में प्रजनन स्वास्थ्य पर खुली चर्चाएँ हों। शिक्षक-शिक्षिकाओं को प्रशिक्षित किया जाए कि वे इस विषय को झिझक नहीं, सहृदयता से लें। पंचायत स्तर पर मासिक स्वच्छता मिशन की तरह योजनाओं का संचालन हो। सरकार की 'सुखद योजना', 'फ्री पैड योजना' आदि सराहनीय कदम हैं, परंतु जब तक ये योजनाएँ काग़ज़ से

उतरकर ज़मीन तक नहीं पहुँचतीं, तब तक परिवर्तन केवल भाषणों में रहेगा।

मासिक धर्म से जुड़ी धार्मिक वर्जनाओं को भी तोड़ने की आवश्यकता है। बच्चियों में इसके बारे में वैज्ञानिक समझ पैदा करने की ज़रूरत है। इस ज़रूरी प्रक्रिया के बारे में जानकारी अति आवश्यक है।

अब समय है जब पुरुष भी इस विषय पर मौन तोड़ें। जब भाई बहन से इस विषय पर खुलकर बात करे, पिता बेटी को पैड खरीदकर दे, और शिक्षक छात्राओं के लिए यह कहें कि ''यह स्वाभाविक है'' – तभी समाज सचमुच संवेदनशील कहलाएगा।

एक स्वस्थ समाज वही होता है जहाँ जैविक सत्य को रूढ़ि नहीं, विज्ञान से देखा जाए। मासिक धर्म को पाप, लज्जा और अपराधबोध से जोड़ना स्त्रीत्व का अपमान है।

हमें समझना होगा कि यह रक्त कोई दुर्बलता नहीं, बल्कि प्रकृति की कविता है, जो हर स्त्री के भीतर हर माह लिखी जाती है। और इस कविता को पढ़ने का साहस यदि समाज नहीं जुटा पा रहा, तो उसे सभ्य कहने का कोई अधिकार नहीं ।

नारी सम्मान केवल नारों में नहीं, उसके शरीर की स्वाभाविक प्रक्रियाओं को गरिमा और सहजता से स्वीकारने में निहित है। मासिक धर्म पर मौन नहीं, संवाद हो; शर्म नहीं, समझदारी हो – यही एक प्रगतिशील, वैज्ञानिक और संवेदनशील समाज की असल पहचान होगी।

जिला-गिरिडीह, झारखण्ड।
दूरभाष संख्या-6209186059

चेतना और समाज

चेतना शुरू से ही समाज की उपज है और जब तक मनुष्य का अस्तित्व है, तब तक बनी रहेगी।

मनुष्य चेतना उसके अस्तित्व का निर्धारण नहीं करती; इसके विपरीत, उसका सामाजिक अस्तित्व उसकी चेतना का निर्धारण करता है।

-मार्क्स-एंगेल्स

अच्छे शौक पालें, तंदुरुस्त रहेगा दिमाग

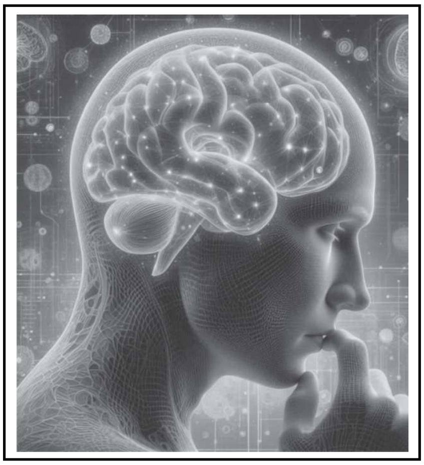

कैंब्रिज विश्वविद्यलाय के एक अध्ययन में पाया गया है कि उम्र के साथ-साथ दिमाग का आकार भी छोटा होता जाता है, लेकिन कुछ लोगों की स्मरण शक्ति और आई क्यू उम्र बढ़ने के बावजूद अच्छी बनी रहती है। शोधकर्ताओं के अनुसार युवावस्था में दिमाग को ज्यादा इस्तेमाल करने से दिमाग लचीला बना रहता है। 'न्यूरोबायोलॉजी ऑफ एजिंग जर्नल' में प्रकाशित इस अध्ययन से जुड़े डेनिस चान के अनुसार, हमारा दिमाग कुछ हार्डवेयर के साथ ही शुरुआत करता है, लेकिन इसे और अधिक मजबूत बनाया जा सकता है। इसे संज्ञानात्मक रिजर्व कहा जाता है। डॉक्टर चान का कहना है कि 35 से 65 साल के बीच आप जो कुछ करते हैं, उससे 65 से 88 साल की उम्र के 205 लोगों के दिमाग का एमआरआई किया। इसके बाद उनका आईक्यू टेस्ट लिया गया और उनके शौक के बारे में पूछा गया। उनके शौक को बौद्धिक, शारीरिक और सामाजिक गतिविधियों की तीन श्रेणियों में बांटा गया। शोध में पाया गया कि जवानी में की गई गतिविधियों के बाद में उनका आई क्यू निर्धारित हुआ। इससे पहले अन्य शोध में पाया गया था कि जो लोग शिक्षा में ज्यादा समय बिताते हैं, चुनौतीपूर्ण काम करते हैं, उन लोगों में बाद में डिमेंशिया का खतरा भी कम होता है। डॉक्टर चान इस अध्ययन से काफी उत्साहित हैं। उनके अनुसार इससे फर्क नहीं पड़ता कि आप क्या काम करते हैं या कहाँ रहते हैं। परिजनों से बात करना या किताब पढ़ने में कुछ खर्च नहीं होता। यह सब आदतें आपके लिए अच्छी हैं।

असमानी बिजली

-रणधीर गिलपत्ती

बारिश, हवा, तूफ़ान, बिजली, भूकंप, सुनामी आदि प्राकृतिक घटनाएँ हैं जो मानवीय सोच से स्वतंत्र रूप से घटित होती हैं।

कभी-कभी ये घटनाएँ पृथ्वी पर जीव जगत के लिए आपदा के रूप में आती हैं और बड़े पैमाने पर विनाश का कारण बनती हैं। प्राचीन काल से ही, जब विज्ञान ने इतनी प्रगति नहीं की थी, ये प्राकृतिक आपदाएँ मनुष्य के लिए भय, संकट और रहस्य का कारण रही हैं, इसलिए मनुष्य ने इन घटनाओं को अपने तथाकथित भाग्य और अदृश्य दैवीय शक्तियों के प्रकोप से जोड़ लिया। मनुष्य की ऐसी काल्पनिक अवधारणाओं ने कई प्रकार के अंधविश्वासों को जन्म दिया। लेकिन जैसे-जैसे विज्ञान ने प्रगति की, इन घटनाओं के घटित होने के पीछे कारणों और कारकों को समझा जाने लगा। इस प्रकार, विज्ञान की समझ ने प्राकृतिक घटनाओं के बारे में बनी काल्पनिक धारणाओं को खारिज करके सही ज्ञान को जन्म दिया। इस लेख में, हम आसमानी बिजली गिरने की घटना को समझने का प्रयास करेंगे।

आपने कभी न कभी यह अनुभव ज़रूर किया होगा कि रात में जब आप कुछ ख़ास तरह के सिंथेटिक रेशमी या ऊनी कपड़े उतारते हैं, तो शरीर से उनके घर्षण के कारण तिड़-तिड़ जैसी आवाज़ निकलती है और कभी-कभी आपको कुछ चमक भी दिखाई देती है या आपको अपने शरीर के रोंगटे खड़े होते हुए महसूस होते हैं। इसके अलावा, आपने कहीं घर्षण विद्युत के बारे में पढ़ा होगा और यह भी देखा होगा कि अगर आप प्लास्टिक की कंघी अपने बालों में रगड़ें और उसे कागज़ के टुकड़ों के पास लाएँ, तो वे टुकड़े कंघी की ओर आकर्षित हो जाते हैं। इसका कारण यह है कि जब कुछ पदार्थों को आपस में रगड़ा जाता है, तो एक पदार्थ के परमाणुओं से इलेक्ट्रॉन टूटकर दूसरे पदार्थ में चले जाते हैं। अब आप जानते ही हैं कि इलेक्ट्रॉनों में ऋणात्मक आवेश होता है, इसलिए जिस पदार्थ में इलेक्ट्रॉनों की अधिकता होती है, उस पर ऋणात्मक आवेश होता है, जबकि जिस पदार्थ में इलेक्ट्रॉनों की कमी होती है, उस पर धनात्मक आवेश होता है।

अब आप पूछ सकते हैं कि इसका आसमानी बिजली गिरने से क्या संबंध है? दरअसल, बादलों में होने वाली गड़गड़ाहट और बिजली ऊनी/रेशमी कपड़ों के घर्षण से उत्पन्न होने वाली तिड़-तिड़ की स्थूल ध्वनि का ही एक रूप है। इसी प्रकार, आसमानी बिजली भी अनेक विद्युत चिंगारियों का एक प्रबल डिस्चार्ज है, जो विद्युत धारा प्रवाहित करने की एक सरल प्रक्रिया है। बादलों में बिजली गिरने और गड़गड़ाहट का कारण आकाश में विशेष प्रकार के आवेशित बादलों का निर्माण होता है। इस प्रकार के बादल के ऊपरी भाग में धनात्मक आवेश और कुछ किलोमीटर नीचे वाले भाग में ऋणात्मक आवेश उत्पन्न होता है। वैज्ञानिक इस पर गहन शोध कर रहे हैं कि ऐसा क्यों और कैसे होता है, लेकिन अधिकांश विशेषज्ञों का मानना है कि यह स्थिति बादलों में हवा के अलग-अलग तापमान और गति के कारण उत्पन्न होती है। एक ओर जलवाष्प से भरी गर्म हवा नीचे से ऊपर की ओर बढ़ रही होती है, वहीं दूसरी ओर वायुमंडल के ऊपरी हिस्से में अत्यधिक ठंडे तापमान के कारण वहाँ बने बर्फ के कण भारी होकर नीचे गिर रहे होतें हैं। ये बर्फ के कण बहुत बड़े पैमाने पर ऊपर की ओर बढ़ते वाष्पों से लगातार टकराते रहते हैं। इन टकरावों के कारण ऊपर उठते वाष्पों के अणुओं से इलेक्ट्रॉन

निकलते हैं, जो बादल के निचले हिस्से में जमा हो जाते हैं। इस प्रकार बादल के निचले हिस्से पर ऋणात्मक आवेश और ऊपरी सिरे पर धनात्मक आवेश जमा हो जाता है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि एक बादल में वाष्प या बर्फ के कणों के रूप में लाखों जल कण होते हैं, इसलिए उत्पन्न विद्युत आवेश की मात्रा बहुत अधिक होती है, जो दस लाख किलोवाट तक हो सकती है। बादल के ऊपर और नीचे के बीच वोल्टेज का अंतर एक अरब वोल्ट तक हो सकता है। आप जानते हैं कि जब वोल्टेज में अंतर होता है, तो विद्युत धारा धनात्मक ध्रुव से ऋणात्मक ध्रुव की ओर प्रवाहित होती है। बादलों में भी यही होता है। यह विद्युत धारा बादल के अंदर और बादल से धरती की ओर, दोनों जगह प्रवाहित होती है। जैसा कि पहले बताया गया है, बादलों में उत्पन्न होने वाली विद्युत की मात्रा लाखों किलोवाट में होती है, इसलिए यह मार्ग में आने वाले सभी वायु कणों को गर्म करके चमका देती है, और गर्म हवा के अचानक फैलने से एक ज़ोरदार गड़गड़ाहट पैदा होती है। जब यह विद्युत धारा धरती से टकराती है, तो यह एक बहुत ही चमकीले गोले के रूप में दिखाई देती है। बादल से धरती तक इसकी गति लगभग 140 किलोमीटर प्रति सेकंड होती है। इसकी चपेट में आने वाली वस्तुएँ और जीव बुरी तरह जल जाते हैं।

वैज्ञानिकों का यह भी कहना है कि अगर आंधी-तूफान के दौरान आपके रोंगटे खड़े हो जाएँ, शरीर में झुनझुनी होने लगे और आसपास की धातु की वस्तुएँ हल्के नीले रंग की चमकने लगें, तो समझ लीजिए कि आस-पास कहीं बिजली गिर सकती है।

बिजली गिरने से बचने के उपाय : प्रसिद्ध वैज्ञानिक बेंजामिन फ्रैंकलिन द्वारा बिजली गिरने पर किए गए प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि यदि विद्युत धारा के निकलने का एक आसान रास्ता उपलब्ध करा दिया जाए, तो संभावित नुकसान से बचा जा सकता है। इसके लिए, इमारत के सबसे ऊँचे बिंदु पर एक लोहे की छड़ को सीधे आसमान की ओर लगाया जाता है और उसे एक मजबूत धातु के तार से जोड़ा जाता है। तार के दूसरे सिरे को एक धातु की प्लेट से जोड़कर ज़मीन में गहराई में गाड़ दिया जाता है। अगर तार और उससे जुड़ी प्लेट तांबे की बनी हो, तो बेहतर है क्योंकि तांबा बिजली का बहुत अच्छा सुचालक होता है। जब बिजली का आवेश इमारत के ऊपरी हिस्से तक पहुँचता है, तो यह आवेश इमारत पर लगी छड़ और उससे जुड़े तार के माध्यम से ज़मीन में चला जाता है। इससे होने वाले संभावित नुकसान को रोका जा सकता है। इससे आस-पास का इलाका भी सुरक्षित रहता है। यही काम ऊँचे बिजली के खंभे और मोबाइल फ़ोन टावर भी करते हैं। आसमानी बिजली गिरने के विज्ञान से अनभिज्ञ कई लोग अक्सर बचाव के लिए गलत तरीके अपनाते हैं। आमतौर पर देखा गया है कि खेतों में काम करने वाले किसान बारिश और तूफ़ान से बचने के लिए खेत में खड़े किसी बड़े पेड़ के नीचे शरण लेते हैं। खेत में अकेले खड़े किसी ऊँचे पेड़ के नीचे शरण लेना बहुत खतरनाक हो सकता है क्योंकि बिजली का किसी ऊँची इमारत या पेड़ से गिरना बहुत आसान होता है। किसी घर या कमरे के अंदर शरण लेना या रबर के टायर वाली गाड़ी में बैठना भी पेड़ के नीचे खड़े होने से ज़्यादा सुरक्षित है। अगर कोई और उपाय उपलब्ध न हो, तो अकेले किसी ऊँचे पेड़ के नीचे बैठने की बजाय खुले आसमान के नीचे झुक कर बैठना भी फ़ायदेमंद है।

विशेषज्ञों का कहना है कि आंधी-तूफ़ान के दौरान बाहर तैरना या नौका चलाना भी खतरे से खाली नहीं है। जहाँ तक हो सके, ऐसे समय में घर के अंदर भी शावर या नल के नीचे नहाने से बचना चाहिए क्योंकि बिजली घर में पानी वाले धातु के पाइपों के ज़रिए भी नुकसान पहुँचा सकती है। यही बात घर में बिजली की फिटिंग और टेलीफ़ोन के तारों पर भी लागू होती है। आंधी-तूफ़ान या ओलावृष्टि के दौरान बिजली के उपकरणों को बंद रखने की कोशिश करें, फ़ोन का इस्तेमाल न करें और धातु से बने ढांचों से दूर रहें।

इन सबके बावजूद, गड़गड़ाहट सुनने या आसमानी बिजली देखने से डरने की ज़रूरत नहीं है। हवा में ध्वनि की गति लगभग 340 मीटर प्रति सेकंड होती है, जो बिजली के प्रवाह की तुलना में बहुत धीमी है। इसलिए, जब आप तेज़ गड़गड़ाहट सुनें, तो समझ लीजिए कि आप उस समय बिजली के "हमले" से बच गए हैं क्योंकि ध्वनि हम तक बिजली के प्रवाह की तुलना में बहुत देर से पहुँचती है।

अगर आपने बादलों में बिजली चमकते हुए देखी भी है, तो भी आप उस समय बिजली से होने वाले नुकसान से

सुरक्षित हैं क्योंकि बिजली का प्रवाह इतना तेज़ होता है कि आपको चमक देखने का मौका ही नहीं मिलता। हालाँकि, यह ध्यान रखना चाहिए कि आसमानी बिजली गिरने से प्रभावित व्यक्ति के शरीर पर कोई धनात्मक आवेश या ऋणात्मक आवेश नहीं होता। इसलिए, उसे छूने से कोई नुकसान नहीं होता और तुरंत उसकी देखभाल करने और सहायता प्रदान करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

वैज्ञानिकों का कहना है कि हालाँकि आसमानी बिजली पृथ्वी पर जान-माल का भारी नुकसान पहुँचाने के लिए बदनाम है, लेकिन इसके कुछ फायदे भी हैं। यह वायुमंडल में प्रचुर मात्रा में मौजूद नाइट्रोजन को पौधों के भोजन के लिए उपयुक्त बनाती है। पौधे हवा से नाइट्रोजन को उसके शुद्ध रूप में अवशोषित नहीं कर सकते।आसमानी बिजली की प्रचंड ऊर्जा नाइट्रोजन और ऑक्सीजन के साथ अभिक्रिया करके उसे नाइट्रेट में परिवर्तित कर देती है, जिसे पौधे अपने आहार का हिस्सा बनाते हैं। इसके अलावा, विशेष परिस्थितियों में, इस बिजली की ऊर्जा रेतीली मिट्टी में रेत के कणों को जोड़ने में भी मदद करती है।

बिजली के बारे में अंधविश्वास : विज्ञान की खोजों के बावजूद, लोगों के कई वर्गों में आसमानी बिजली के बारे में तरह-तरह की काल्पनिक मान्यताएँ हैं।

उदाहरण के लिए, हमारे देश में मामा-भांजे पर बिजली गिरने की निराधार और तर्कहीन मान्यता प्रचलित है। इस को कृष्ण और उसके मामा कंस की पौराणिक कथा से जोड़ा जाता है। इसी से यह अंधविश्वास फैला कि बरसात के मौसम में जब बिजली चमकती है और गड़गड़ाहट होती है, तो मामा-भांजे को एक साथ नहीं बैठना चाहिए। हलाकि आसमानी बिजली किसी भी व्यक्ति पर गिर सकती है जो इस के संपर्क में आ जाता है, यह कोई रिस्तेदारी नहीं देखती।

स्पष्ट है कि उपरोक्त मिथक अज्ञानियों के बीच एक अंधविश्वास से ज़्यादा कुछ नहीं है। अन्य प्राकृतिक घटनाओं की तरह, बिजली भी प्रकृति की एक भौतिक घटना है जिसका चेतना से कोई संबंध नहीं है। यह घटना किसी भी धर्म, जाति, गोत्र, रंग, नस्ल, लिंग और सामाजिक संबंधों से स्वतंत्र भौतिक परिस्थितियों के अनुसार घटित होती है। कुछ लोगों का मानना है कि बिजली काले रंग की वस्तुओं पर गिरती है। यह भी एक कोरा अंधविश्वास है। अगर ऐसा होता, तो बिजली उन लोगों पर गिरती जो अक्सर काले छाते लेकर बारिश में बाहर निकलते हैं। समाज में एक प्रचलित मान्यता यह भी है कि बिजली दुष्ट और पापी लोगों को निशाना बनाती है। अगर ऐसा होता, तो यह बिजली हिटलर, मुसोलिनी, नादिर शाह और चंगेज खान जैसे क्रूर शासकों पर गिरती। इस मान्यता के अनुसार, देश के कई भ्रष्ट नेताओं पर भी बिजली गिरनी चाहिए थी। एक मान्यता यह भी है कि बिजली कांसे के बर्तनों पर गिरती है। ऐसा लगता है कि यह अंधविश्वास इसलिए प्रचलित हुआ क्योंकि कांसा शब्द राजा कंस के नाम से जुड़ा है। इन सभी मान्यताओं का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।

कई लोग मानते हैं कि बिजली एक बार गिरने के बाद दोबारा नहीं गिरती। लेकिन प्रयोगों ने इस मान्यता को भी गलत साबित कर दिया है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण अमेरिका की 1250 फुट ऊँची इमारत, एम्पायर स्टेट बिल्डिंग, के बारे में किया गया अवलोकन है। इस इमारत में बिजली गिरने की रिकॉर्डिंग के लिए लगाए गए सूक्ष्म उपकरणों और कैमरों ने पुष्टि की है कि इसके ऊपर लगी छड़ों और लोहे के ढाँचे से एक साल में 42 बार आसमानी बिजली गुज़री है। इतना ही नहीं, एक ही बार हुई बारिश में इस इमारत पर 12 बार और एक खास मौके पर सिर्फ़ 20 मिनट में 9 बार बिजली गिरी थी। हर बार यह बिजली उस पर लगी सुरक्षा छड़ों और लोहे के ढाँचे से होकर ज़मीन में चली गई।

मो : 98556-56156

मुहब्बत करने वालों में ये झगड़ा डाल देती है
सियासत दोस्ती की जड़ में मट्ठा डाल देती है

हुकूमत मुँह-भराई के हुनर में खूब वाक़िफ़ है
ये हर कुत्ते के आगे शाही टुकड़ा डाल देती है

ये चिड़िया भी मेरी बेटी से कितनी मिलती-जुलती है
कहीं भी शाख़े-गुल देखे तो झूला डाल देती है

भटकती है हवस दिन-रात सोने की दुकानों में
गरीबी कान छिदवाती है तिनका डाल देती है।

-मुनव्वर राना

तर्कशीलों की गतिविधियाँ

1. तर्कशील सोसायटी,कनाडा के प्रधान अवतार सिंह, जिन्हें भाई संबोधन से लोग जानते हैं से वैंकूवर, कनाडा में देश भगत लाइब्रेरी में मुलाकात की जहां पर सुरेन्द्र शर्मा द्वारा निर्देशित पंजाबी नाटक 'दो रोटियां' की रिहर्सल हो रही थी जिसका मंचन तर्कशील सोसायटी,कनाडा द्वारा आने वाले कार्यक्रमों में किया जाएगा।

अवतार भाई से तर्कशील सोसायटी,कनाडा की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने बताया कि वर्ष 1995 में जब गणेश की मूर्ति की दूध पीने की अफवाह चली तो उन्होंने पंजाबी रेडियो प्रसारण में इसे चमत्कार कहने वालों को चुनौती दी जो तर्कशील सोसायटी, पंजाब ने जारी की हुई थी। इसके बाद कनाडा में तर्कशील सोसायटी बनाने पर विचार चर्चा अन्य समान विचारों वाले साथियों से चली और 1998 में तर्कशील सोसायटी कनाडा की शुरुआत की फिर कनाडा के सभी प्रमुख सिटीज जहां पर पंजाबी आबादी ज्यादा थी वहां-वहां यूनिट बनाई गई। आज प्रमुख शहरों सरी/वैंकूवर, ब्रह्मपटन/टोरंटो, कैलगरी, एब्सफोर्ड सिटीज में तर्कशील सोसायटी की सरगर्म इकाइयां हैं। सोसायटी लगातार कल्चरल और वैज्ञानिक चेतना के प्रोग्राम करती रहती है। उम्र के 80वें दशक में पहुँच कर भी भाई अवतार बेहद सक्रिय है वो तर्कशील मैगज़ीन भी काफी संख्या में लगातें हैं, इसके अलावा विभिन्न अवसरों पर तर्कशील साहित्य की प्रदर्शनी,मैजिक शो, नाटक आदि प्रोग्राम किए जाते हैं।

रिपोर्ट - गुरमीत अंबालवी

2. तर्कशील सोसाइटी हरियाणा की एक बैठक दिनांक 20 जुलाई को कुम्हार धर्मशाला उकलाना मंडी जिला हिसार में आयोजित हुई। मीटिंग की अध्यक्षता राज्य प्रधान राजेश पेगा व संचालन महासचिव बलजीत भारती ने किया। मीटिंग में राज्य कार्यकारिणी के उप प्रधान फरियाद सिंह, कोषाध्यक्ष अनुपम सिंह, राज्य कमेटी सदस्य राजेश बिंद्रा, ईश्वर सिंह, कृष्ण राजौंद, राजेश कुमार, कृष्ण गर्ग विशेष रूप से उपस्थित थे। मुख्य वक्ता के तौर पर डी एन कॉलेज हिसार से इतिहास के विभागाध्यक्ष डॉ महेंद्र विवेक ने सिंधु एवं हड़प्पा कालीन सभ्यता विशेषकर राखीगढ़ी के संबंध में विस्तार से चर्चा की और इस सम्बन्ध में प्रदर्शनी भी लगाई गई। महासचिव बलजीत भारती ने उत्तर भारत की तर्कशील संस्थाओं की तालमेल कमेटी की बैठक में लिए गए निर्णयों के बारे में बताया तथा पंजाब की तर्ज पर स्कूलों में वैज्ञानिक चेतना परीक्षा का आयोजन करने सम्बन्धी अपनी बात रखी। राजेश बिंद्रा ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण विषय पर अपनी बात रखी। फरियाद सिंह ने शरीर दान से संबंधित प्रक्रिया की जानकारी दी। ईश्वर सिंह व कृष्ण गर्ग ने संगठन को मजबूत बनाने से संबंधित चर्चा की। फरियाद सिंह, बजिंद्र सिंह व राम प्रसाद ने मैजिक ट्रिक्स दिखाए तथा उनकी जानकारी भी दी। श्रीमति शशि जी ने बोलने के अधिकार बारे विचार रखे। उकलाना इकाई के साथी सूबे सिंह ने मंच संचालन में सहयोग दिया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में राजेश पेगा ने तर्कशीलता के विभिन्न आयामों पर बात रखी। कार्यक्रम के आयोजन में उकलाना इकाई के सत्यवान मुगलपुरा, चंद्रभान, जगदीश, सुनील ग्रोवर, ललित कुमार, बलबीर चौहान, गुरदीप चौहान, बलवान सिंह बौद्ध व उनकी टीम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पुस्तक स्टॉल भी लगाई गई। अगली मीटिंग सफीदों में 21सितम्बर को होगी।

रिपोर्ट ** बलजीत भारती,

3. महासचिव ।जमशेदपुर (झारखंड) - श्रमजीवी महिला समिति द्वारा आयोजित चार दिवसीय कार्यशाला के पहले दिन विज्ञान, वैज्ञानिक चेतना और तर्कशीलता पर केंद्रित एक दिवसीय प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में रिसोर्स पर्सन के रूप में शामिल हुआ।

सत्र की शुरुआत एक आइसब्रेकिंग गतिविधि से हुई, जिसके बाद युवा प्रतिभागियों से यह साझा करने को कहा गया कि बचपन में उन्हें कौन-कौन से अंधविश्वास या पारंपरिक मान्यताएँ बताई गई थीं, और क्या वे आज भी उन पर विश्वास करते हैं। कुछ प्रतिभागियों ने कहा कि वे भूत, आत्मा और डायन में अब भी विश्वास रखते हैं। कई प्रतिभागियों ने बताया कि कैसे उन्होंने सवाल पूछने, सोचने और स्वयं प्रयोग करके इन अंधविश्वासों को चुनौती दी और तोड़ा।

इसके बाद 'विज्ञान' और 'वैज्ञानिक चेतना' के बीच के अंतर पर विस्तार से चर्चा हुई। प्रतिभागियों ने यह समझा कि केवल विज्ञान पढ़ना या वैज्ञानिक पेशे में होना वैज्ञानिक चेतना रखने की गारंटी नहीं है। वैज्ञानिक चेतना का मतलब है – हर धारणा, परंपरा और विश्वास को तर्क और प्रमाण के आधार पर जांचना।

सत्र में प्रतिभागियों को वैज्ञानिक पद्धति (scientific method) से परिचित कराया गया और यह बताया गया कि सामाजिक पूर्वाग्रहों, रूढ़ियों और मान्यताओं की वैज्ञानिक पड़ताल कैसे की जा सकती है।

दूसरे सत्र में इतिहास में विज्ञान और धार्मिक सत्ता के बीच टकराव पर चर्चा हुई । इसमें कोपरनिकस, ब्रूनो और गैलीलियो के जीवन प्रसंगों को प्रस्तुत किया गया। ब्रूनो पर आधारित एक लघु फिल्म भी प्रदर्शित की गई ।

भारत की प्राचीन तर्कशील परंपराओं – जैसे चार्वाक, बौद्ध और जैन दर्शन – की चर्चा हुई, जो वैज्ञानिक सोच और आलोचनात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देते थे।आज़ादी के बाद नेहरू द्वारा वैज्ञानिक सोच को राष्ट्र निर्माण का आधार बनाने के प्रयासों को रेखांकित किया गया। साथ ही यह भी बताया गया कि भारतीय संविधान में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को नागरिकों का मौलिक कर्तव्य माना गया है।

अंतिम सत्र में वर्तमान समय में वैज्ञानिक चेतना पर हो रहे हमलों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया। इस विषय पर खुली चर्चा हुई कि किस प्रकार सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर अंधविश्वास और रूढ़िवादी सोच को व्यापक रूप से बढ़ावा दिया जा रहा है। सोशल मीडिया और Artificial Intelligence जैसे माध्यमों के जरिए अवैज्ञानिक सोच का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है।

शिविर के दौरान अधिकांश प्रतिभागियों ने खुलकर अपने घर, समाज और क्षेत्र में प्रचलित रूढ़िवादी प्रथाओं के बारे में साझा किया। कार्यक्रम के समापन पर सभी प्रतिभागियों ने संकल्प लिया कि वे अपने सामाजिक कार्यों और निजी जीवन में वैज्ञानिक पद्धति और तर्कशीलता को अपनाएंगे तथा हर विषय को तर्क और प्रमाण की कसौटी पर परखने का प्रयास करेंगे।

पूरे कार्यक्रम में खेल, वाद-विवाद, समूह चर्चा, पोस्टर प्रदर्शनी, फिल्म और वीडियो प्रदर्शन जैसे माध्यमों का उपयोग करके विषयों पर व्यापक चर्चा की गई।

विकास कुमार

4. विशेष रिपोर्ट : आदिवासी लोगों के नरसंहार के खिलाफ जन लोकतांत्रिक संगठनों द्वारा संयुक्त रैली और प्रदर्शन 8 अगस्त को पंजाब के दर्जनों जनवादी संगठनों ने आदिवासियों के क्रूर नरसंहार के खिलाफ और उनके हितों की रक्षा के लिए मोगा में रैली और प्रदर्शन किया, जिसमें मांग की गई कि आदिवासी इलाकों में ''ऑपरेशन कगार'' समेत सभी तरह के सैन्य अभियान तुरंत बंद किए जाएं, फर्जी पुलिस मुठभेड़ों समेत सभी तरह की हिंसा तुरंत बंद की जाए, वहां से सभी पुलिस कैंप हटाए जाएं और पुलिस व अर्धसैनिक बलों को वापस बुलाया जाए, कॉरपोरेटों द्वारा जल, जंगल, जमीन और खनिज भंडारों की लूट बंद की जाए और जनविरोधी आर्थिक मॉडल को खारिज किया जाए, ड्रोन और हेलीकॉप्टरों द्वारा आदिवासीयों पर बमबारी बंद की जाए, यूएपीए और अफस्पा समेत सभी काले कानूनों को निरस्त किया जाए, राष्टीय जांच एजेंसी को भंग किया जाए, गिरफ्तार किए गए लोकतांत्रिक हकों के लिए बोलने वाले कार्यकर्ताओं को रिहा किया जाए, वर्षों से जेल में बंद कार्यकर्ताओं को रिहा किया जाए, जन संगठनों और संघर्षों पर लगे प्रतिबंध हटाए जाएं और संघर्ष करने के लोकतांत्रिक अधिकार बहाल किए जाएं।

इससे पहले अनाज मंडी में रैली में शामिल हुए किसानों, मजदूरों, युवाओं, छात्रों, महिलाओं, तर्कशीलों, लोकतांत्रिक अधिकारों के ध्वजवाहकों, जन-पक्षधर लेखकों, साहित्यकारों, कलाकारों और रंगमंच कलाकारों की एक बड़ी सभा को संबोधित करते हुए पीएसयू (शहीद रंधावा) नेता होशियार सिंह, पीएसयू के प्रदेश अध्यक्ष रणबीर सिंह रंधावा, फैक्ट्री वर्कर्स यूनियन के अध्यक्ष लखविंदर सिंह, पंजाब खेत मजदूर यूनियन के महासचिव लछमन सिंह सेवेवाला, लोकतांत्रिक अधिकार सभा पंजाब के प्रदेश अध्यक्ष प्रितपाल सिंह, भारतीय किसान यूनियन (डकौंदा) के महासचिव हरनेक सिंह महिमा, इंडियन फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियंस (आईएफटीयू) के प्रदेश अध्यक्ष कुलविंदर सिंह वड़ैच, ग्रामीण मजदूर यूनियन के प्रदेश

अध्यक्ष तरसेम पीटर, ऑपरेशन ग्रीन हंट एंटी-डेमोक्रेटिक फ्रंट पंजाब के संयोजक डॉ. परमिंदर, बीकेयू (क्रांतिकारी) के प्रदेश अध्यक्ष बलदेव सिंह जीरा, क्रांतिकारी किसान यूनियन के प्रदेश प्रेस सचिव अवतार सिंह महिमा, तर्कशील सोसायटी पंजाब के प्रदेश अध्यक्ष राजिंदर भदौड़, बीकेयू एकता उगराहां के प्रदेश अध्यक्ष जोगिंदर सिंह उग्राहां, पूर्व सैनिक क्रांतिकारी यूनियन के जिला अध्यक्ष बलकरण सिंह, क्रांतिकारी ग्रामीण मजदूर यूनियन के प्रदेश उपाध्यक्ष दिलबाग सिंह जीरा ने कहा कि लाखों अर्धसैनिक बलों को तैनात करके भारतीय शासकों द्वारा बस्तर और अन्य आदिवासी इलाकों में किए जा रहे खूनी अभियानों का एकमात्र मकसद देश के जल, जंगल, जमीन और खनिज भंडारों को विदेशी और देशी इजारेदार पूंजीपतियों को लूटाना है। सभी लोकतांत्रिक और मानवीय मांगों को त्यागकर ड्रोन और हेलीकॉप्टरों से की जा रही बमबारी से स्पष्ट है कि मोदी सरकार आदिवासी जनता और उनके हितों के लिए लड़ने वाली ताकतों का क्रूर नरसंहार करने के बाद इन जंगलों को खाली कराकर इजारेदार पूंजीपतियों की लुटेरी खनन परियोजनाओं को सौंपने पर तुली है। बड़े कॉरपोरेट्स की लालची निगाहें पूरे देश की कृषि और खनिज भंडारों पर लगी हैं। इसलिए वैश्विक कॉरपोरेट जगत के हितों में इस हमले के खिलाफ एक संयुक्त लड़ाई लड़ने की जरूरत है और यह संयुक्त रैली इस दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है।

सभा में लेखक, अनुवादक और लोकतांत्रिक कार्यकर्ता बूटा सिंह महमूदपुर ने प्रस्ताव प्रस्तुत किए जिन्हें हाथ उठाकर पारित किया गया और उन्होंने ऑपरेशन कगार और आदिवासी क्षेत्रों में अन्य अर्धसैनिक अभियानों को रोकने की माँग की। एक विशेष प्रस्ताव में, गाजा में फिलिस्तीनी लोगों के नरसंहार को रोकने की माँग की गई और फिलिस्तीनी संघर्ष के साथ एकजुटता व्यक्त की गई। लोक नाटककार गुरशरण सिंह की पुत्री और प्रसिद्ध लोकतांत्रिक कार्यकर्ता डॉ. नवशरण द्वारा रैली के लिए भेजा गया बधाई संदेश पढ़ा गया। जगसीर जीदा सहित कई गायकों ने जनहितैषी गीत प्रस्तुत किए। पूरे कार्यक्रम का संचालन जगतार कालाझार ने किया। इस इस संघर्ष रैली में तर्कशील सोसायटी पंजाब के कार्यकर्त्ता बड़ी संख्या में शामिल हुए।

रिपोर्ट : राम स्वर्ण लखेवाली

इस धोखे में मत रहना

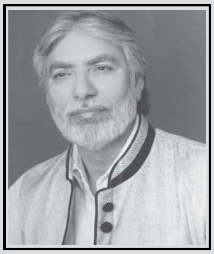

आंखों से पत्थर पिंघलेगा
इस धोखे में मत रहना
बिना लड़े इंसाफ मिलेगा
इस धोखे में मत रहना।

भारत के ज़रे -ज़रे में अपना-अपना हिस्सा है
बुला बुलाकर कोई देगा
इस धोखे में मत रहना।

भाग्य और भगवान तो प्यारे केवल एक छलावा है
ईश्वर ही कल्याण करेगा
इस धोखे में मत रहना।

कहा किसी ने तेरे हाथों में
धन दौलत की भी रेखा है
छप्पर फाड़कर धन बरसेगा
इस धोखे में मत रहना।

शिक्षित और संगठित होकर खुद पर तुम विश्वास करो
और कोई संघर्ष करेगा
इस धोखे में मत रहना।

संविधान की रक्षा करना
हम सब की जिम्मेदारी है
कोई और बेड़ा पार करेगा
इस धोखे में मत रहना।

-मुनेश त्यागी

हिम्मत, लगन, दृढ़ता और मेहनत से
सपनों की परवाज़ ऊँची होती हैं।
जो चलते हैं, उनमें मुश्किलों का सामना
करने का साहस होता है।
मंज़िल उनके कदमों में होती है।

*परसाई (कवि) ने कहा-
धर्म जब
धंधे के साथ मिल जाए
तो योग कहलाता है

परसाई ने नहीं कहा-

धर्म जब
राजनीति से मिल जाए
तो खुद बन जाता है धंधा
और महायोग कहलाता है

साहित्यकार
सब कुछ नहीं कहते
कुछ छोड़ देतें हैं
समय पर
...... /......

प्रेम चंद ने कहा-
....
जिन वृक्षों की
जड़ें होती हैं
गहरी
उन्हें नहीं होती
जरूरत सिंचाई की
बार-बार

प्रेम चंद ने नहीं कहा-

जिन वृक्षों की
नहीं होती जड़े
उनका सूखना
तो तह है
भले उन्हें पानी दें
अमृत के साथ भी

साहित्यकार
नहीं कहते सब कुछ
कुछ छोड़ देतें हैं
पाठकों के लिए भी

हूब नाथ

* सभ्यता कहां से शुरू हुई *

एक बार, एक छात्र ने मार्गरेट मीड (एक प्रसिद्ध मानवविज्ञानी) से पूछा कि सभ्यता की शुरुआत कहाँ से हुई। छात्र को पहिये, मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े, मछली पकड़ने के काँटे या अन्य प्राचीन औज़ार जैहे जवाब मिलने की उमीद थी। लेकिन मीड का जवाब हैरान करने वाला था-

उन्होंने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "मानव सभ्यता की शुरुआत एक गुफा में हुई थी, जहां एक टूट के ठीक हो चुकी जांघ की हड्डी मिली थी।" छात्र बहुत आश्चर्यचकित हुआ-वह कैसे ?

उन्होंने समझाया-

कि "जानवरों के राज्य में, अगर तुम्हारी कहीं टांग टूट जाए, तो आप मर सकते हैं। आप शिकार नहीं कर सकते, आप शिकारियों से बच नहीं सकते। लेकिन जांघ की हड्डी ठीक हो जाने का मतलब है कि कोई आपके साथ था। किसी ने मदद की। किसी ने आपकी रक्षा की, आपको खाना खिलाया, और आपके ठीक होने का इंतज़ार किया। कोई धैर्यवान था वो..."

"तो बच्चों, मानव सभ्यता का पहला चिन्ह कोई आविष्कार नहीं है, मेरे प्यारे, यह दयालुता और धैर्य है, यह हृदय है।"

मैं महिलाओं की प्रशंसा और सम्मान करता हूँ। मुझे लगता है कि वे बहुत महान हैं और उनका जीवन अनुभव और सहनशक्ति पुरुषों से कहीं अधिक है। जब हम बड़ी कठिनाइयों का सामना करते हैं, तो महिलाएँ हमेशा पुरुषों से ज़्यादा बहादुर साबित होती हैं। मुझे लगता है कि उनमें इतनी ताकत इसलिए है क्योंकि वे माँ भी हैं।"

मो यान

(साहित्य में नोबेल पुरस्कार विजेता चीनी लेखक)

आजकल भारत में एक और तरह के पाखंडी उभर आए हैं। इस देश के 'बुद्धिमान' धोखेबाजों ने कम मेहनत में ज़्यादा पैसा इकट्ठा करने का तरीका खोज निकाला है। वे किसी हाथ की सफाई के माहिर चतुर व्यक्ति को चुनकर उसे 'अवतार' बना लेते हैं। ऐसे देव पुरषों के चमत्कारों और अलौकिक शक्तियों की कई 'परीकथाएँ' अखबारों और पत्रिकाओं में छपती रहती हैं। जब उनका सवांग लोगों के सामने प्रगट होता है, तो उनके एजेंट उन्हें फूल चढ़ाते हैं। चूँकि कई भक्तों को दूसरों की नकल करने की आदत होती है, इसलिए हज़ारों दर्शक चमत्कारी ढोंगी के सामने नतमस्तक होतें हैं।

इससे लाखों रुपये इकट्ठा होते हैं और उनके अनुयायी बड़े पैमाने पर पैसे आपस में बाँटते लेते हैं। यह बहुत अफ़सोस की बात है कि इन धोखेबाजों में इस देश के कई उच्च योग्यता वाले वैज्ञानिक भी शामिल हैं।

डॉ. इब्राहिम टी. कावूर

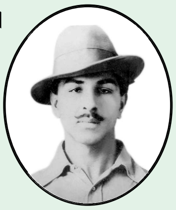

उनकी कलम में बहुत दम था। हिंदी, उर्दू, पंजाबी और अंग्रेजी में उनकी समान रूप से निपुणता थी। उन दिनों कामरेड सोहन सिंह जोश अमृतसर से गुरुमुखी और उर्दू में 'कीर्ति' नामक मासिक पत्रिका निकालते थे। भगत सिंह उसमें निरंतर लिखते थे। विभिन्न नामों से प्रकाशित क्रांतिकारी शहीदों की जीवनियाँ भगत सिंह की कलम की ही देन थीं। हिंदी में उन्होंने विशेष रूप से 'प्रताप' और 'प्रभा' (कानपुर), 'महारथी' (दिल्ली) और 'चाँद' (इलाहाबाद) में बहुत कुछ लिखा। अंग्रेजी में लिखे उनके लेख, अदालत में दिए गए उनके बयान, पत्र और पर्चे आदि उनकी अनूठी शैली के प्रमाण हैं। भगवती चरण ने 1928 में भगत सिंह के सहयोग से नौजवान भारत सभा के घोषणापत्र का अंग्रेजी अनुवाद तैयार किया। उस समय की भाषा, शैली और देश के राजनीतिक स्तर को देखते हुए, इसके विचारों की परिपक्वता आज भी ऐतिहासिक महत्व रखती है। असेंबली में बम फेंकने के बाद पकड़े जाने पर अदालत में दिया गया उनका बयान उस समय एक अंतरराष्ट्रीय दस्तावेज़ बन गया है।

अलेक्जेंड्रिया निवासी यूक्लिड एक यूनानी गणितज्ञ और शिक्षक थे। उनकी पुस्तक "एलिमेंट्स" का दुनिया की हर भाषा में अनुवाद हो चुका है। उन्हें ज्यामिति (Geometry) का जनक माना जाता है।

एक बार यूक्लिड अलेक्जेंड्रिया के राजा टॉलेमी को गणित पढ़ा रहे थे। टॉलेमी को कुछ समझ नहीं आ रहा था। उन्होंने यूक्लिड से पूछा, "क्या गणित समझने का कोई आसान तरीका नहीं है?"

यूक्लिड ने गंभीरता से उत्तर दिया - "राजाओं और सम्राटों के लिए तो बहुत सुंदर राजमार्ग होते हैं, लेकिन शिक्षा के लिए सभी को एक ही रास्ते से गुज़रना पड़ता है।"

If undelivered please return to :
Tarksheel
Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Cell. 98769 53561, 98728 74620
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....